प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ... सच

माही की गूंज

Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-02, अंक - 30 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 30 अप्रैल 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

माही की गूंज पोर्टल भी शुरू, समाजसेवियों ने किया उद्घाटन

माही की गूंज, पेटलावद। साप्ताहिक अखबार माही की गूंज की सफलता के बाद पाठकों की ओर लगातार अपडेट खबरों के लिए पोर्टल की मांग की जा रही थी। पोर्टल को लेकर गूंज की टीम प्रयासरत थी और सोमवार को प्रयासों को पंख लगाते हुए पत्रकारिता की धुरी और पत्रकारिता के महाविद्यालय स्व. यशवंत जी घोड़ावत की प्रेरणा से शुरू साप्ताहिक अखबार माही की गूंज का पोर्टल का शुभारंभ पेटलावद में हुआ। चूंकि कोरोना संक्रमण चल रहा है। किसी बड़े आयोजन को नहीं करते हुए गूंज न पेटलावद के दो समाजसेवी गौतम गेहलोत, भरत चौधरी एवं वरिष्ठ पत्रकार हरिशंकर पंवार द्वारा सामान्य रूप से उदघाटन किया है। दोनों समाजसेवी गौतम गेहलोत और भरत चौधरी ने कहा कि जिस प्रकार साप्ताहिक अखबार को सफलता मिली हैं। उसी प्रकार गूंज के पोर्टल को अपार सफलता मिलेगी और हमारा सहयोग हमेशा बना रहेगा। वरिष्ठ पत्रकार हरिशंकर पंवार ने गूंज के पोर्टल के शुभारंभ की बधाई देते हुए कहा कि जिस तरह अखबार को सफलता मिली हैं। पोर्टल भी जल्द आम जनता पहुंच कर जनता के मुद्दों को प्रशासन तक पहुंचाएगा। उदघाटन के दौरान माही की गूंज के प्रधान संपादक संजय भटेवरा, वरिष्ठ पत्रकार हरिशंकर पंवार, गूंज पेटलावद तहसील ब्यूरो राकेश गेहलोत मौजूद रहे।

देश में कोरोना के मामले 31 हजार के पार, मरने वालों की संख्या हुई 1007

7696 मरीज इलाज के बाद हुए स्वस्थ्य

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में वैश्विक महामारी कोविड-19 के मरीजों की संख्या अब 31 हजार के पार पहुंच गई है। पिछले 24 घंटों में कोरोना के 1897 नए मामले सामने आए हैं। इसके साथ कोरोना के मरीजों की संख्या बढ़कर 31,332 पर पहुंच गई है। वहीं कोरोना से पिछले 24 घंटों में 73 मौतें दर्ज हुई हैं, इस तरह मरने वालों की संख्या 1007 तक पहुंच गई है। बुधवार सुबह स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक कोरोना पॉजिटिव पाए गए लोगों में 111 मरीज विदेशी भी हैं। इस दौरान राहत भरी खबर भी है कि पिछले 24 घंटों में कोरोना के 827 मरीज स्वस्थ्य हुए हैं। देश में कुल 7696 मरीज स्वस्थ्य हो कर घर वापस जा चुके हैं।

देश में कोरोना के सबसे ज्यादा मामले महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश और दिल्ली में बढ़ रहे हैं। इन पांच राज्यों में देश के करीब 75 फीसदी मामले सामने आ रहे हैं। वहीं संक्रमण केन्द्र बन चुके महाराष्ट्र में ही पिछले 24 घंटे में 31 मौतें रिपोर्ट हुई हैं। कोरोना से अब तक यहां 400 मौतें हो चुकी हैं और कोरोना के मरीजों के संख्या 9 हजार के पार पहुंच गई है। यानी तकरीबन 41.5 प्रतिशत मामले यही से रिपोर्ट हुए हैं। देश में पुडुचेरी, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, गोवा, त्रिपुरा में पिछले कई दिनों से कोई नया मामला नहीं रिपोर्ट हुआ है। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक अब देश के 32 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में कोरोना वायरस के मरीजों की पुष्टि हो चुकी है।

मध्यप्रदेश में कोरोना से अब तक 122 लोगों की मौत, संक्रमितों की संख्या हुई 2481

मध्यप्रदेश में तमाम प्रयासों के बावजूद कोरोना वायरस (कोविड-19) का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा। मंगलवार देर रात इंदौर मेडिकल कॉलेज से जारी की गई रिपोर्ट में कोरोना के 94 नये मामले सामने आए हैं, जबकि दो और लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। इसके साथ प्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीजों की कुल संख्या 2387 से बढ़कर 2481 हो गई है। वहीं इस महामारी की चपेट में आकर अब तक प्रदेश में 122 लोगों की मौत हो चुकी है।

इंदौर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ प्रवीण जड़िया ने बताया कि मंगलवार की रात एमजीएम मेडिकल कॉलेज द्वारा 643 सेम्पलों की जांच रिपोर्ट जारी की, जिसमें 94 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है, जबकि शेष 549 रिपोर्ट निगेटिव हैं। नये मरीजों को मिलाकर अब इंदौर में कोरोना संक्रमित मरीजों की कुल संख्या 1466 हो गई है। वहीं, मंगलवार की रात दो कोरोना वायरस के रोगियों की मौत की पुष्टि हुई है। इसके बाद इंदौर में कोरोना से मरने वालों की संख्या 63 से बढकर 65 हो गई है। मृतकों में एक 70 वर्षीय और एक 45 वर्षीय पुरुष शामिल है।

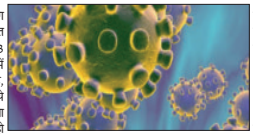

इंदौर में 94 नये कोरोना पॉजिटिव मिलने के बाद प्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीजों की कुल संख्या 2481 पर पहुंच गई है। इनमें सबसे अधिक इंदौर में 1466, भोपाल 458, उज्जैन 123, खरगौन 61, धार 40, खंडवा 36, जबलपुर 70, रायसेन 45, होशंगाबाद 34, बड़वानी 24, देवास 23, मुरैना 13, विदिशा 13, रतलाम 13, मंदसौर 09, आगरमालवा 11, शाजापुर 06, सागर 05, ग्वालियर 04, श्योपुर 04, छिंदवाड़ा 05, अलीराजपुर 03, शिवपुरी 02, टीमकगढ़ 02, बैतूल 01, डिंडौरी 01, हरदा 01, बुरहानपुर 01, अशोकनगर 01, शहडोल 02, रीवा 02 तथा अन्य राज्य के दो मरीज शामिल हैं।

वहीं इंदौर में दो लोगों की मौत की पुष्टि के बाद मध्यप्रदेश में कोरोना से मरने वालों की संख्या 122 हो गई है। इनमें इंदौर के 65, भोपाल 13, उज्जैन 20, खरगौन 06, देवास 07, धार, 01, जबलपुर 01, खंडवा 01, छिंदवाड़ा 01, मंदसौर 02, होशंगाबाद 02, रायसेन 01, अशोकनगर 01 और आगर मालवा का एक व्यक्ति शामिल हैं।

सुरक्षा बलों ने 24 घंटों में तीन आतंकियों को किया ढेर, सर्च अभियान जारी

श्रीनगर, एजेंसी। कोरोना वायरस और लॉकडाउन के बीच जम्मू-कश्मीर में आंतकवादियों की घुसपैठ जारी है। मंगलवार को शोपियां जिले में छिपे दो आंतकवादियों को सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में मार गिराया था। बुधवार को एक और आंतकवादी मारा गया। सुरक्षाबलों ने यहां 24 घंटे के अंदर तीन आंतकवादियों के एनकाउंटर किए हैं। अभी भी सुरक्षाकर्मियों का सर्च अभियान जारी है।

अधिकारियों ने बताया कि शोपियां जिले के जैनापुरा क्षेत्र के मेल्होरा में कुछ आतंकवादियों के घुसपैठ की सूचना थी। इसके बाद सुरक्षाबलों की टीमों ने यहां सर्च अभियान चलाया। सर्च अभियान के दौरान सुरक्षाबलों पर आंतकवादियों ने फायरिंग की। आंतकियों की ओर से लगातार हो रही फायरिंग केजवाब में सुरक्षाकर्मियों ने भी फायरिंग शुरू की। लगातार फायरिंग में सुरक्षाबलों ने दो आंतकवादियों को मार गिराया। यह सर्च अभियान और मुठभेड़ जारी रही और बुधवार को एक और आंतकी मारा गया। धिकारियों ने बताया कि आंतकियों और सुरक्षाबलों के बीच रातभर मुठभेड़ चली। दो आंतकियों के शव बरामद कर लिए गए हैं, जबकि अभी एक के शव की तलाश जारी है। सुरक्षाबलों का मानना है कि इलाके में अभी और आंतकी छिपे हो सकते हैं इसलिए सर्च अभियान भी लगातार जारी है।

अभिनेता इरफान खान का निधन, मुंबई के अस्पताल में थे भर्ती

मुंबई, एजेंसी। बॉलिवुड के असाधारण अभिनेता इरफान खान का निधन हो गया है। मंगलवार को कोलन इनफेक्शन के चलते उन्हें मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। इस बीच उनको लेकर तरह-तरह की अफवाहें थीं। हालांकि उनकी टीम ने कहा था कि वह स्ट्रॉन्ग हैं और लड़ रहे हैं। बुधवार को मिली खबरों के मुताबिक इरफान खान का निधन हो गया है। फिल्म निर्माता शूजित सरकार ने ट्वीट करके उनके परिवार को सांत्वना दी है। मालूम हो 2018 में इरफान खान को न्यूरोइंडोक्राइन ट्यूमर का पता चला था। लंदन में उनका इलाज चल रहा था। इसके बाद उनकी तबीयत में सुधार होने के बाद वह भारत वापस आ गए थे। बीते दिनों उनकी मां का निधन हो गया था। लॉकडाउन के चलते वह उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सके थे।

लॉकडाउन के बीच केदारनाथ के कपाट खुले

देहरादून, एजेंसी। मंत्रोच्चार और विधि-विधान से पूजा अर्चना के बाबा केदारनाथ के कपाट आज सुबह 6 बजकर 10 मिनट में खोल दिए गए। कपाट खुलने के बाद सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम से रुद्राभिषेक पूजा संपन्न की गई। हालांकि कोरोना संकट के चलते फिलहाल श्रद्धालुओं को मंदिर परिसर में जाने की अनुमति नहीं हैं। ऐसा पहली बार हुआ होगा जब मंदिर कपाट खुलने के दौरान यहां भक्तों की लाइन नहीं थी। महज 15 से 16 लोग ही वहां मौजूद थे। केदारनाथ धाम के रावल भीमाशंकर लिंग उखीमठ में 14 दिनों के लिए क्वारंटीन में हैं इसलिए उनके प्रतिनिधि के तौर पर पुजारी शिवशंकर लिंग ने कपाट खुलने की परंपरा का निर्वहन किया। रावल 19 अप्रैल को महाराष्ट्र से उत्तराखंड लौटे हैं, क्वारंटीन खत्म करने के बाद 3 मई को वह केदारनाथ पहुंचेंगे। उनके साथ देवस्थानम बोर्ड के प्रतिनिधि के तौर पर बीडी सिंह समेत पंचगाई से संबंधित 20 कर्मचारी कपाट खुलने पर यहां पहुंचे। इसके अलावा पुलिस और प्रशासन के करीब 15 लोग यहां मौजूद रहे।

सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुई पूजा

कोरोना संकट के बीच मंदिर में पूजा-अर्चना के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग का भी ध्यान रखा गया। मंदिर में भीड़ न हो इसके लिए प्रशासन ने श्रद्धालुओं को मंदिर में जाने की अनुमति नहीं दी। पर्यटन-धर्मस्व सचिव दिलीप जावलकर ने यात्रा संबंधी व्यवस्थाओं के लिए दिशा-निर्देश जारी किये हैं ताकि कोरोना महामारी की समाप्ति के बाद उच्च स्तरीय दिशानिर्देशों के तहत प्रदेश में चारधाम यात्रा को पटरी पर लाया जा सके।

15 मई को खुलेंगे बदरीनाथ के कपाट

केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही उत्तराखंड के चार में से तीन धामों के कपाट खुल गये है। गंगोत्री-यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया के अवसर पर 26 अप्रैल को खुल चुके है जबकि बदरीनाथ धाम के कपाट 15 मई को खुलेंगे।

सिलावट को रोकने के लिए कांग्रेस का दांव प्रेमचंद गुड्डु की कांग्रेस में होगी वापसी

भोपाल, एजेंसी। उपचुनाव में सिंधिया समर्थक नेताओं को हराने के लिए कांग्रेस ने घेरेबंदी शुरू कर दी है। इसके लिए सिंधिया विरोधी नेताओं को एकजुट किया जा रहा है, वहीं जिन विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होना है वहां की स्थिति को देखते हुए रणनीति बनाई जा रही है। इसी कड़ी में प्रदेश के जल संसाधन में तुलसीराम सिलावट को रोकने के लिए पूर्व सांसद प्रेमचंद गुड्डू को कांग्रेस में लाने की कवायद शुरू हो गई है। इसके लिए दिग्विजय सिंह ने मोर्चा संभाला है।

कांग्रेस सूत्रों के अनुसार पार्टी अब ज्योतिरादित्य सिंधिया के दांव पर पलटवार करने की योजना बना रही है। दरअसल, सांवेर विधानसभा सीट से पूर्व विधायक तुलसीराम सिलावट ज्योतिरादित्य सिंधिया के सबसे करीबी और खास नेता माने जाते हैं। सिलावट के भाजपा में शामिल होने के बाद कांग्रेस के पास सांवेर विधानसभा में कोई बड़ा चेहरा नहीं है जो तुलसी राम को टक्कर दे सके। इसलिए कांग्रेस प्रेमचंद गुड्डू के घर वापसी की कोशिश में लगी है।

दिग्विजय ने संभाला मोर्चा

प्रेमचंद गुड्डू मालवा में कांग्रेस के बड़े नेता माने जाते थे, लेकिन 2018 के विधानसभा चुनाव के समय उन्होंने अपना खेमा बदला और भाजपा में शामिल हो गए। प्रेमचंद गुड्डू के भाजपा में शामिल होने की स्क्रिप्ट पार्टी के महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने लिखी थी। प्रेमचंद गुड्डू भाजपा में आ तो गए, लेकिन विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी ने उन्हें काम नहीं दिया। ऐसा कहा जा रहा है कि उज्जैन और इंदौर में पार्टी कार्यक्रमों में शामिल होने का न्यौता भी नहीं दिया जा रहा है। जिस कारण अब वो पार्टी से नाराज चल रहे हैं। प्रेमचंद गुड्डू के घर वापसी की कोशिश पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह कर रहे हैं। गुड्डू को दिग्विजय सिंह का करीबी माना जाता है।

बीते साल शुरू हुईं थी वापसी की अटकलें

अक्टूबर 2019 में प्रेमचंद गुड्डू ने कांग्रेस में वापसी की कोशिश शुरू की थी। उन्होंने अपने कॉलेज के कार्यक्रम में भाजपा के किसी नेता को नहीं बुलाया था इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह। कार्यक्रम में कांग्रेस के कई नेता शामिल हुए थे लेकिन भाजपा के नेताओं को गुड्डू ने न्यौता नहीं दिया था। इसके बाद से ही अटकलें लगाई जा रहीं थी कि प्रेमचंद गुड्डू की कांग्रेस में वापसी हो सकती है। लेकिन तब कमलनाथ सरकार के मंत्री सज्जन सिंह वर्मा और तुलसी राम सिलावट इस फैसले से संतुष्ट नहीं बताए जा रहे थे। हालांकि इस संबंध में दोनों ही नेताओं ने खुलकर कोई बयान नहीं दिया था।

सिंधिया नहीं करते हैं पसंद

ऐसा कहा जाता है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया भी प्रेमचंद गुड्डू को पसंद नहीं करते हैं। कांग्रेस छोड़ते समय गुड्डू ने ज्योतिरादित्य सिंधिया पर हमला बोलते हुए कहा था कि कांग्रेस में राजा-महाराज टिकट के लिए लड़ रहे हैं, इसके साथ ही वो कई बार सिंधिया पर व्यक्तिगत टिप्पणी भी कर चुके हैं। अब सिंधिया खुद भाजपा में हैं और मालवा क्षेत्र में उनके करीबी है तुलसी सिलावट। ऐसे में प्रेमचंद गुड्डू के लिए मुश्किलें हो सकती हैं।

गुड्डू की वापसी क्यों

सांवेर विधानसभा में कांग्रेस के पास कोई बड़ा चेहरा नहीं हैं। तुलसी सिवालट प्रदेश के मंत्री हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया का पूरा समर्थन है तो भाजपा खेमा भी उन्हें उपचुनाव में जिताकर अपनी सरकार को स्थिर करने की कोशिश में है। ऐसे में कांग्रेस का पलड़ा कमजोर होता दिख रहा है। इसलिए कांग्रेस ऐसे चेहरे की तलाश में है जो तुलसी सिलावट को टक्कर दे सके। प्रेमचंद गुड्डू सांवेर विधानसभा से विधायक भी रह चुके हैं। ऐसे में कहा जा रहा है कि लॉकडाउन के बाद प्रेमचंद गुड्डू के कांग्रेस में वापसी की औपचारिक घोषणा हो सकती है।

घुसपैठिये अजित राय ने बांग्लादेशी समधन की क्वारेंटाइन के समय छुपाई पहचान

बांग्लादेशी घुसपैठिये ने आखिर कैसे बनाए फर्जी दस्तावेज? यह है जांच का विषय

माही की गूंज, खवासा। संजय भटेवरा

देश के गृहमंत्री ने कहा था कि, शरणार्थी अपनी पहचान छुपाता नहीं है और घुसपैठिया अपनी पहचान छुपाता है। हमें शरणार्थियों को नागरिकता देना है तथा घुसपैठिए की पहचान कर उन्हें देश के बाहर निकालना है।

देश के सीमावर्ती राज्यों में घुसपैठियों की घुसपैठ को तो हम मान सकते हैं कि, वे सीमा पार से अवैध रूप से घुसकर भारत में रहने लगे हैं। लेकिन देश के ह्रदय प्रदेश के पश्चिम में स्थित झाबुआ जिले के गांवों में अवैध रूप से घुसपैठ कर बिना रोक-टोक भोले-भाले आदिवासियों को इलाज के नाम पर गुमराह कर रहे तथाकथित बांग्लादेशी बंगाली डॉक्टरों का सरगना थांदला जनपद के ग्राम खवासा में पिछले 15-16 वर्षों से रह रहा है। बांग्लादेशी घुसपैठिये अजीत राय के द्वारा अपने पुत्र को लॉकडाउन के दौरान इंदौर से लाने के बाद भी तहकीकात में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। मूलतः बांग्लादेश के रहने वाले इस स्वयंभू फर्जी डॉक्टर ने तमाम चालें चली जो, संवैधानिक दृष्टि से उचित नहीं है। यह कार्य सामान्य आदमी का हो ही नहीं सकता, किसी शातिर दिमाग का ही हो सकता है। जिसके बाद गूंज ने शातिर की शैतानियत की तहकीकात शुरू की तो कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए।

रतलाम जिले के बाजना, शिवगढ़ आदि गांव में रहने के पश्चात इस फर्जी डॉक्टर ने खवासा में कदम रखा और खवासा में किराए के मकान में अपनी अवैध दुकानदारी (डॉक्टरी) चलाने लगा और जालसाजी के साथ कुछ लोगों में अपने झूठे व्यवहार से पहचान बनाने लगा। साथ ही इलाज के नाम पर गरीब आदिवासियों से जमकर रुपए ऐंठने लगा। यही नहीं कुछ ही वर्षों में इसने खवासा में जमीन लेकर स्वयं का मकान भी बना लिया। अब सवाल यह उठता है कि, उसने किस आधार पर बांग्लादेशी होकर पंचायत के पंजीयन रजिस्टर में अपने साथ अपने परिवार व बांग्लादेशी रिश्तेदारो के नाम पंजीबद्ध करवाए। इस दौरान वोटर आईडी, राशन कार्ड, आधार कार्ड व पासपोर्ट तक भारतीय मूल के बनवा लिए। उक्त प्रक्रिया जिसके लिए नियमानुसार जन्म प्रमाण-पत्र, शाला स्कॉलर पंजीयन प्रमाण-पत्र, मूल निवासी प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, अनापत्ति प्रमाण-पत्र आदि पुख्ता दस्तावेजों की आवश्यकता पड़ती है। यही नहीं इस तथाकथित डॉक्टर ने अपने बच्चों की पढ़ाई यहीं से करवाई और उसके लिए इन दस्तावेजों को कहां से बनवाया गया होगा? साथ ही स्वयं ने भी फर्जी दस्तावेजों के साथ होम्यो इलेक्ट्रोपेथी की फर्जी डिग्री लेकर एमबीबीएस की तरह ऐलोपेथिक व डेन्टल चिकित्सक बन दांतों का ईलाज कर रहा है। इसी प्रकार कई बांग्लादेशी को दलालों के माध्यम से घुसपैठ करवाकर भारत लाया और कइयों को अपने फर्जी क्लीनिक को ट्रेनिंग सेन्टर बनाकर वहा प्रेक्टिस करवाकर उनको भी फर्जी डिग्री दिलवाकर अंचलों में स्थापित करवाया।

बांग्लादेशी सरगना अजीत राय अपनी बांग्लादेशी पत्नी जयंती राय के साथ।

वर्तमान में भी हमारे सूत्र अनुसार पल्ब मंडल व ओपू सरकार नाम के दो युवक को बांग्लादेश से भारत में घुसपैठ कर कुछ माह पूर्व लाया और उनको फर्जी रूप से अपने फर्जी सेंटर पर प्रेक्टिस करवा रहा है वरन उनके भी भारतीय मूल के फर्जी दस्तावेज बनाने की प्रक्रिया में लगा है। यानी अभी की स्थिति में उक्त दोनों बांग्लादेशी युवकों के पास भारतीय मूल के फर्जी दस्तावेज नहीं है पर शासन-प्रशासन ने कार्रवाई अभी नहीं की तो तय है लॉकडाउन खुलने के बाद जल्द ही इनके भी फर्जी दस्तावेज अन्य के फर्जी दस्तावेज की तरह बनवा लेगा।

मामला उजागर होने के बाद भी खतरे मे डालने का किया प्रयास

इतना ही नहीं गूंज के विशेष सूत्र अनुसार 9 अप्रैल को होम क्वारंटाइन के समय अजीत राय के बांग्लादेशी दामाद शामल की मां नमिता पति तुसार पोते (गुड्डु) जिसकी उम्र 9 अप्रैल को क्वारंटाइन के समय 23 दिन की थी, के जन्म के पूर्व ही बांग्लादेश से बांग्लादेश के ही पासपोर्ट पर आई थी, जो 9 अप्रैल को अजीत राय के घर में ही थी, लेकिन उसको घर में छुपाकर रखा और होम क्वारंटाइन के समय जब पुलिस ने घर में रह रहे सदस्यों की जानकारी ली, उस समय पुलिस को नमिता का नाम, उसी घर में होने के बाद भी उजागर नहीं किया गया। इतना ही नहीं जब स्वास्थ्य टीम कोरोना के सेम्पल एवं स्वास्थ्य जांच हेतु पहुंची तब भी अपनी समधन को घर में छुपा रखा तथा उसकी जांच भी नहीं करवाई।

अजीत राय ने किस तरह से अपने शातिर दिमाग के साथ प्रशासन के निर्देशों की अवहेलना कर बांग्लादेश में जन्म हुए पुत्र को लॉकडाउन के दौरान से इंदौर लाया और गूंज के कारण मामला उजागर होने के बाद भी अपने शातिर दिमाग के पासे फेंक कर अपनी बांग्लादेशी समधन की पहचान छुपाकर पुलिस व प्रशासन को गुमराह किया वरन इस संक्रमण काल में सभी को खतरे में डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

प्रशासन को चाहिए कि इन घुसपैठियों के कारण हमारे देश की सुरक्षा के साथ ही आम लोग से भी खिलवाड़ किया जा रहा है। जिनके विरुद्ध सख्त कार्यवाही के साथ, उनकी संपत्ति को जब्त कर उन्हें जेल की सलाखों में नहीं डाला गया तो, तय है आने वाले समय में ये देश के लिए बड़ा खतरा साबित होंगे।

माही की गूंज में बांग्लादेशी अजीत राय की हकीकतें प्रकाशित होने के बाद वह ऐसा बौखला रहा है कि, आखिर वह करें तो क्या करें और बांग्लादेशी घुसपैठिया अपनी ही बिरादरी के कुछ लोगों की मध्यस्थता के साथ परिचितों के माध्यम से माही की गूंज की इस कलम को प्रलोभन देकर खरीदने का प्रयास भी कर रहा हैं, परंतु यह कलम एक सच्चे भारतीय की कलम है। हमारे देश की व्यवस्थाओं को धूमिल करने का प्रयास कर, देश को खतरे में डालने वाले ये घुसपैठिये चाहे इनकी जीवन भर की कमाई ही हमारे कदमो में न्यौछावर क्यों न कर दे, पर इस कलम को खरीद पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

यह पैनी कलम आमजन एवं देशहित के लिए चलती है और हमारी जान पर ही क्यों न बन आए फिर भी यह कलम सदैव इसी तरह चलती रहेगी।

बांग्लादेशी सरगना अजीत राय की कारस्तानियों का कच्चा चिठ्ठा निरंतर...

3 मई तक ऐसे ही रहेगा लॉकडाउन, जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक में लिया निर्णय

माही की गूंज, झाबुआ।

कोविड-19 (कोरोना वायरस) के संक्रमण को देखते हुए जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में कलेक्टर प्रबल सिपाहा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक विनीत जैन, डॉक्टर विक्रांत भूरिया, डिप्टी कलेक्टर एलएन गर्ग, समिति के सदस्य तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कलेक्टर सिपाहा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि कोरोना वायरस से बचाव एवं फैलने से रोकने के लिए नियमों का पालन करना आवष्यक है। सभी नागरिकों को मास्क का उपयोग करना तथा सोशल डिस्टेंस रखना भी बहुत जरूरी है। जिले में लॉक डाउन 3 मई तक जारी रहेगा।

मेडिकल एसोसिएशन के मनोज बाबेल ने संक्रमित क्षेत्र से आने वाली सब्जियों को पूर्ण प्रतिबंध रखने की मांग रखी। तो वही रोटरी क्लब अध्यक्ष हिमांशु त्रिवेदी ने वर्तमान लॉक डाउन के साथ आवश्यक वस्तुओ की ही होम डिलेवरी के साथ आगे बढाने की बात रखी। साथ ही कुछ विशेष वस्तुओं को लॉक डाउन के छूट न देने की बात भी कही।

बैठक में सांसद गुमानसिंह डामोर ने संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कई ग्रामीण जन अभी भी कच्चे मकानो में रहते है ओर बरसात के पहले वह अपने मकानो को रिपेरिंग आदि कर ठीक करते है ताकि बरसात के दौरान उन्हे परेशानी ना हो इस हेतु भी सामान लाने ले जाने के लिये भी छूट दी जाना चाहिये। इसके अलावा संक्रमित क्षेत्र से किसी भी वस्तु को लाने पर पूर्णतः प्रतिबंध के निर्देश भी दिये।

इस बैठक में सांसद जीएस डामोर, विधायक झाबुआ कांतिलाल भूरिया, विधायक पेटलावद वालसिंह मेड़ा, विधायक थान्दला वीरसिंह भूरिया तथा गणमान्य नागरिकों ने आवश्यक सुझाव भी रखें।

बैठक की औपचारिकता इसलिए कि साहब के सिर सेहरा बंध सके

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मील मंसूरी

हमारे मालवा में दो कहावत बड़ी मशहूर है। पहली तो यह कि श्नाचे कूदे वांदरी और खीर खाए फ्कीर्य और दूसरा यह कहा जाता है कि श्कुत्ता जब बैलगाड़ी के नीचे चलता है तो उसे यही लगता है कि बैलगाड़ी उसी ने उठा रखी है।्य इन दिनों जिले के हालातों पर यह दोनों कहावतें बिलकुल सटीक बैठ रही है। हो सकता है लोगों को दूसरी कहावत पढ़कर थोड़ा ठीक ना लगे, इसलिए हम सिर्फपहली पर ही बात करेंगे।

जिले की सरकार के इन दिनों जो हालात है, उनसे तो यही लग रहा है कि श्नाचे कूदे वांदरी ने खीर खाए फ्कीर्य। मतलब सीधा-सीधा है, कर्म कोई ओर करे और वाहवाही कोई लूटे। हम सभी जानते है कि इन दिनों वैश्विक महामारी कोरोना वायरस का प्रकोप बढ़ता ही जा रही है। इस महामारी ने पूरे विश्व में हाहाकार मचा रखा है। भारत में भी इसका खासा असर देखने को मिल रहा है। वहीं प्रदेश का इंदौर, भोपाल और उज्जैन इन दिनों हॉट स्पॉट बना हुआ है। लेकिन झाबुआ जिले के लिए यह अभी तक राहत की खबर है कि यहां कोरोना संक्रमण अभी तक अपने पैर नहीं पसार पाया है। इसका सीधा श्रेय किसको जाता है। यह इन दिनों एक यक्ष प्रश्न बना हुआ है। हालांकि अभी तक हालात काबू में है, लेकिन आने वाला समय कैसा होगा इसका किसी को अंदाजा नहीं है।

इन दिनों जिले में लगे लॉकडाउन को लेकर जिले की जनता और प्रशासन में कुछ तो ठीक नहीं चल रहा है। जिला में कोरोना का एक भी मामला नहीं होने के चलते मध्यम वर्गीय लोग लगे लॉकडाउन में छूट चाहते हैं, तो प्रशासन अपनी ढपली अपना राग की तरह इसे 3 मई तक पूरा करना चाहता है। हालांकि केंद्र सरकार भी इस संबंध में शर्तो के साथ सभी गैर जरूरी सामग्री की दुकानों को छूट की बात कह चुकी है। जिला ग्रीन झोन में होने से जिलेवासियों को उम्मीद थी कि 20 अप्रेल के बाद कुछ छूट मिलेगी, लेकिन प्रशासन ने अपनी ढपली पर अपना राग गाया और 3 मई तक फूल लॉकडाउन पूरे करने की जिद्द पर अड़ गया। हालांकि जिला प्रशासन और जिले के आला अधिकारियों ने 20 अप्रेल के बाद से अब तक दो बार आपदा प्रबंधन समिति की बैठक कर ली। लेकिन असमंजस की स्थिति में अब तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए। पहली बैठक में उपस्थितजनों ने साहब के साथ श्मिले सुर मेरा तुम्हारा तो सूर बने हमारा्य की तर्ज पर अपनी गर्दन हिला दी। दूसरी बैठक में भी कुछ ऐसा ही हुआ, लेकिन साहब ने फैसला अपने पास सुरक्षित रख लिया।

जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक तो हुई, लेकिन कौन लोग है इस समिति में? और जो भी हैं उनको ऐसा क्यों लगता है कि जिले में सब कुछ ठीक है? साहब की हां में हां, आखिर क्यों ऐसा? क्या इनके अपने कोई विचार नहीं है जिले को लेकर? क्यों इनको लगता है कि जिले का हर नागरिक एकदम खुश है और जीवन का आनन्द ले रहा है इस लॉकडाउन में। और साहब का तो शायद मानना यही है कि कोई भूखा मरता हो तो मार जाए, लेकिन जिले में कोरोना नहीं घुस पाए। अच्छी बात है लेकिन साहब आपके जिले की सीमाएं तो अब भी सील नहीं है। बेधड़क संक्रमित क्षेत्रों से लोग आ जा रहे है। जमीनी हालात शायद ठीक नहीं हो रहें है, बिगड़ रहे है। आपके लॉकडाउन के चक्कर में गरीबों के मुह का निवाला छीनता जा रहा है। जिले में खाद्य सामग्री की कालाबाजारी खुलकर साहब आप ही के संरक्षण में हो रही है। जिला आपदा प्रबंधन समिति के जिन सदस्यों को आप बैठक में बुला रहे है क्या वे इतने काबिल और जिले की भौगोलिक स्थिति से परिचित है कि आपको सही तरीके से सहयोग कर सके? इस बैठक की तस्वीर में जो लोग दिखाई दे रहे है, उनमें कुछ चाटुकार व्यापारी, पेट्रोल पम्प संचालक उर्फ तथकथित समाजसेवी, पम्प और ट्रांसपोर्ट के मुनीम तथा नौकर, कुछ तथाकथित नेता दोनों दलों के, जिनका बैठक में पहुंचने का मकसद सिर्फ इतना कि श्तेरे कुर्ते से ज्यादा सफेद मेरा कुर्ता।्य और ये सभी लोग मिलकर या तो साहब आपको धोखा दे रहें है या आप खुद इन बेवकूफों को उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।

25 मार्च से लगे 21 दिन के लॉकडाउन की सफ्लता के बाद जिले में लॉकडाउन 2.0 भी अब तक बहुत ही सफ्ल रहा है। इस सफ्लता का सेहरा साहब अपने माथे बांधना चाहते है और कुछ दुमछल्लों के दम पर दंभ भी भर रहे है। लेकिन हकीकत बिलकुल इसके विपरीत ही है। जिले में लॉकडाउन की सफ्लता का सेहरा तो जिले की जनता के सिर ही जाएगा। हम यह तो नहीं कहते कि कोरोना की इस जंग में सिर्फ जनता का सहयोग है, हम नतमस्तक है उन लोगों के लिए भी जो बिना किसी स्वार्थ, बिना किसी हो हल्ले के अपने कर्तव्य को ईमानदारी से बखूबी निभा रहे है। विरोध तो सिर्फउन लोगों का है जो सिर्फअपनी वाहवाही लूटने जिले को फूल लॉकडाउन करके बैठे है। जिस तरह जनता ने इस लॉकडाउन को सफ्ल बनाने में शासन-प्रशासन का सहयोग किया है, शायद उस तरह का सहयोग प्रशासन ने जनता के साथ नहीं किया है। जनता ने जिस तरह लॉकडाउन का पालन किया उसको देखते हुए प्रशासन को जनता के लिए राहत देना थी और कुछ समय के लिए ही सही लेकिन बाजार या जरूरी दुकानें खोलना थी। मगर ऐसा हुआ नहीं। और इसी के चलते कुछ व्यापारियों ने फायदा उठाते हुए जमकर कालाबाजारी शुरू कर दी, जो बदस्तूर आज भी जारी है। अफ्वाहें तो यह भी उड़ रही है कि कालाबाजारियों का साहब से करीब 6 अंकों की संख्या में रोज के हिसाब से गठजोड़ हुआ है। अब अफ्वाहें कितनी सच है, इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन कुछ तो बात है जो यह अफ्वाहें सोशल मीडिया पर तैर रही है। कई गांवों में लोग खाने या खाद्यान सामग्री का आज भी इंतजार कर रहे है। एकाध नहीं बल्कि कई पोस्टें सोशल मीडिया पर इन दिनों जिले की देखने को मिल रही है। इस तरह की हर पोस्ट और बातें प्रशासन और साहब की जमीनी कार्य योजना में अंतर साफदिखला रही है। बावजूद इसके अगर कोई लॉकडाउन की सफ्लता का श्रेय लेना चाहे तो हम तो यहीं कहेंगे श्नाचे कूदे वांदरी और खीर खाए फ्कीर्य।

भीली भाषा में गीत लिख किया ग्रामीणों को जागरूक

युवा संजय भाभर का गीत सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंचा गांव-गांव

संजय भाभर

माही की गूंज, थांदला। कोरोना संक्रमण के चलते लॉकडाउन में क्षेत्र के युवाओं की कई प्रतिभाएं सामने आ रही है। आदिवासी अंचल में भीली भाषा को जानने वाले लोग बहुतायत में है। इसलिए जो प्रशासन को जो काम कोरोना के जागरण के लिए करना चाहिए था। वह काम अब अंचल के युवा कर रहे हैं। पूर्व विधायक कलसिंह भाभर के पुत्र युवा नेता संजय भाभर ने भीली भाषा में गीत लिखकर ग्रामीणों से घरों में रहने का आव्हान किया है। संजय भाभर के इस प्रयास को सोशल मीडिया में काफी सराहा जा रहा है। भाभर ने बताया कि उनका लिखा यह गीत उनकी आवाज में रिकॉर्ड भी किया जा चुका है सोशल मीडिया के माध्यम से यह गांव-गांव तक पहुंच चुका है। इस गीत का शीर्षक उन्होंने 'थोड़ो रोकाय जा रे मारा भाई' दिया है। इसके माध्यम से उन्होंने लोगों को घरों में रहने की प्रेरणा दी है।

''थोड़ो रोकय जा रे मारा भाई
नाना -नानी ने बापों आई
सबने मारी एही राई
थोड़ो रोकय जा रे मारा भाई।'
'देह मा ऐवे सन्देश आयो
जाणे कुण यो कोरोना लायो
जाणे केवी है रे ये लाई
थोड़ो रोकय जा रे मारा भाई'।
'तारा -मारा नी फिकर सबने
सावधानी पण राखो हमणे
मत उतावलो थाजे मारा भाई
थोड़ो रोकय जा रे मारा भाई।।''

जिला स्तरीय कन्ट्रोल रूम 24 घंटे चालू

माही की गूंज, झाबुआ। कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने अवगत कराया की जिले में कोविड-19 के संक्रमण के प्रभाव को व्यापक रूप से फैलने से रोकने और वायरस के संक्रमण के प्रभावी रोकथाम को दृष्टिगत रख लोकहित में सामान्य के स्वास्थ्य सुरक्षा के उद्देश्य से कलेक्टर कार्यालय में स्थित ई-दक्ष केन्द्र में जिला स्तरीय कन्ट्रोल रूम स्थापित है। यह कन्ट्रोल रूम 24 घंटे सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। इस कन्ट्रोल रूम के दूरभाष क्रमांक(07392). 243319, 244307, 245844, 244688, 243653, तथा 243661 है।

पेटलावद की बेटी ऑस्ट्रेलिया में सीखा रही योग

माही की गूंज, पेटलावद। पीयूष पटवा

आज कोरोनो महामारी को लेकर हर कोई चिंतित है। देश विदेश के नागरिक इस महामारी से झुझ रहे हैं। इसको भगाने के लिए तरह तरह के बचाव के तरीकों को अपना रहे हैं। साथ ही लोग सरकार के दिशा निर्देशों अनुरूप बचाव के तरीकों को अपना कर खुद को सुरक्षित करने में लगे है। इन्हीं बचाव के तरीकों को अपनाती हुई पेटलावद की बेटी अश्लेषा (शालू), जो आस्ट्रेलिया में रहकर योग के माध्यम से आमजनों में रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी पावर) को मजबूत करने हेतु प्रेरणा दे रही है। साथ ही इनकी ऑनलाइन योगासन की तस्वीरें इनके फेसबुक पेज 'योगा विद अश्लेषा' पर देखी जा सकती है। अश्लेषा अपने पति संकल्प मेहता की ऑस्ट्रेलिया में जॉब लगने से उनके साथ वहां रहने लगी। वह विदेश में रहकर भारतीय संस्कारों को पल्लवित करनें में लगी है। साथ ही ये शादी पहले भी पेटलावद में कई गतिविधियों संचालित कर चुकी है।

इन्होंने चर्चा में बताया कि ये विगत 02 सालों से ऑस्ट्रेलिया में अपने घर पर रहकर योग ट्रेनर के रूप में अपनी सेवाएं दे रही है। जिसमे सभी तरह के योगासन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार शामिल है। साथ ही अभी कोविड-19 के विकट समय में घर पर रहकर ऑनलाइन योगासन के माध्यम से आमजनों में इम्युनिटी पावर को बढ़ाने की कोशिश कर रही है। जिसमें ऑस्ट्रेलिया सहित भारतीय नागरिक भी जुड़ रहे है। जिससे सभी इस विकट समय में स्वस्थ्य रह सकें। आपको बता दें कि ये पेटलावद निवासी दिलीप पालरेचा की बेटी है। साथ ही इनकी माताजी रेखा पालरेचा भी जैन ज्ञानशाला के माध्यम से लॉक डाउन में घर पर रहकर ऑनलाइन गतिविधियों के माध्यम से छोटे छोटे बच्चों में आध्यात्म धार्मिक संस्कारो को बढ़ा रही है। साथ ही कोरोना बचाव के तरीकों से बच्चों को जाग्रत कर रही है।

श्रीमाल परिवार ने कोरोना को लेकर बनाया एक और नाटक, लोगों ने सराहा

माही की गूंज ,पेटलावद।

कोरोना संकट काल में गांव करवड़ के श्रीमाल परिवार द्वारा कोरोना वायरस से बचाल के लिए लगातार नाटक बनाकर लोगों को जागरूक करने का काम किया जा रहा है। श्रीमाल परिवार अपने ही परिवार की महिलाओं और बच्चों के साथ मिल कर नाटक का मंचन कर कोरोना के प्रति आमजनता को जागरूक कर रहा है। श्रीमाल परिवार ने नाटक का पार्ट 03 जारी किया है। इससे पिछले दो पार्ट को लोगों ने काफी पसंद किया है। इससे पहले श्रीमाल परिवार ने आम जनता को लॉक डाउन का पालन करने और लॉक डाउन तोड़ने पर यमराज के आने की स्थिति पर नाटक का मंचन किया था। एक बार फिर श्रीमाल परिवार ने नाटक का मंचन किया। जिमसें दिखाया गया कि किस तरह से देश की जनता लॉक डाउन के पालन से कोरोना वाइरस परेशान हो कर 03मई तक देश छोड़ कर जाने की तैयारी में है। नाटक में बताया गया कि किस प्रकार से पुलिस और प्रशासन अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाकर कोरोना को एकजुट होकर हरा रहे हैं। नाटक में दिखाया गया कि कोरोना वायरस तीन मई के बाद भी हमारे बीच रह कर हमारी लापरवाही का इंतजार करेगा। जिससे बचने और कोरोना को भगाने की लिए सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क, सेनेटाइजर का उपयोग आम जीवन मे अभी की तरह करना पड़ेगा। श्रीमाल परिवार के पहले दो नाटक सोशल मीडिया और यूट्यूब चौनल पर छा गए और लोगो ने श्रीमाल परिवार के इन प्रयासों को काफी सराहा जा रहा है।

लाकडाऊन में बच्चों ने शार्ट फिल्म के माध्यम से दिया सकारात्मक संदेश

माही की गूंज, बामनिया।

स्थानीय दयानंद आर्य विद्या निकेतन के बच्चों द्वारा कोरोना महामारी के विषय में एक शार्ट फिल्म बनाई गई । प्राचार्य प्रवीण अत्रे ने बताया कि उक्त शार्ट फिल्म में अलग अलग गांव के विद्यार्थियों ने एक्टिंग की और सबने अपने सीन अपने घर में शूट किए। सबने सोश्यल डिस्टेंसिंग का पालन किया और कोई भी कलाकार और इससे जुड़े लोग एक साथ इकठ्ठे नही हुए । इसमें परीक्षित सोनी ,खुशी पाटीदार , मुस्कान जैन ने अभिनय किया है । प्राचार्य के निर्देशन के अलावा स्टाफके मनोज मालवीय, कविता त्रिपाठी और आयुषी लुनावत

का सहयोग रहा ।प्रबंधन समिति से संस्था अध्यक्ष पदम् भूषण महाशय धर्मपाल जी, विनय आर्य , जोगिंदर खट्टर , मती अनु वासुदेवा, बिपिन भल्ला , गोवर्धनसिंह राठौर, विश्वास सोनी, मति संगीता सोनी, जीववर्धन शास्त्री , आचार्य दयासागर जी एवं अनेक पालको ने इस प्रयास पर बधाइयां प्रेषित की ।

कोरोना संकट को अवसर बनाकर आगे बढ़ने का समय

डॉ. मोहन भागवत ने अपने संबोधन में दिखाई नई राहें

प्रो.संजय द्विवेदी

करोना संकट से विश्व मानवता के सामने उपस्थित गंभीर चुनौतियों को लेकर दुनिया भर के विचारक जहां अपनी राय रख रहे हैं, वहीं दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के संवाद ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। कहने को तो डॉ. भागवत अपने संगठन के स्वयंसेवकों से संवाद कर रहे थे लेकिन इस संवाद के निहितार्थ बहुत विलक्षण हैं। उनके संवाद में देशभक्ति, मानवता और भारतवासियों के प्रति प्रेम के साथ वैश्विक आह्वान भी था कि अब विश्व मानवता के लिए भारत अपने वैकल्पिक दर्शन के साथ खड़ा हो। उन्होंने साफकहा कि हमें संकटों को अवसर में बदलने की कला सीखनी होगी।

एक राष्ट्र-एक जन

सेवा के कामों में जुटे अपने स्वयंसेवकों से उन्होंने साफकहा कि उनके लिए कोई पराया नहीं है। एक अरब तीस करोड़ भारतवासी उनका परिवार हैं। भाई-बंधु हैं। इसलिए सेवा की जरूरत जिन्हें सबसे ज्यादा उन तक मदद किसी भेदभाव के बिना सबसे पहले पहुंचनी चाहिए। उनकी इस राय के खास मायने हैं। उनका साफ कहना था भय और क्रोध से अतिवाद पैदा होता है। हमें हर तरह के अतिवाद से बचना है और भारत की सामूहिक शक्ति को प्रकट करना है। उनके संवाद में देश के सामने उपस्थित चुनौतियों का सामना करने और उससे आगे निकलने की सीख नजर आई। उनके समूचे भाषण में भय और क्रोध शब्द का उन्होंने कई बार इस्तेमाल किया और इन दो शब्दों के आधार होने वाली प्रतिक्रिया से सर्तक रहने को कहा। उनका कहना था कि समाज के अग्रणी जनों को ऐसे अवसरों पर अपने लोगों को संभालना चाहिए ताकि प्रतिक्रिया के अतिवादी रूप सामने न आएं।

नर सेवा-नारायण सेवा

सेवा संघ के मुख्य कामों में एक है। देश के हर संकट, दैवी आपदाओं और दुर्घटनाओं में संघ के स्वयंसेवक बिना प्रचार की आस किए सेवा के लिए आगे आते हैं। उसके सेवा भारती, एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम जैसे संगठन प्रत्यक्ष सेवा के काम से जुड़े हैं। इसके अलावा संघ के प्रत्येक आनुषांगिक संगठन के अपने-अपने सेवा के काम हैं। उन्होंने सेवा के काम में प्रत्यक्ष लगे कार्यकर्ताओं के लिए कहा कि वे सावधानी के साथ अपना काम करें ताकि काम के लिए वे बचे रहें। कोई छूट न जाए और अपनत्व की भावना का प्रसार हो। उन्होंने कहा कि हम उपकार नहीं सेवा कर रहे हैं इसलिए इसे गुणवत्तापूर्ण ही होना होगा। प्रेम, स्नेह, श्रेष्ठता और अपनत्व की भावना से ही सेवा स्वीकार होती है। हमें अच्छाई का प्रसार करना है और भारतीयता के मूल्यों को स्थापित करना है। समाज के संरक्षण और उसकी सतत उन्नति ही हमारे लक्ष्य हैं।

स्वावलंबी भारत-सशक्त भारत

अपने संबोधन में डॉ. भागवत ने स्वदेशी और स्वालंबन की आज फिर बात की। उनका कहना था कि जो कुछ हमारे पास उसे अन्य से लेने की आवश्यक्ता क्या है। इसके लिए हमें स्वदेशी का आचरण करते हुए स्वदेशी उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। जिसके बिना हमारा काम चल सकता है उसे विदेशों से लेने की आवश्यक्ता क्या है। विदेशों पर निर्भरता को कम करने और समाज का स्वालंबन बढ़ाने पर उनका खासा जोर था। वे यहीं रुके उन्होंने रासायनिक खेती के खतरों की तरफइशारा करते हुए जैविक खेती और गो-पालन पर भी जोर दिया। संघ लंबे समय से स्वदेशी की बात करता आ रहा है किंतु सत्ता की राजनीति मजबूरियों और राजनीति के खेल में उसकी आवाज अनसुनी की जाती रही है। कभी नीतियों के स्तर पर तो कभी विश्व बाजार के दबावों में। करोना संकट के बहाने एक बार फिर संघचालक ने स्वदेशी के आह्वान को मुखर किया है तो इसके विशेष अर्थ हैं।

संतों की हत्या पर जताया दुख

अपने संवाद में डॉ. भागवत पालघर में दो संतों की हत्या पर दुखी नजर आए। उन्होंने कहा कि हमें ऐसी घटनाओं के परिप्रेक्ष्य को समझकर इसकी पुनरावृत्ति रोकनी चाहिए। क्योंकि संत तो सब कुछ छोड़कर समाज के लिए निकले थे उनकी हत्या का कोई कारण नहीं है। नागरिक अनुशासन ही देशभक्ति का सबसे बड़ा प्रतीक है। राजनीति को स्वार्थ से अलग कर उसे समाज केंद्रित बनाने पर जोर देते हुए उनका कहना था कि आज हमें पर्यावरण, जीवन और मानवता तीनों के बारे में सोचने की जरूरत है। डॉ. भागवत के व्याख्यान की मुख्य बातें सही मायने में एक जीवंत समाज बनाने की भावना से भरी-पूरी हैं। उनकी सोच का भारत ही अरविंद, विवेकानंद और महात्मा गांधी के सपनों का भारत है।

कोरोना संकट में हुए इस व्याख्यान के बहाने डॉ. भागवत ने संघ की सामाजिक, सांस्कृतिक भूमिका का खाका खींच दिया है। स्वयंसेवकों के सामाजिक उत्तरदायित्व और देश तोड़क शक्तियों के मंसूबों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने भय और क्रोध के आधार पर सृजित होने वाले अतिवाद को बड़ी चिंता से प्रकट किया। उनके संबोधन से साफ है कि संघ समाज में अपनी भूमिका को ज्यादा व्यापक करते हुए अपने सरोकारों को समाज के साथ जोड़ना चाहता। इस बार गर्मियों में संघ के प्रशिक्षण शिविर भी स्थगित हैं इसलिए स्वयंसेवकों के सामने इस संदेश पाथेय से करने के लिए काफी कुछ होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि संघ अपने विविध संगठनों के माध्यम से सेवा और देश के सशक्तिकरण के प्रयासों को व्यापक बनाने में सफ्ल रहेगा। साथ ही उसके संकल्पों और कार्यों को सही संदर्भों में समझा जाएगा।

चार महीने बाद भी नहीं मिल रही आरटीआई में पंचायत की जानकारी

माही की गूंज, खच्चरटोडी। सूचना के अधिकार अधिनियम (आरटीआई) में भी आवेदनकर्ता को जानकारी समय पर नहीं देने की बात सामने आई है। आवेदनकर्ता नेपालसिहं सिसोदिया (उज्जैन) ने चार महीने पहले आवेदन लगाकर जानकारी मांगी थी। लेकिन अभी तक जानकारी नहीं दी जा रही है। जबकि जनपद सीईओ वीरेन्द्र रावत ने जानकारी की प्रतिलिपि देने का लिखित आदेश सचिव किशोर कटारा को दिया है। लेकिन अभी तक सचिव ने जानकारी देना उचित नहीं समझा है। सिसोदिया ने कहा है कि जानकारी देने का आश्वासन कब से दिया जा रहा है। लेकिन हर बार गुमराह किया जा रहा है। सिसोदिया ने बताया कि लॉकडाउन के बाद प्रथम अपीलीय अधिकारी को प्रथम अपील एवं जनसूचना अधिकारी (सचिव) किशोर कटारा की शिकायत करुंगा। आपको बता दे कि एक आरटीआई कार्यकर्ता ने 8 महीने पहले एक आरटीआई आवेदन ग्राम पंचायत में दिया था। जानकारी नहीं देने पर इसकी अपील भी की थी। अपील स्वीकार होने के बाद भी आज तक जानकारी नहीं दी गई है।

लॉकडाउन में नगर की स्थिति बिगड़ते देख प्रशासन ने संभाला मोर्चा

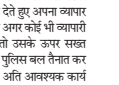

माही की गूंज, थांदला। शासन-प्रशासन कोरोना महामारी से बचने हेतु घरों में रहने की अपील कर रहा है। लॉक डाउन में ढ़ील का फायदा उठाते हुए लोगों सुबह में हाट बाजार सा नजारा बना देते है। ग्रामीण जनों के नगर में आने के कारण नगर की व्यवस्था बिगड़ती देख एसडीएम जेएस बघेल और एसडीओपी मनोहर गवली ने मोर्चा संभाला। सोमवार को नगर के समस्त व्यापारियों को सख्त निर्देश देते हुए अपना व्यापार बंद रखने की हिदायत देते हुए कहा गया कि मंगलवार से अगर कोई भी व्यापारी अपनी दुकान पर व्यवसाय करते हुए दिखाई दिया, तो उसके ऊपर सख्त कार्रवाई की जाएगी। थांदला नगर की चारों सीमाओं पर पुलिस बल तैनात कर किसी को भी नगर में प्रवेश नहीं करने दिया जा रहा है। अति आवश्यक कार्य हेतु सीमा पर तैनात पुलिस कर्मचारी को सूचित कर ही नगर में प्रवेश करने की अनुमति दी जा रही है। सुबह 5 बजे से ही एसडीओपी गवली सख्ती दिखाते हुए सभी को अपने घरों में रहने की हिदायत दे रहे है। पुलिस वाहन देख चुनिंदा व्यापारी अपनी दुकानों की शटर स्वयं गिरा देते हैं। उन व्यापारियों को भी कोरोना जैसी महामारी के प्रति सचेत होने की जरूरत है। वजह यह है कि समीपवर्ती राज्य राजस्थान के कुशलगढ़ में करोना महामारी पैर पसार चुकी है। जिससे सटे कई गांव होने के कारण यदि कोई संक्रमित व्यक्ति आ गया तो प्रशासन भी उक्त बीमारी के आगे घुटने टेकने पर विवश होगा।

बाहर से आए चार लोगों को किया गया कोरंटाइन
कोरोना संक्रमित धार और इंदौर जिले से आए युवकों से क्षेत्र में मचा हड़कंप

माही की गूंज, रायपुरिया। उमेश पाटीदार

संदिग्ध के मिलने के बाद नगर के कई मोहल्लों लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से बंद कर दिया।

रायपुरिया क्षेत्र में प्रशासन को कोरोना संक्रमित धार और इंदौर जिले से लोगों के आने की सूचना मिली, जो रातों रात क्षेत्र में आए थे। जानकारी से प्रशासन में हड़कंप मंचा गया। मामले को गंभीरता से लेते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीम व पुलिस अमले ने पहुंच कर चारों व्यक्तियों तत्काल पेटलावद क्वारंटाइन केंद्र पर भेजा। जानकारी अनुसार दो व्यक्ति संक्रमित जिले धार के रूपाखेड़ा से रायपुरिया अपनी बेटी को छोड़ने आये थे। जबकि रायपुरिया निवासी युवक इंदौर के समीप इंडोरामा में कार्य करता था। वह रातों रात अपने नेपाली दोस्त के साथ घर आ पहुंचा। जैसे ही सूचना ग्रामीणों को लगी तो ग्रामीणों तत्काल स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन को सूचना दी। दोनों स्थानों पर स्वास्थ्य विभाग व पुलिस का अमला मौके पर पंहुचा और बाहर से आए सभी चारों व्यक्तियों को क्वारंटाइन किया गया। प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच अन्य जिलों से बाहरी लोग रायपुरिया सहित क्षेत्र में पहुंच रहे है, किंतु प्रशासन को इस बात की भनक भी नहीं है। संक्रमित क्षेत्र से चार व्यक्तियों के रायपुरिया पहुंचना प्रशासन की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े करता है। जिला अब तक ग्रीन झोन में है और प्रशासनक की ऐसी लापरवाही जिले के लिए घातक साबित हो सकती है।

फिर मिली खुशखबरी, नेगेटिव रिपोर्ट मिलने का सिलसिला जारी

माही की गूंज, झाबुआ।

जिले को लगातार खुशखबरी मिलने का सिलसिला जारी है। कल देर रात और अभी-अभी मिली जांच रिपोर्ट में कुल 15 रिपोर्ट फिर से नेगेटिव आई हैं। 3 सेम्पल रिजेक्ट हो गए है। अभी तक 286 सैम्पल की जांच रिपोर्ट नेगेटिव ही रही है। अब केवल 23 सेम्पल की जांच होना बाकी हैं।

कठिन समय निकला

कई जानकारों का दावा है कि झाबुआ जिले का कठिन समय निकल चुका है। प्रशासन व जनता ने मिलकर अच्छे ढंग से लड़ाई लड़ी है। अब उसी गति से सावधानी जारी रखना चाहिए। आम जनता ने सतर्कता रखी है और आगे भी यह कायम रहे। गांव व शहरों में नए आने वाले व्यक्ति की जानकारी जागरुकता दिखाते हुए अभी तक दी गई है। बाहर से आ रहे मजदूरों के बारे मे भी कहा जा रहा है कि किसी को भयभीत होने की जरूरत नही है। जो लोग एक दिन में छोटे बच्चो व सामान लेकर 50-60 किमी पैदल चलते हुए आ रहे हैं, उनके इम्युनिटी लेवल का अंदाजा लगाया जा सकता है।

परिवार के प्रभुत्व की विचारधारा को अमल कर अपने ही परिवार की भुआ को भतीजा लेकर भागा

कलयुगी युगल भुआ-भतीजे ने गरबा डांस का किया वीडियो वायरल, लड़की के माता-पिता है मानसिक तनाव में

माही की गूंज, झाबुआ।

हिंदू संस्कृति में एक ही परिवार व गोत्र या निकटतम रिश्तेदारी जहां कहीं ना कहीं मामा, भुआ, काका, बाबा किसी भी पारिवारिक ऐसे संबंधों में आपसी विवाह संबंध नहीं होते हैं। वहीं अपने-अपने समाज की अपनी कुछ व्यवस्थाएं सामाजिक स्तर पर समाज उत्थान व आने वाली पीढ़ी के लिए अच्छे संस्कार मिले। जिसके लिए समाज ऐसे अथक प्रयास सामाजिक स्तर पर करता है कि, आने वाली पीढ़ी अच्छी राह पर संस्कारों के साथ चलकर अपने परिवार, समाज व क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे। लेकिन जिस परिवार का या परिवार के साथ समाज व राजनीतिक स्तर तक अपनी प्रभुता हासिल कर ले, पर ऐसे व्यक्ति अपनी प्रभुता हासिल कर परिवार व समाज में संस्कार रूपी जो दिशा प्रदत्त करते हैं वो ही परिवार व समाज की भावी पीढ़ी उसे आत्मसात कर अपनी राह चुनता है। लेकिन इसके विपरीत कहीं ऐसे प्रभुता हासिल करने वाले प्रभुत्व व्यक्ति अपने-आप को समाज की व्यवस्थाओं, निर्णयों, नियमों को तांक में रखकर अपने-आप को समाज से ऊपर मानकर सामाजिक व्यवस्थाओं व निर्णयों को धूमिल कर भावी पीढ़ी को गलत राह दिखाने का प्रयास कर सामाजिक व्यवस्था से विपरीत कार्य करने वालों का समर्थन समाज में देते हैं। तो तय है कि ऐसे समर्थनों एवं विचारों को सर्वप्रथम समाज में उसी प्रभुत्व परिवार की ही भावी पीढ़ी अमल करती है। वरन वह भी सारी मर्यादाओं को तांक में रखकर परिवार ही नहीं वरन समाज एवं हिंदू संस्कृति को भी कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है।

ऐसा ही कुछ मामला जिले के मेवाडा कलाल समाज के राणापुर पडियार परिवार में सामने आया है। 13 अप्रैल को जोबट निवासी निर्भयसिंह पडियार ने सोशल मीडिया के माध्यम से अध्यक्ष मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ को आवेदन दिया, जिसमें बताया कि, उन्हीं के भाई के

कलयुगी भुआ भतिजे।

लॉकडाउन व सोशल डिस्टेंसीग कि धज्यिा उडाकर गोल घेरे में भागा हुआ युगल मना रहा खुशिया गरबा डांस कर किया विडीयो वायरल।

लड़के का लड़का थांदला निवासी हार्दिक पिता कमलेश (नानू) पडियार 21 मार्च को उनकी 19 वर्षीय लड़की को भगाकर ले गया। जिसकी रिपोर्ट भी जोबट थाने में की गई। लॉकडाउन के कारण मैं लड़की को ढूंढ नहीं पा रहा हूं, अतः मेरी लड़की को ढूंढने में मेवाडा कलाल समाज मदद करें। इसकी मांग के साथ, लड़का व लड़की का फोटो भी सोशल मीडिया पर दिए गए।

समाज से मिली जानकारी अनुसार राणापुर निवासी स्व. लुणाजी पडियार के वंशज निर्भय पडियार व हार्दिक पिता कमलेश पडियार है और रिश्ते में निर्भय पडियार की लड़की, हार्दिक पडियार की भुआ लगती है। हार्दिक पडियार अपनी ही सगी 19 वर्षीय भुआ को भगा कर ले गया। जिससे समाज जनों का मानना है कि, उक्त कृत्य से भाई-बहन, भुआ के रिश्ते पर से विश्वास ही उठ जाएगा, कोई अब इस रिश्ते पर भी भरोसा नहीं करेंगे। कमलेश पडियार के लड़के ने परिवार, समाज ही नहीं, हिंदू संस्कृति को भी कलंकित करने का कृत्य किया है। बता दें कि, स्व. लूणाजी पडियार के ही पौत्र शांतिलाल पडियार व चंदूलाल पडियार है, जो परिवार में प्रभुत्व के साथ समाज व राजनीति में भी अपनी प्रभुता रखते हैं। परंतु कुछ समाजजनों से चर्चा की तो बताया कि, शांतिलालजी व चंदूलालजी पडियार की विचारधारा मेवाडा कलाल समाज के सामाजिक विचारधारा से अलग रखते हैं। समाज की कुछ व्यवस्थाएं होती है उसे लांघने का प्रयास सदैव उन्होंने किया है। इतना ही नहीं समाज में कोई अपने-आप को समाज से बड़ा मानकर गैर समाज की शादी को मेवाडा कलाल समाज के सामाजिक रीति रिवाज से करने पर जब समाज जनों ने गैर समाज की शादी को मेवाडा कलाल समाज के रीति-रिवाजों अनुसार सामाजिक रूप देकर शादी करने का प्रयास किया था। उक्त शादी का बहिष्कार समाजजनों ने पूरे बहुमत के साथ किया था। तब समाज का बहिष्कार कर अपने-आप को समाज से ऊपर मानकर समाज को गलत दिशा देने वाले का समर्थन उक्त दोनों प्रभुत्वजनो ने किया था। इतना ही नहीं इन दोनों ने समाज के किसी युवा ने नासमझी में गलत कदम उठा कर दूसरे समाज की लड़की या लड़के से संबंध जोड़ा। जिसमें उन्हें समाज हित में सही मार्ग दिखाने की बजाय, कानून का हवाला देकर उन युवाओ का समर्थन किया, जिन्होंने सामाजिक मर्यादाओं का हनन कर दूसरे समाज के लड़के-लड़की से अनैतिक रूप से संपर्क में आए उनका समर्थन किया।

समाजजनों की माने तो आज उसी का नतीजा है कि, उन्हीं प्रभुत्वजनों के परिवार के ही भुआ-भतीजे ने इन प्रभुत्वों की विचार धाराओं का अनुसरण किया। उन्होंने माना कि, जब समाज में सामाजिक मर्यादाओं के विरुद्ध कार्य करने वालों को उन्होंने समर्थन दिया है, तो तय है हमारे भाग जाने के कुछ समय बाद, परिवार में प्रभुत्व रखने वाले हमारे रिश्ते को कानून का हवाला देकर अवश्य रूप से मान जाएंगे। इस सोच के साथ ही दोनों युवक-युवती भारतीय एवं हिंदू संस्कृति को कलंकित कर भाग गए। अब समाजजन टकटकी लगाए बैठे हैं कि, यह प्रभुत्वजन अब अपने परिवार में आ बनी तो कैसे इस मामले में समर्थन देंगे? यह देखना है। तो वहीं जहां कोरोना संक्रमण की लडाई के साथ लडकी के माता-पिता व परिवार बेटी के, परिवार के ही लडके के साथ भाग जाने के कारण मानसिक रूप से तनाव की स्थिति में होंगे यह जाहिर सी बात है। वहीं दूसरी और कलयुगी भुआ-भतीजे अपने माता-पिता के नाम को कलंकित करने का प्रयास करने वाले किसी परिचित के वहां रहकर खुशिया जाहिर कर परिचित परिवार के साथ गरबा डांस कर सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उडाकर वीडियो वायरल कर रहे हैं। साथ ही यह युगल लॉकडाउन की अवेहलना कर एक से दूसरे के कई घरों पर जाकर रह रहे हैं। इसकी जानकारी भी मिली है।

इस संबंध में झाबुआ-अलीराजपुर मेवाडा कलाल समाज के अध्यक्ष डाडमचंद लोदावरा से चर्चा की तो बताया, भुआ को लेकर भाग जाना यह परिवार व कलाल समाज के लिए भद्दा ही नहीं है, वरन पूरे हिंदू संस्कृति पर कलंक लगा है। लड़के के काका व माता-पिता एवं परिवार को हमारी हिंदू संस्कृति के अनुरूप निर्णय लेकर लड़की को उसके माता-पिता के सुपुर्द कर देना चाहिए। निर्भय पडियार का आवेदन प्राप्त हुआ है, फोन तथा सोशल मीडिया के माध्यम से व सामाजिक स्तर से भी ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है। अध्यक्ष ने बताया कि निर्भय पडियार का कहना है कि, हमारे दादा स्वर्गीय लूणाजी पडियार के हम वंशज है। कमलेश पडियार रिश्ते में मेरा भतीजा लगता है और इसका लड़का ही मेरी लड़की को भगाकर ले गया है। अगर मैं इस रिश्ते को गलती से भी मान लूं तो, समाज में भाई-बहन व भुआ, मासी आदि रिश्तो से ही विश्वास उठ जाएगा, इसलिए किसी भी स्थिति में कमलेश एवं पडियार परिवार मेरी लड़की को मेरे सुपुर्द कर दें, कह रहे है।

मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेसिंग से जिले के श्रमिकों से की चर्चा

माही की गूंज, झाबुआ। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से झाबुआ जिले के ग्राम मिण्डल के श्रमिकों में भारत तथा महेश से चर्चा की। चौहान ने इनसे कुशलक्षेम पूछी। भारत ने अवगत कराया कि वे गुजरात राज्य के अहमदाबाद से आगे स्थित पाटन में एक माह से मजदूरी का कार्य कर रहे थे। कोरोना वायरस का संक्रमण आ जाने तथा लॉक डाउन लागू हो जाने के कारण ग्राम पाटन में फस गए थे। लॉक डाउन लागू होने के कारण अपने क्षेत्र में नहीं आ पा रहे थे। गुजरात राज्य के जिला प्रशासन द्वारा कोरोना वायरस से बचाव एवं रोकथाम के लिये उन्हें कोरेंटाईन सेंटर (आश्रम में) रखा गया था। गुजरात सरकार ने गुजरात राज्य की सीमा तक छोडने की व्यवस्था की। इसके बाद मध्य प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार कलेक्टर प्रबल सिपाहा द्वारा हमको गॉव तक पहुचानें की व्यवस्था की गई। इसके लिये मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को धन्यवाद दिया। भारत ने कहॉ की जिले की सीमा पर स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और भोजन की व्यवस्था भी मिली। हमकों मार्ग में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। मुख्यमंत्री चौहान ने इन श्रमिकों से कहां की कोरोना वायरस से बचने के लिए अपने घर में रहे और सोसलडिस्टेन्स का पालन करें। साथ ही मास्क का अनिवार्य रूप से उपयोग करें। इसके साथ ही लॉक डाउन का पूरी तरह से पालन करें। हम सब कोरोना वायरस पर विजय प्राप्त करेगें।इस अवसर पर ग्राम मिण्डल में जिला सूचना एवं विज्ञान अधिकारी कपिल कुमावत, उप संचालक कृषि नगीन रावत तथा प्रबंधक जिला संत कुमार चौबे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सरकार के खोखले दांवेः घर में खाना नहीं और बिना खाद्यान्न पर्ची नहीं मिल रहा राशन

माही की गूंज, सजेली। ग्राम पंचायत सजेली तेजा भीमजी साथ में संचालित शासकीय राशन वितरण केन्द्र से बिना खाद्यान्न पर्ची वाले गरीब परिवारों को राशन नहीं दिया जा रहा है। जबकि सरकार लॉकडाउन में हर गरीब को खाद्यान्न पर्ची नहीं होने पर भी फ्री में राशन देने का दावा कर रही है। राशन वितरण केन्द्र राधे श्याम आजिविका समूह चलाता है सेल्समैन द्वारा राशन वितरण के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग का पालन भी नहीं किया जा रहा है, जो चिंता का विषय है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि गांव में कई परिवार ऐसे है, जो अत्यन्त गरीब है। जब राशन लेने कंट्रोल पर जाते हैं, तो वहां से बिना राशन दिए भगा देते है। ग्रामीणों की शासन से मांग है कि गरीब परिवारों को राशन उपलब्ध कराया जाए। यही हाल संपूर्ण झाबुआ जिले में देखे जा रहे है। बिना खाद्यान पात्रता पर्ची वालों के शासन की ओर से नाम दुकानों पर दिए गए है। परंतु वह सही नहीं है। खामियों के चलते असल लोगों के नाम छुट गए है और कुछ लोगों जिन्हें खाद्यान्न की जरूरत नहीं वह भी अनाज ले जाकर बाजारों में बेच रहे है।

चलित एटीएम वाहन पहुंच रहा गांव-गांव, ग्रामीणों को पैसा निकालने में होगी सुविधा

माही की गूंज, झाबुआ।

जिले में जिला सहकारी केंद्रीय मर्यादित बैंक की शाखा की चलित एटीएम वाहन को कलेक्टर प्रबल सिपाहा के निर्देश पर नोवेल कोरोना वायरस कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी से रोकथाम के दृष्टिगत सोशल डिस्टेनसिंग को ध्यान में रखते हुए चलित वाहन में एटीएम सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। चयनित एटीएम वाहन प्रत्येक गांव गांव ले जाया जा रहा है जिसमें ग्रामीण अंचलों के व्यक्तियों को नगर तक ना आना पडे।

जहां एटीएम प्रभारी नवीन सिंगल ने ग्रामीणों को विधिवत रूप से सोशल डिस्टेनसिंग का पालन करवाते हुए एवं सेनेटाईजर से हाथ धुलवा कर एटीएम से रुपए निकालने का तरीका बताया। वही ग्रमीण स्तर पर लोगो के द्वारा इस तरह की एटीएम से रुपए निकाले एवं कलेक्टर प्रबल सिपाहा द्वारा इस चलित वाहन में एटीएम सुविधा उपलब्ध करवाने पर सीसीबी बैंक के इस कार्य की सराहना की। ज्ञातव्य रहे कि हम कोरोना वायरस जैसी महामारी को सोशल डिस्टेनसिंग का पूरी तरह पालन कर ही इसकी चेन को तोड़ सकते है।

बैंकों में ग्राहकों को लंबी-लंबी लाईनों में नहीं लगना पड़ेगा

झाबुआ जिले में लगे संपूर्ण लॉकडाउन के बीच वर्तमान में लोगों को बैंकों में से राशि निकालने हेतु लंबी-लंबी लाईनों में लगना पड़ रहा था। जिसके चलते सरकार की मंशा है कि लाईन में नहीं लगते हुए ग्राहक अपने एटीएम कार्ड से स्वयं पैसे निकाले। चलित एटीएम मशीन पर कर्मचारी भी उपस्थित रहेंगे। पैसे निकासी के पूर्व और बाद कस्टमर के हाथ सेनेटाईजर से धुलवाएं जाएंगे। जिससे स्वयं की सुरक्षा हो सके। बैंक द्वारा संपूर्ण लॉकडाउन में चलित एटीएम की सुविधा देने पर ग्राहकों में खुशी की लहर सी है।

अज्ञात कारणों से लगी आग में पूरा घर जला

माही की गूंज , सारंगी। संजय उपाध्याय

सारंगी के समीप ग्राम पंचायत कासारबड़ी के बंजारा पाड़ा में निवासरत करण सिंह बंजारा के मकान में अज्ञात कारणों से आग लग गई। घर के सभी लोग बाहर सो रहे थे। सुबह घर के लोगों को पता चला जब तक मकान पूरी तरह जलकर खाक हो गया था।

विकट परिस्थिति में एक तरफलॉक डाउन के कारण लोगों के हाल- बेहाल हो रहे हैं और ऐसे में इस गरीब का सब कुछ जलकर राख हो गया। आग लगने से घर में रखे कपड़े, अनाज, टीवी, घर में रखा खाने पीने का सामान, नगद रुपए सहित सबकुछ जलकर खाक हो गया। अभी खाने के लिए सामान भी नहीं बचा है। जब इस घटना की खबर कसारबड़ी के सरपंच को पता लगी सरपंच प्रतिनिधि एवं भाजपा मंडल महामंत्री सुखराम मोरी ने तत्काल मौके पर पहुंचकर हालत देखकर हल्का पटवारी व पुलिस चौकी को सूचना दी। र सरपंच ने स्वयं की तरफसे पीड़ित किसान करण सिंह बंजारा के परिवार को दस दिन के खाने पीने का सामान दिलवाया। सरपंच प्रतिनिधि सुखराम मोरी ने कहा कि प्रशासन से जो भी सहयोग होगा। पीड़ित किसान को दिलाने के प्रयास किए जाएंगे।

आपकी सेवा को गूंज सलाम

विकट परिस्थितियों में जरूरतमंदों की मदद कर रहा गौतम ग्रुप और अयोध्या फाउंडेशन

माही की गूंज ,पेटलावद।

एक माह से अधिक समय से चल रहे लॉकडाउन की विकट परिस्थितियों आमजन को हर तरह की दिक्कत व परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। शासन की ओर से हर प्रकार से कोशिश की जा रही है कि शासन की मदद पहुंचे। लेकिन कई परिवार ऐसे होते हैं जिसके पास शासन पहुंच नहीं पाया। और यहीं से समाज सेवियों का कार्य शुरू होता हैं। 25 हजार से अधिक जनसंख्या वाले शहर पेटलावद में अगर कोई जरूरतमंद अब तक भूखा नहीं सोया हैं तो उसका पूरा श्रेय नगर सेवा क्षेत्र में अग्रणी रहने वाले गौतम ग्रुप और उसके संचालक गौतम गेहलोत और अयोध्या फाउंडेशन के भरत चौधरी को जाता है। इस संकट काल में जरूरतमंदों में हर प्रकार से मदद कर निस्वार्थ सेवा की एक मिसाल बन गई है यह दो संस्था। जिसकी न केवल नगर बल्कि पूरे जिले में जिले में प्रशंसा हो रही हैं।

लोगों का दर्द देख जागा सेवा का भावः गौतम गेहलोत

दिन-रात एक कर गौतम ग्रुप अपनी सेवाएं इस संकट काल में दे रहा है। हमारे द्वारा ग्रुप के संचालक गौतम गेहलोत से विशेष मुलाकात की गई। जिसंमे उन्होंने ने बताया कि सैकड़ों किलोमीटर दूर से पैदल घर लौट रहे मजदूरों का दर्द देख कर सेवा करने से अपने आप को रोक नहीं सका। पैदल लौट रहे मजदूरों के भोजन और उनके घर तक पहुंचाने की व्यवस्था वाहन किराये से कर की गई। जिसके बाद से शुरू हुआ ये सिलसिला सतत जारी है। आज सैकड़ों गरीब परिवारों को राशन व भोजन की व्यवस्था की जा रही है। जिन लोगों के पास शासन की मदद नहीं पहुंच सकी। उनको 15 दिन के राशन और समाप्त होने पर दुबारा राशन की व्यवस्था की। वहीं सबसे बड़ी समस्या उन लोगों के लिए खड़ी हो गई। जिनका इलाज बाहर के हॉस्पिटलों में चल रहा है। राज्यों की सीमाएं सील होने के कारण मरीजों के लिए दवाई लाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था, लेकिन गौतम ग्रुप के प्रयासों से ये परेशानी भी टल गई और अब तक 400 परिवारों को दाहोद, बड़ौदा तक से दवाइयां उपलब्ध कराई गई। ऐसा नही कि संकट के इस समय मे गौतम ग्रुप सेवा में लगा है। हमेशा गौतम ग्रुप, गौतम गहलोत के नेतृत्व में सेवा करता रहा है। गौतम ग्रुप विगत चार वर्षों से राम रोटी योजना के तहत मजबूर लोगों को भोजन उपलब्ध कराते रहे हैं। उनका कहना है कि मैं भूखा सो जाऊंगा पर मेरे दर पर जो भी आएगा वो भूखा न सोएगा। इसी प्रकार नगर के जल संकट के समय भी अपने निजी खर्चे से पूरे नगर के लिए पानी की व्यवस्था कर चुके हैं। साथ है किसी प्रकार की घटना, दुर्घटना काल में परिवार तक पहुंच कर मदद करने में गौतम ग्रुप हमेशा आगे रहा है।

अयोध्या फाउंडेशन के भरत चौधरी कर रहे हर हाथ की मदद

पेशे से एक सामान्य शिक्षक हैं भरत चौधरी। लेकिन दिल में सेवा का भाव ऐसा की अपना पूरा मासिक वेतन भी सेवा कार्यो में लगाने से कभी पीछे नहीं हटते। एक माह से अधिक समय से जारी लॉक डाउन की विकट परिस्थितियों में अयोध्या फाउंडेशन द्वारा सैकड़ों गरीब परिवारों को राशन व भोजन की व्यवस्था की गई। खुद खाना पकाकर परिवार के साथ भोजन के पैकेट बना कर जरूरतमंदों तक पहुंचाए गए। साथ ही अन्य राज्यों से नगर से होकर गुजरने वाले जरूरतमंद लोगों को भोजन वितरित किया गया और रास्ते के लिए परमल, सेव,बिस्किट आदि की व्यवस्था भी भरत चौधरी ने की। कई परिवारों को जरूरी राशन उपलब्ध कराया गया। लोगों को कोरोना संक्रमण के बारे में जागरूक करते हुए साबुन,मास्क भी वितरित किए। लगभग 5 हजार मास्क का वितरण निःशुल्क उस समय में किया, जब मास्क मेडिकल पर 20 से 30 रुपये में बेचे जा रहे थे। आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले सेवा कार्य करने वालों को भी सामान्य दर पर मास्क उपलब्ध करवाए। नगर की सुरक्षा मे लगे पुलिस महकमे को भी चाय नास्ता देकर सेवा कर रहे हैं। गौतम ग्रुप की तरह ही अयोध्या फाउंडेशन द्वारा भरत चौधरी के नेतृत्व मे सहायता के कदम उठाये जाते रहे हैं। जब भी लोगों को जरूरत लगती हैं शिक्षक भरत चौधरी अपनी और अपनी शक्तिनुसार मदद करते हैं। अयोध्या फाउंडेशन द्वारा मरीजों के लिये ओक्सीजन सिलेंडर,कफ मशीन की व्यवस्था, सैकड़ों बच्चो को निरूशुल्क कोचिंग देने के साथ हजारों बच्चों को खेल व शिक्षण सामग्री दी गई। ग्रीष्म काल में शीतल जल लोगों को प्रदान करना, सड़क पर ठंड में ठिठुरने वालों को कम्बल उपलब्ध कराना, गरीब परिवारों को रोजगार के लिए सिलाई मशीन देने जैसे कार्य किये जा रहे हैं। एक सामान्य शिक्षक होकर जिस तरह से सेवा क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। समस्त शिक्षक वर्ग उनके कार्यो से प्रेरणा ले रहा है और भरत चौधरी से प्रेरित होकर अन्य लोग भी मदद को आ रहे हैं।

गूंज का सलाम आपकी सेवाओं के लिए

कोरोना संकट में जो मुश्किल समय लोगों के लिए आया है। उसमें जिन लोगो द्वारा पूर्ण सेवा भाव से लोगो की मदद की जा रही हैं। पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग के साथ साथ उन सभी कर्मवीरों का गूंज की टीम सलाम करता है, जो इस संकट की घड़ी में जरूरतमंदों की मदद कर रहे हैं।

नलों से गंदे पानी आने की शिकायत पर लोगों के बीच पहुंचे नपाध्यक्ष

माही की गूंज, थांदला। नगर में नलों में प्रदाय किए जाने वाला पानी गंदा आ रहा है। यह सूचना जैसे ही नगर परिषद अध्यक्ष बंटी डामोर को प्राप्त हुई, वह जलप्रदाय प्रभारी विजय गिरी को लेकर लोगों की समस्या हल करने उनके बीच पहुंचे। डामोर ने गिरी को समस्या का उचित निराकरण करने को कहा। सोमवार व मंगलवार सुबह नगर परिषद अध्यक्ष डामोर ने नल-जल व्यवस्था का औचक निरीक्षण कर बताया कि जिस तरह वर्तमान में कार्य किए जा रहे हैं, उसी तरह आगे भी करते रहें। मैं एवं मेरे सभी परिषद के पदाधिकारी कर्मचारियों के साथ हमेशा इसी तरह खड़े रहेंगे। आम जनता के साथ हाथ ठेला चालक, पथ विक्रेताओं और व्यापारियों से अनुरोध है कि वर्तमान में लॉकडाउन के चलते सफाई व्यवस्था को प्राथमिकता से लिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति यह दृढ़ संकल्प ले कि हम इसी तरह नगर को साफऔर स्वच्छ रखेंगे।

आमीर कुरैशी ने रखा पहला रोजा, दिनभर की खुदा की इबादत

माही की गूंज, झाबुआ। मुस्लिम समाज में पवित्र माह रमजान चल रहा है। बड़ों के साथ मासूम बच्चें भी रोजा रख रहे है। तपती धूप की परवाह किए बिना नन्हें-मुन्हें बच्चें रोजा रख कर अल्लाह और उसके रसूल की रजा हासिल करने के लिए भूख और प्यास की शिद्दत बर्दाश्त कर रहे है। शहर के हुड़ा क्षेत्र के मारूति नगर कॉलोनी निवासी असलम कुरैशी के 9 वर्षीय बेटे आमिर ने अपने जीवन का पहला रोजा रमजान माह के तीसरे दिन 27 अप्रेल को रखकर अपने आप को रोजदार बनाया। आमिर पिछ्ले कई दिन से रमजानुल मुबारक के महीने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। रोजा रखने के साथ-साथ आमिर ने अपने घर पर वालिद के साथ नमाज भी अता की।

कोरोना के देश से खात्मे के लिए अल्लाह से दुआ मांगी

असलम कुरैशी ने अपने बेटे के पहले रोजे पर घर में खास पकवान तैयार किए। आमिर ने सोमवार को पहला रोजा रखकर दिनभर खुदा की इबादत भी की। शाम को रोजा इफ्तार के समय अपने मनपसंद के लजीज खाने का मजा लिया। माता-पिता ने भी बच्चे की पसंद का पूरा ख्याल रखा। आमिर ने रोजा इफ्तार के समय कोरोना के देष से खात्मे के लिए अल्लाह से दुआ भी की।

संपादकीय

कोरोना संक्रमणः कम संसाधनों के बीच बड़ी भूमिका निभा रही ग्राम पंचायतें

देश की सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक जटिलताओं के बीच ग्राम पंचायतें अपनी एक अलग भूमिका निभाती रही हैं। हर ग्राम पंचायत की अपनी एक राजनीति होती है, और अपनी ही समस्याएं। सैद्धांतिक रूप से हम भले इन ग्राम पंचायतों को देश के लोकतंत्र की आधारभूत इकाई मानते हों और उनसे बड़ी उम्मीदें भी बांधते हों, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर हमें उनकी याद साल में एक बार 24 अप्रैल को ही आती है, जब पंचायती राज दिवस आता है। आम तौर पर यह दिवस शुभकामना संदेशों, कुछ सरकारी योजनाओं की घोषणा और पंचायतों की भूमिका के यशोगान जैसी औपचारिकताओं के साथ ही बीत जाता है। लेकिन इस साल पंचायती राज दिवस ऐसे मौके पर पड़ा, जब देश एक अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है। ऐसे में, इस दिवस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को यह मौका दे दिया कि वे न सिर्फइस मुद्दे पर ग्राम पंचायतों से सीधा संवाद बनाएं, बल्कि कोरोना वायरस के खिलाफचल रही लड़ाई के लिए उन्हें तैयार भी करें। प्रधानमंत्री ने इस मौके पर देश की ढाई लाख ग्राम पंचायतों के सरपंचों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जो बात की, उस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए इस लड़ाई को गांव के स्तर पर शुरू किया जा सकता है।

कोरोना वायरस के संक्रमण के शुरुआती डेढ़-दो महीनों में इसका ज्यादातर विस्तार महानगरों और छोटे-बड़े शहरों में हुआ है। लेकिन तमाम पाबंदियों और लॉकडाउन के बावजूद जिस तेजी से यह फैल रहा है, उसमें यह खतरा हमेशा बना हुआ है कि यह वायरस संक्रमण किसी भी समय ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुंच सकता है। यही एक ऐसी आशंका है, जो केंद्र व राज्य सरकारों और पूरे चिकित्सा जगत को परेशान कर रही है। संक्रमण के ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचने का अर्थ होगा, देश की 70 फीसदी आबादी पर खतरे का मंडराना। गांवों में अभी भी मूलभूत चिकित्सा सुविधाएं बहुत नहीं हैं। कम से कम इतनी तो कहीं नहीं है कि वहां कोविड-19 के मरीज की पूरी देखभाल हो सके। शहरी अस्पताल वहां से बहुत दूर हैं और वे पहले ही काफी दबाव में हैं। ऐसे हालात में ग्राम पंचायतें अहम भूमिका निभा सकती हैं। खासकर कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए। प्रधानमंत्री के संबोधन ने उन्हें यह भूमिका सौंपने की शुरुआत कर दी है। प्रधानमंत्री अच्छी तरह जानते हैं कि गांव वालों को 'सोशल डिस्टेंसिंग' जैसी शब्दावली में नहीं समझाया जा सकता, इसलिए उन्होंने 'दो गज की दूरी' जैसी शब्दावली का इस्तेमाल किया। इसमें राज्य सरकारों और प्रशासन के लिए यह संदेश छिपा है कि गांवों से संवाद बनाने के लिए उन्हें उन्हीं की भाषा को अपनाना होगा।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने एक और महत्वपूर्ण बात यह कही है कि कोरोना संकट ने एक सबसे बड़ा सबक यह दिया है कि अब हमें आत्मनिर्भर बनना होगा, बिना आत्मनिर्भर बने इस तरह के संकटों का मुकाबला नहीं हो सकता। राष्ट्रीय स्तर पर हमने पिछले चंद रोज में ही यह देख लिया है कि चिकित्सा सामग्री के मामले में विदेशी बाजारों पर निर्भरता कितनी तरह की समस्याएं खड़ी कर सकती है। प्रधानमंत्री ने यह बात ग्राम पंचायतों से कही है, इसलिए इसका यह अर्थ भी लगाया जाएगा कि उनका संकेत गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की ओर भी है, खासकर चिकित्सा सुविधा के मामले में। अगर सचमुच ऐसा हो सका, तो यह एक बहुत बड़े बदलाव की शुरुआत होगी।

एमपी मे कोविड-19 नहीं निशाने पर शिवराज

संजय रोकड़े, लेखक

राजनीति का भी अपना एक अलग ही चरित्र होता है। इसमें कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम जो न चाहे वह भी मजबूरी में करना पड़ जाता है। ये बात विपक्ष के संबंध में नहीं कही जा रही है। दरअसल मसला ये है कि इस समय गुजरात में कोरोना की स्थिति एमपी से भी गंभीर स्थिति में है लेकिन वहां केन्द्रीय जांच दल को न भेज कर एमपी की घेराबंदी की है क्यों? जब से एमपी में केंद्रीय टीम को भेजा गया है तब से यहां के राजनीतिक व प्रशासनिक गलियारों में उस टीम को चौहान के लिए चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है।

हाल ही में दिल्ली में कोरोना वायरस के प्रसार की निगरानी के लिए बनी इंटर मिनिस्टेरियल टीम की जांच में मध्यप्रदेश को विपक्ष शासित राज्यों महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और राजस्थान के साथ लताड़ लगाई है। मतलब साफहै कि कोविड पर निगरानी के तहत शिवराज को सबक सिखाने का काम किया जा रहा। हालांकि इस तरह की खबर को लेकर मुख्यमंत्री के तौर पर शिवराज की उम्र को लेकर कुछ भी अटकलबाजी लगाना अभी सही नहीं होगा।

आखिर विपक्ष शासित राज्यों महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और राजस्थान के साथ मध्यप्रदेश को इस सूची में शामिल क्यूं किया गया। ये बात समझ से परे है। दैनिक रिपोर्ट में सामने आ रहे आंकड़े भी इस बात को पुष्ट करते है कि इंदौर चिंताजनक और तेजी से हॉटस्पॉट बनकर उभर रहा है लेकिन इससे भी बुरी स्थिति तो गुजरात की है। इस समय मध्यप्रदेश के मुकाबले गुजरात से अधिक बेचैन करने वाली खबरें आ रही हैं। दोनों राज्यों में यह अंतर यह बताने के लिए काफी है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी ताजा सूची के मुताबिक कोविड के सबसे ज्यादा कंफर्म मामलों में गुजरात देश भर में दूसरे नंबर पर है। इसकी तुलना एमपी से करें तो वह 6 ठे नंबर पर है।

इससे साफ जाहिर होता है कि केंद्रीय निगरानी टीम को इंदौर भेजने का मतलब वायरस को नियंत्रण में लाने से ज्यादा लेना-देना नहीं है। इसका संबंध भाजपा की अंदरूनी राजनीतिक उठापठक से है। मोदी और शाह द्वारा जिस तरह के हालात निर्मित किए जा रहे है उसे देखते हुए तो यही कहा जा सकता है कि अब उनको भले ही पद से हटाया न जाए पर कोरोना महामारी खत्म होने के बाद 'कठपुतली' सीएम बनाने की पूरी-पूरी तैयारी की जा रही है। गर यही हालात रहे तो शिवराज चाह कर भी प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर चौथा कार्यकाल वैसा नहीं होगा जैसा उन्होंने सोचा था।

खैर। अब हम थोड़ा कोरोना के संदर्भ में गुजरात की ओर रूख करते है। क्या वाकई मोदी के 'गुजरात मॉडल' के चलते प्रदेश में कोरोना जैसी बीमारी नियंत्रित है। गर हां तो केन्द्रीय जांच दल को वहां नही भेजने का निर्णय सही ही है। लेकिन आंकड़े इस बात को ताकीद करते है कि वहां सब कुछ ठीक नही है। जिस तरह के आंकड़े सामने आ रहे है वे यही प्रमाणित कर रहे है कि गुजरात में कोरोना जैसी माहामारी को लेकर हालात बेकाबू है और ठीक नही है।

दरअसल सच तो ये है कि गुजरात में स्वास्थ्य सुविधाओं की हालत खस्ता होने के कारण वहां कोरोना वायरस का संक्रमण बड़ी तेजी से फैल रहा है। अब वहां चार जिलों को छोड़कर सभी जिलों में कोरोना के मरीज पाए गए है। गुजरात संक्रमित लोगों की संख्या के मामले में महाराष्ट्र के बाद दूसरे नंबर पर पहुंच गया है। प्रदेश में जिस रफ्तार से संक्रमण फैल रहा है और मौतों की जो दर है, उसे देखते हुए कहा जा रहा है कि वह कोरोना का एपिसेंटर यानी मुख्य केंद्र बन सकता है। देश में कोरोना से करीब एक तिहाई मौतें गुजरात में हो रही हैं।

बताते चलूं कि महाराष्ट्र में कोरोना फैलने की रफ्तार में पिछले दिनों कमी आई है, जबकि गुजरात में उल्टा हो रहा है। इसीलिए वह दिल्ली को पछाडकर दूसरे नंबर पर पहुंच गया है। अभी तक के आंकड़े कहते हैं कि गुजरात में कोरोना से संक्रमित 2600 से ज्यादा मरीज मिल चुके हैं। राज्य में अब तक 112 लोगों की कोरोना से मौत भी हो चुकी है। यह हालत तब है जब राज्य में टेस्टिंग बहुत कम हुई है और उसकी भी गति सुस्त है। इसलिए आशंका है कि आने वाले दिनों में हालात और तेजी से बिगड़ सकते हैं।

हालांकि केरल को छोड़ दें तो पूरे देश की हालत इस मामले में खराब थी, लेकिन गुजरात में सबसे बुरी बात यह थी कि पिछले बीस साल के बीजेपी शासन में स्वास्थ्य तंत्र वहां पूरी तरह से चरमरा गया था। भाजपा सरकार ने इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया। बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में राज्य के लोगों की सरासर उपेक्षा की गई। कई दूसरे राज्य जहां स्वास्थ्य पर अपना खर्च बढ़ा रहे थे वहीं गुजरात कटौती कर रहा था। और यह उस समय हुआ जब नरेंद्र मोदी प्रदेश के मुख्यमंत्री थे।

चलिए अब कुछ आंकड़ों पर गौर फरमाते है। आरबीआई के अनुसार सन 1999 में गुजरात देश में स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति खर्च करने वाले राज्यों की सूची में चौथे नंबर पर था, मगर 2009 आते-आते वह फिसलकर 11 वें स्थान पर आ गया। सनद रहे कि गुजरात पहले स्वास्थ्य पर करीब 4. 39 फीसदी खर्च करता था जो कि घटकर केवल 0. 77 फीसदी रह गया। यानी पांचवां हिस्सा ही रह गया।

इसी का नतीजा है कि गुजरात में 1000 मरीजों पर 0. 33 बेड हैं। केवल बिहार ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां इससे भी ज्यादा हालत खराब है। राष्ट्रीय औसत 1000 मरीजों पर 0. 55 बेड का है। अब आप सोच सकते हैं कि जब महामारी से हजारों लोग संक्रमित होंगे तो उनका क्या हाल होगा। बीमारों के लिए बेड कहां से आएंगे और आ भी गए तो रखे कहां जाएगें। इतने अस्पताल या इमारतें कहां है।

काबिलेगौर हो कि जब 2001 में नरेंद्र मोदी ने राज्य की बागडोर संभाली थी तब राज्य में 1001 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र थे। इसके अलावा 240 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और 7224 उप केंद्र थे। अब जरा यह देख लीजिए कि अगले दस सालों में उनकी उपलब्धियां क्या रहीं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र 1058 हो गए यानी केवल 57 नए केंद्र बने। इसके अलावा 74 सामुदायिक केंद्र और बने जबकि एक भी उपकेंद्र नहीं बना।

यही नहीं, गुजरात के सरकारी अस्पतालों में भर्ती होने पर भी वहां के मरीजों को ज्यादा खर्च करना पड़ता है। इस मामले में तो बिहार भी उससे बेहतर है। प्रति व्यक्ति दवाओं पर खर्च करने के मामले में गुजरात 2009 में ही देश में पच्चीसवें स्थान पर पहुंच गया था।

बहरहाल आंकड़े और भी बहुत से ऐसे है जो गुजरात की स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर मोदी के मॉड्ल की सच्चाई को सामने लाकर उसकी धज्जियां उड़ाते है। मसलन, राज्य में वेंटिलेटर की भारी कमी, टेस्टिंग लेबोरेटरी का खासा अभाव। स्वास्थ्यकर्मियों व हेल्थ स्टाफ की हद से ज्यादा कमी। आश्चर्य तो ये कि पिछले बीस सालों में इन सभी मामलों में सुधार होने के बजाय स्थिति बिगड़ी ही चली गई।

कहा जा सकता है कि राज्य सरकार की खराब नीतियों और स्वास्थ्य सेवाओं की अनदेखी ने गुजरात की जनता को बहुत बड़े खतरे में डाल दिया है। अब कोरोना जैसी महामारी के चलते मोदी के गुजरात मॉडल की खामियों की सजा जनता भुगतेगी।

असल में परेशानी तो यह है कि केंद्र में आने के बाद भी नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय स्तर पर वही काम कर रहे है जो उनने गुजरात में किया था। यानी एक नाकाम गुजरात मॉडल को वे देश पर थोप रहे हैं। और अब इसका नतीजा देश की जनता को भुगतना पड़ेगा। अब भी वे कोरोना जैसी महामारी को लेकर की गई अपनी नादानियों व गलतियों को स्वीकार करने के बजाय किसी तानाशाह के जैसे अपने ही दल के नेताओं के भविष्य पर चोट करने का प्रपंच रच रहे है।

फॉर्मेट करना पड़ेगा वायरस वाला 2020

विवेक रंजन श्रीवास्तव, लेखक

रोबो अल्फा, रोबो थीटा से बातें कर रहा था। अल्फा ने कहा यार मजा नही आता, स्मार्ट फोन और कम्प्यूटर्स में वायरस आ जाना आउट आफडेट नही लगता तुम्हें ? रोबो थीटा ने उबासी लेते हुये जबाब दिया, हां वो तो है पर एंटी वायरस साफ्टवेयर कंपनियों का सारा धंधा ही इन्हीं वायरस की बदौलत चकाचक चल रहा है। तुम्हें तो पता ही हे कि स्वयं ये कंपनियां अपने हैकर्स हायर करती हैं जिनका काम ही यह होता है कि वे तरह तरह के फिशी साफ्टवेयर बनायें जिनके जरिये लोगों के, संस्थाओ के और सरकारो के कम्प्यूटर्स व डाटा बेस से जानकारियां उड़ाई जा सकें। तभी धीर गंभीर मुद्रा में रोबो नियो वहां आ गई। उन्होने अपनी स्कर्ट संभालते हुये बातचीत में भागीदारी की, अरे मिस्टर अल्फा अब तो बड़े बड़े पत्रकार आफिसो में जाकर फाईलें नही तलाशते, और न ही डिनर पर शराब के नशे में अफसर की बहकी हुई बातों में स्कूप स्टोरी ढ़ूंढ़ते हैं। अब तो अफसर के फोन में वायरस डाल कर, अपने टच स्क्रीन पर ही उसकी सारी हरकतें रिकार्ड करने का समय है। हर हाथ में मोबाईल का धीरू भाई का क्रांतिकारी नारा फलीभूत हो रहा है। रोबो थीटा ने सहमति जताई हां हां, अब तो इसीलिये विधायको के रिसार्ट पर्यटन से पहले उनके मोबाईल अलग धरा लिये जाते हैं, और बड़े अधिकारियों, मंत्रियों के आफिसों में घुसने से पहले मोबाईल बाहर रखने पड़ते हैं। नियो ने अपनी स्क्रीन पर देखा वेब कैमरा बता रहा था कि गेट पर कुछ हलचल है, अंगड़ाई लेते हुये नियो गेट की अपनी ड्यूटी पर बढ़ गई। रोबो थीटा बोला अल्फा भाई गुप्तचर संस्थायें तक अब अपने तौर तरीके पूरी तरह बदल चुकी हैं। हर देश की गुप्तचर संस्था ने एक सायबर सैल बना ली है। हेकिंग के जरिये लोगों के मोबाईल से और कम्प्यूटर से बिना उनकी जानकारी के उनके व्यक्तिगत डाटा, आंख से काजल की तरह चुराये जा रहे हैं। ज्ञान बघारते हुये अल्फा ने कहा बड़े बडे नामी सर्च एंजिन लोगों के सर्च डाटा का व्यापार कर रहे हैं। दुनियां का मल्टी नेशनल व्यापार ही डाटा बेस्ड बन चुका है। जो एप्स पसंद किये जाते हैं, उनके संग न दिखने वाले फिशिंग साफ्टवेयर लोगों की डिवाईस में पहुंचा दिये जाते हैं और फिर उनकी हर गतिविधी कहीं दूर बैठे हैकर के पास पहुंचती रहती है।

रोबो रेम ने टेली वाईस पर इंटरेप्ट करते हुये रोचक वार्ता में अपनी भागीदारी की, वह बोला पर अधिकतर एप्पस तो पूरी ईमानदारी से परमिसन मांगते हैं, डिवाईस के फोटो, फाइलें और डाटा एसेस करने का। हंसते हुये अल्फा बोला और लोग मजे में बिना पढ़े ही हड़बडी से एग्री पर क्लिक भी तो करते हैं। ये वे ही लोग हैं जो अपनी कथित निजता की लड़ाई लड़ने के लिये सड़कें बंद करके लंबे लंबे आंदोलन करते दिखते हैं, किंतु एक टाईम पास गेम खेलने के लिये अपनी सारी निजता हमें सौंप देते हैं। थीटा बोला मैं तो उनके एस एम एस तक पढ़ सकता हूं, और जब जब पढ़ता हूं लोगों के टुच्चेपन पर हंसता रह जाता हूं। इन मूर्खो से अपन रोबोट ही भले। अल्फा अपनी ड्युटी पर निकल लिया। थीटा अकेला बोर होने लगा, तो उसने सामने रखा टैब आन कर लिया। मूड था कि कोई वेब सिरीज देखी जावे, पर सर्च करते हुये वुहान बैट मार्केट का वेब केम कनेक्ट हो गया। अजीबो गरीब आवाजें और जीव जंतु देखकर वह वहीं सर्फकरने लगा। अरे यह क्या, वह चौंका प्रोटीन लेयर में डी एन ए, न सिर न पैर, केवल धड़ ही धड़, पर मानव शरीर का साथ मिलते ही किस तेजी से बढ़ रहा है, ओह, यह तो इंसानी लंग्स में पहुंचकर उसे चोक कर रहा है। थीटा घबराया, उसने तुरंत एलार्म मोड में आकर सिग्नल भेजने शुरू किये,पर 2020 की आमद के जश्न में डूबे दुनियां के लोग जैसे नशे में थे। ग्लोबल विलेज बनाती मल्टी नेशनल कंपनियां इकानामी के ग्राफको पीक पर ले जाने में मस्त थीं। सरकारो ने या रिसर्च इंस्टीट्यूशन्स ने किसी ने उसके एलार्म पर कोई ध्यान नहीं दिया। लोग मजे में छुट्टियां मनाने पेरिस, इटली, सिंगापुर की यात्राओ पर सपरिवार निकले हुये थे। और उनके साथ बिना वीसा, बिना पासपोर्ट के बिल्कुल फ्री ट्रेवल कर रहा था, वायरस करोना।

अब लोग जागे हैं जब दुनियां का दम घुट रहा है। पर अब भी कभी किसी मदरसे में, किसी मरकज में, किसी लंगर में तो कभी किसी प्रभुत्व वाले नेता जी के यहां शादी के समारोह में इस एलार्म की अनसुनी हो ही रही है ।लगता है वायरस वाला यह पूरा का पूरा 2020 ही फार्मेट करना पड़ेगा।

चाणक्य नीति

कर्म करने और फल भोगने में आत्मा प्रायः एकाकी होती है, किंतु इसके अपवाद भी है। जैसे सन्तान द्वारा किए गए अपराध का फल माता-पिता को नैतिक दृष्टि में भोगना पड़ता है। ऐसे ही प्रजा द्वारा किए गए दुष्कर्मों का फल राजा को भुगतना पड़ता है। पत्नी द्वारा किये गए अविवेकपूर्ण कार्यों का दंड पति को भुगतना पड़ता है और शिष्य की मूर्खता से उसके गुरू को अपमानित होना पड़ता है।

काम की बात

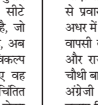

आपकी उम्र मायने नहीं रखती, यह बात मायने रखती है कि आप किस उम्र की सोच रखते है

एक सलाह

आप बुद्धिमान हो यह इच्छा है। लेकिन दूसरों को मूर्ख न समझे, यह उससे भी अच्छा है।

अध्यादेश से सामाजिक सम्मान हासिल होगा?

पिछले हफ्ते सरकार ने डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों को हमलों से बचाने के लिए एक अध्यादेश जारी कर दिया। इसके जरिए महामारी रोग अधिनियम में संशोधन कर दिया गया है। अध्यादेश के अनुसार अब स्वास्थ्यकर्मियों पर हमला एक संज्ञेय अपराध है। इसमें कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। मगर ये सवाल कायम है कि क्या इससे सचमुच स्वास्थ्यकर्मियों को अपेक्षित सुरक्षा और सामाजिक सम्मान हासिल हो जाएगा? मोटे तौर पर स्वास्थ्यकर्मियों के लिए सामाजिक सम्मान का मुद्दा उठाना अजीब-सा लगता है। आखिर आम धारणा यही है कि डॉक्टर समाज के सबसे सम्मानित पेशों में है। मगर ताजा अनुभव यह है कि डॉक्टर भगवान है कि मान्यता सिर्फतब तक होती है, जब तक वे अस्पताल में होते हैं। वरना, कोरोना जैसी महामारी के समय उनकी अपनी कॉलोनियों और हाउजिंस सोसाइटीज में जैसा व्यवहार हुआ है, उससे ये साफहो गया है कि डॉक्टरों को भगवान मानने जैसी बातें असल में पाखंड हैं। हमारा समाज बहुत से पूर्वाग्रहों से पीड़ित है और कोरोना जैसे मौकों पर उसके शिकार डॉक्टर भी बन जाते हैं। सवाल है कि इस सोच से डॉक्टरों को कैसे सुरक्षा मिलेगी? इसके लिए जिस सामाजिक शिक्षण की जरूरत है, उसका लगातार लोप हो जाता रहा है।

समाज में वैज्ञानिक सोच पर अंधविश्वास और निराधार मान्यताओं को लगातार प्रतिष्ठित किया जा रहा है। ऐसे में सिर्फकानून से स्वास्थ्यकर्मियों को सुरक्षा देने की बात छलावा साबित हो सकती है। बेशक डॉक्टर भी अपने पेशे को बदनाम करने के लिए दोषी हैं। प्राइवेट स्वास्थ्य व्यवस्था का व्यापारीकरण जिस तेजी से बढ़ा है, उससे इस पेशे की इज्जत घटी है। लेकिन इसका समाधान डॉक्टरों पर हमला नहीं है। बहरहाल, स्वास्थ्यकर्मियों की रक्षा के लिए एक विशेष कानून लाना पूरे देश में स्वास्थकर्मियों की पुरानी मांग रही है। डॉक्टरों पर हमले भारत में एक बड़ी समस्या है। लगभग एक साल पहले पूरे देश में इस तरह के हमलों के मामले काफी बढ़ गए थे, जिसके बाद देश में डॉक्टरों ने हड़ताल कर दी थी और आंदोलन भी किया था। डॉक्टरों ने सरकार से उनकी सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम करने की मांग की थी। अब ये मांग पूर हो गई है। मगर बाकी समस्याएं कायम हैं। स्वास्थ्यकर्मी सचमुच सुरक्षित और सम्मानित हों, इसके लिए इस पेशे से जुड़े लोगों को भी आत्ममंथन करना होगा और पूरे समाज को भी।

सिंधियाः मजबूर या मजबूत ?

ओमप्रकाश मेहता लेखक

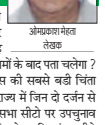

जिस तरह भगवान श्री कृष्ण ने द्वपर युग में महाभारत युद्व के दौरान अपने 'गीतोपदेश' में यह कहा था कि 'यदा यदा हि धर्मस्य' श्लोक के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया था कि ÷जब जब धर्म की हानि होगी, तब तब युग देवता का अवतरण होगा÷ ठीक उसी की तर्ज पर भारत देश व मध्यप्रदेश का राजनीतिक इतिहास गवाह है कि जब जब देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल कांग्रेस में 'राजनीतिक धर्म' की हानि हुई और अहंकार पनपा तब तब मध्यप्रदेश के सिंधिया परिवार ने नए रूप में अवतरित होकर उसे ठीक किया, इसकी शुरूआत आज से त्रैपन साल पहले (1967) में हुई जब ग्वालियर की राजमाता विजयराजे सिंधिया ने तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र द्वारा भरी सभा में उन्हे अपमानित करने पर रातों रात संविद (संयुक्त विधायक दल) का गठन कर डी पी मिश्र की सरकार गिरा दी थी, इस घटना के सत्ताईस साल बाद राजमात के बेटे स्वरू माधवराव सिंधिया ने 1995 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी वी नरसिंहराव के रवैये से खिन्न होकर कांग्रेस से अलग मध्यप्रदेश निकाल कांग्रेस नई पार्टी बना ली थी, बाद में मजबूर होकर कांग्रेस आलाकमान को माधवराव जी को मनाना पडा और वे फिर कांगेस में आए। इसके बाद इसी इतिहास को दोहराते हुए ढाई दशक बाद माधवराजी के सुपुत्र ज्योतिरादित्य को कांग्रेस में अपमान का घूट पीना पडा और वे अपने संगी समर्थको के साथ भाजपा मे आए और यहां कांग्रेस सरकार का तख्ता पलट दिया।

देश में जब रियासती राज्यों का जमाना था तब ग्वालियर रियासत को सबसे लोकप्रिय रियासत का दर्जा प्राप्त था, ग्वालियर रियासत के राजवंश अपने जनहितैषि कार्यो के कारण अपनी पुरी रियासत में वंदनीय था। बाद में रियासती प्रथा चाहे खत्म हो गई किन्तु सिंधिया वंश की लोकप्रियता में कोई कमी नही आई, और वही परम्परा? आज तक चली आ रही है। मध्यप्रदेश के मध्यभारत तथा मालवा क्षेत्र में आज भी सिंधिया वंशजो का ही वर्चस्च है, जिसका फायदा हर राजनीतिक दल उठाता आया जब राजमाताजी कांग्रेस छोड जनसंघ में चली गई तो जनसंघ का खतरा बढ गया और जब तक माधवराव जी कांग्रेस मे रहे, कांग्रेस की सरकारे बनती रही, यही स्थिति उनके बेटे ज्योतिरादित्य के साथ है, जिन्होने कांग्रेस की कमलनाथ सरकार को एक झटके में गिरवा दिया और शिवराज की सरकार बनवा दी।

पिछले दिनों मध्यप्रदेश में मंत्रियो को शपथ दिलाने का जो घटनाक्रम हुआ, उसी को लेकर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने ज्योतिरादित्य में को 'मजबूर सिंधिया' कहा था। यद्यपि मध्यप्रदेश के नए मंत्रीमंडल में सिंधिया गुट का चालीस फीसदी हिस्सा है, किन्तु यह स्वाभाविक ही है कि यह कांग्रेस को क्यों रूचेगा ? इसलिए कमलनाथ के इस व्यंग के जबाव में सिंधिया सर्मथको को यह कहना पडा कि 'मजबूर कौन है, यह उपचुनाव परिणामों के बाद पता चलेगा ?

आज कांग्रेस की सबसे बडी चिंता भी यही है कि राज्य में जिन दो दर्जन से अधिक विधानसभा सीटो पर उपचुनाव होना है, उनमे से अधिकांश सीटे ग्वालियर , चम्बल संभाग की है, जो सिंधिया के वर्चस्व वाला क्षेत्र है, अब कांग्रेस इस क्षेत्र में सिंधिया का विकल्प नही खोज पा रही है, इसलिए वह उपचुनाव के परिणामों को लेकर चिंतित है, जबकि भाजपा इन सीटो को लेकर सिंधिया के कारण आश्वस्त है।

यद्यपि वर्तमान में शिवराज जी व उनकी सरकार के सामने कोरोना से मजबूती से निपटने की चुनौती है, किन्तु इसके साथ ही सत्तारूढ दल में शुरू हुई असंतोष की खुसर पुसर को शांत करने और उपचुनावो को सुखद बनाने की भी चुनौती है। चूंकि शिवराज जी अनुभवी व सिद्वहस्त राजनेता है, इसीलिए कोई चिंता की आशंका नही है किन्तु फिर भी उन्हे हर तरफसे सतर्क तो रहना ही पडेगा ?

कोरोनाः भागवत और मोदी

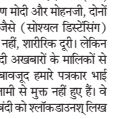

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

पिछले एक माह से मैं निरंतर याद दिला रहा हूं, चार बातों की। एक, तबलीगी मौलाना साद की गैर-जिम्मेदाराना हरकत के लिए देश के सारे मुसलमानों पर तोहमत नहीं लगाई जानी चाहिए। दूसरी, विषाणु से लड़ने में हमारे आयुर्वेदिक (हकीमी भी) घरेलु नुस्खों का प्रचार किया जाए और घर-घर में भेषज-होम (हवन) किया जाए। तीसरी, जो लोग, खासतौर से प्रवासी मजदूर, अभी तक अधर में लटके हुए हैं, उनकी घर वापसी का इंतजाम हमारी केंद्र और राज्यों की सरकारें करें। चौथी बात, कोरोना की लड़ाई में अंग्रेजी के अटपटे शब्दों की बजाय हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए।

मुझे खुशी है कि इन चारों बातों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब दो-टूक शब्दों में दोहराया है। कोई बात नहीं, देर आयद, दुरुस्त आयद! यदि इन बातों पर महीने भर पहले से ही अमल शुरू हो जाता तो भारत में कोरोना उतना भी नहीं फैलता, जितना कि वह अभी थोड़ा-बहुत फैला है। देश के 101 अफसर बुद्धिजीवियों ने घुमा-फिराकर मीडिया, भाजपा और सरकार पर तबलीगी जमात को लेकर सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप लगाया है। यह आरोप निराधार था लेकिन अब भागवत के बयान के बाद उनकी गलतफहमी दूर हो जानी चाहिए। कुछ टीवी चौनलों को संयम बरतने की बात तो मैं पहले ही कह चुका हूं। मोदी ने भी अपनी श्मन की बातश् में मुसलमानों के लिए अपनी बात बहुत अच्छे ढंग से कही है। उन्होंने कहा है कि रमजान के दिनों में इस बार घर में रहो और अल्लाह की इबादत जरा ज्यादा करो।

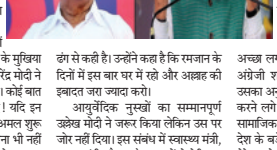

आयुर्वेदिक नुस्खों का सम्मानपूर्ण उल्लेख मोदी ने जरूर किया लेकिन उस पर जोर नहीं दिया। इस संबंध में स्वास्थ्य मंत्री, आयुष मंत्री और उनके अफसरों से मेरी बात बराबर हो रही है लेकिन उन्होंने बहुत देर कर दी है। उन्हें याद दिलाऊं कि 1994 में जब सूरत में प्लेग फैला तो मेरे आग्रह पर गुजरात के मुख्यमंत्री छबीलदास मेहता ने काढ़े और हवन-सामग्री के लाखों पूड़े बंटवाए थे। प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहराव ने उन्हें प्रोत्साहित किया था। अपने आपको भारतीय संस्कृति के योद्धा कहनेवाले संघी और भाजपाई इस मौके पर आगे क्यों नहीं आते?

प्रवासी छात्रों और मजदूरों की घर वापसी में केंद्र सरकार अड़ंगा नहीं लगा रही है, यह अच्छी बात है और मुझे यह भी अच्छा लगा कि कोरोना से संबंधित जिन अंग्रेजी शब्दों की मैंने हिंदी बताई थी, उसका अनुकरण मोदी और मोहनजी, दोनों करने लगे हैं, जैसे (सोश्यल डिस्टेंसिंग) सामाजिक दूरी नहीं, शारीरिक दूरी। लेकिन देश के बड़े हिंदी अखबारों के मालिकों से मेरे कहने के बावजूद हमारे पत्रकार भाई अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त नहीं हुए हैं। वे अभी भी तालाबंदी को श्लॉकडाउनश् लिख रहे हैं।

कोरोना से लड़ाई को कमजोर करते लोग

रमेश सर्राफ धमोरा, लेखक

राजस्थान के टोंक शहर के कसाइयों के मोहल्ले में गस्त कर रहे पुलिस के जवानों पर अचानक कुछ लोगों ने हमला कर दिया जिसमे तीन जवान गंभीर रूप से घायल हो गए है। जिनका अस्पताल में उपचार चल रहा है। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद शहर के नागफनी थाना क्षेत्र में कोरोना संक्रमित व्यक्ति के परिवार को क्वारंटीन करने के लिए पहुंची स्वास्थ्य विभाग व पुलिस की टीम पर महिलाओं सहित कुछ लोगों ने पथराव कर दिया। इस हमले में दो डाक्टर सहित चिकित्सा व पुलिस विभाग के कई लोग घायल हुये थे। हमला करने के आरोप में 10 पुरुष और 7 महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया गया है। इंदौर के टाटपट्टी बाखल में कोरोना पाजिटिव से संक्रमित के संपर्क में आए लोगों का पता लगाने के लिए गए पांच सदस्यीय चिकित्सा दल पर लोगों ने पत्थरबाजी कर दी जिसमे दो महिला डॉक्टर व कई चिकित्सा कर्मी घायल हो गये थे। घटना में शामिल कई लोगों को जेल भेजा गया है।

बिहार में मुंगेर के हजरतगंज इलाके में पुलिस, चिकित्सा कर्मियों की टीम पर लोगों ने पत्थरबाजी की। लोगों ने पुलिस और चिकित्सा कर्मियों पर उस समय हमला किया जब वे कोरोना वायरस संक्रमितों का नमूना लेने गए थे। पत्थरबाजी से पुलिस वाहनों को भारी नुकसान हुआ व कई घायल हुये। महाराष्ट्र के शोलापुर में दिल्ली जमात से लौटे लोगों की सूचना देने पर एक व्यक्ति की कथित रूप से पिटाई की गयी। घटनानुसार पिंपरी गांव के ग्रामसेवक ने तबलीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल होने वाले सात लोगों की जानकारी प्रशासन को दी थी और उनकी कोरोना वायरस की जांच कराने पर भी जोर दिया था। जिससे नाराज होकर ग्राम सेवक की पिटाई कर दी गयी।

हैदराबाद के सरकारी अस्पताल में कोरोना वायरस के संक्रमण की वजह से मरे 49 वर्षीय मरीज के रिश्तेदार ने ड्यूटी पर तैनात डॉक्टरों और अन्य कर्मियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हमला कर दिया। कर्नाटक के मंगलुरु के नयातारपू गांव में दो पुलिस कर्मियों और स्वास्थ्य कर्मी पर हमला करने के आरोप में चार लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। जब दो पुलिस जवान और स्वास्थ्य कर्मी गांव के घर में अलग रखे गए व्यक्ति को बिना किसी एहतियात के घूमने पर सवाल किया तो उसने उन पर हमला कर दिया। बेंगलुरु में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में कोरोना वायरस के संक्रमण के मद्देनजर सर्वे करने गए थे जहां पर उनके साथ बदसलूकी की गई। घटना की निंदा करते हुए स्वास्थ्य मंत्री बी श्रीरामुलु ने कहा है की डॉक्टर, नर्स, स्वास्थ्य कर्मी दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे हैं। उनकी इज्जत करें। उन पर हमला हुआ तो चुप नहीं बैठूंगा।

बिहार में मधुबनी जिले में, उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में, मुजफ्फरनगर में जब लॉकडाउन का पालन कराने की बात पर लागों ने पुलिस पर हमला कर उन्हे घायल कर दिया। आजकल देश के हर प्रदेशों में ऐसी घटनायें प्रतिदिन देखने को मिल रही हैं। इनमें से अधिकांश घटनाओं में दोषी लागों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में तो सरकारी कर्मचारियों के साथ बे वजह मारपीट करने वालों के खिलाफरासुका में केस दर्ज कर जेल भेजा जा रहा है। कोरोना वायरस से बचाने में दिनरात जुटे चिकित्सा कर्मियों व पुलिस बल पर हमला करने की घटनाओं की हर कहीं निंदा की जा रही है।

मुम्बई के बांद्रा क्षेत्र में अचानक हजारों लागों की भीड़ सडक पर आ जाती है। मुम्बई में कर्फ्यू लागू होने व पग-पग पर पुलिस बल की मौजूदगी के बावजूद हजारो की भीड़ एक जगह एकत्रित हो जाना सरकार की विफलता दर्शाता हैं। हालांकि पुलिस ने भीड़ को भड़का कर एक जगह इक्कठा करने के आरोप में एक टीवी पत्रकार, एक उत्तर भारतीय नेता सहित कई लोगों को हिरासत में लिया है। इससे पूर्व सूरत में सैकड़ो लोग अच्छा भोजन देने की मांग को लेकर सड़कों पर उतर जाते हैं जिन्हे बड़ी मुश्किल से पुलिस शांत कर पाई थी।

लाकडाउन के दो दिन बाद दिल्ली का नजारा तो पूरे देश ने देखा ही था। जहां लाखो लोग अपने घर जाने के लिये उत्तर प्रदेश सीमा पर एकत्रित हो गये थे। उस समय दिल्ली सरकार पर आरोप लगा था कि आप पार्टी के नेता व विधायको ने अफवाह फैला कर लोगों को घर भागने को मजबूर किया था। डीटीसी की बसों में लागों को भर भर कर उत्तर प्रदेश की सीमा तक छोडने की फोटो छपी थी। उस समय उत्तर प्रदेश सरकार ने तत्काल हजारों बसो की व्यवस्था कर लागों को उनके घरों तक भेजा था। फिर भी काफी लाग वहीं फंसे रह गये। उक्त प्रकरण में केजरीवाल सरकार को काफी बदनामी झेलनी पड़ी थी।

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से देश वासियों को बचाने के लिये जब केन्द्र सरकार ने पूरे देश में लाक डाउन लागू कर रखा था तब कई प्रदेशो में लाक डाउन को तोडने वाली ऐसी घटनाये लाक डाउन के मकसद को असफल ही करती है। लाकडाउन के समय ही केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों को कहा था कि उनके यहां प्रवासी व अन्य जरूरतमंद लागों को आवास, भोजन, पानी, चिकित्सा की पर्याप्त व्यवस्था करवायें। ताकि देश व्यापी लाकडाउन में फंसे लोगों को किसी तरह की परेशानी नहीं उठानी पड़े। मगर फिर भी राज्य सरकारों की लापरवाही के चलते देश भर में लाखों लागों ने लाकडाउन के नियमो का उल्लंघन कर अपने घरो की तरफ पलायन किया। यातायात के साधन बंद होने के उपरांत आज भी काफी संख्या में लोग पैदल ही अपने घरों की तरफ जा रहे हैं। उनको कहीं रोका नहीं जा रहा है। कई जिला प्रशासन तो जानबूझ कर लोगों को निकलने दे रहा है ताकि उनको लोगों के खाने रहने की व्यवस्था ना करनी पड़े।

इन दिनो कई जगह देखने को मिल रहा है कि लाकडाउन के दौरान दूसरे स्थानो से आये बहुत से लोग कोरोना संक्रमित पाये गये हैं। ऐसे लागों ने अपने घर पहुंचने के बाद अपनी जांच करवाना उचित नहीं समझा। जिस कारण उनके सम्पर्क में आने से उनके कई परिजन भी कोरोना संक्रमित हो जाते हैं। आज हर देशवासी को चाहिये की सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी का कड़ाई से पालन करें।

राजनीतिक दलों के नेताओं व जनप्रतिनिधियों को भी अपने घरो से बाहर निकलकर लोगों का मनोबल बढ़ाना चाहिये व जरूरतमंद लागों की खुलकर मदद करनी चाहिये। जनप्रतिनिधियों के सक्रिय होने से चिकित्सा कर्मियों व पुलिस दलों पर हमले की घटनायें भी बंद हो जायेगी। अपने साथ जनप्रतिनिधियों को पाकर लोगों का मनाबल बढ़ेगा। राजस्थान सरकार के उप मुख्यमंत्री सचिन पायलेट व पर्यटन मंत्री महाराजा विश्वेन्द्र सिंह प्रारम्भ से ही अपने निर्वाचन क्षेत्र में रहकर लागों की हर सम्भव मदद करने में लगे हैं। पर्यटन मंत्री महाराजा विश्वेन्द्र सिंह तो प्रतिदिन भरतपुर जिले के कई गांवो में जाकर लोगों से मिल कर उनकी समस्याओं का समधधान भी करवा रहें हैं। जिसकी सर्वत्र सराहना हो रही है। ऐसा ही अन्य जनप्रतिनिधियों को भी करना चाहिये। ताकि हर जगह व्यवस्था सुचारू बन सके।

माफ करना मित्रों! तुम मजदूर हो मजबूर भी

माही की गूंज, झाबुआ।

देश की प्रगति और विकास में जितना योगदान शासन, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों और राजनीतिज्ञों के अतिरिक्त अन्य लोगों का है। शायद उतना ही या उससे अधिक मजदूरों का भी है। परंतु अक्सर श्रेय सिर्फप्रभावी और चर्चित नाम अथवा पद ही होते और मजदूर जो बेचारा खून और पसीना एक कर राष्ट्र निर्माण में लगा रहता, उसका नाम कहीं आता तक नही। अंचल से लेकर देश की राजनीति में मजदूरों को मात्र वोट बैंक ही माना जाता इसीलिए तो मजदूर 21वीं सदी में भी मजबूर ही है। हमेशा से राजनीति का विषय रहा गरीब मजदूर वर्तमान में भी अपनी हालत पर आंसू बहा रहा है, किंतु राज करने वालों ने उनकी ओर प्रभावी कदम उठाकर उन्हें सम्पन्न बनाने के प्रयास नहीं किए। लॉकडाउन में कोरोना महामारी व नफरतों के बाद यदि कोई मुद्दा है तो वह है पलायन पर गए मजदूर। इतनी संख्या में यहां वहां भटकतें मजदूर प्रमाण है इस बात का कि आजादी के बाद शासन करने वालों ने उनके हितों में कितने कार्य ईमानदारी से किए।

कोरोना महामारी के इस दौर में अंचल से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कई मुद्दे गर्माए हुए है। नफरत इन दिनों सातवें आसमान तक पहुंच चुकी हैं, तो कोरोना को लेकर सभी वर्ग सरकार की ओर टकटकी लगाए हुए है। सरकार, शासन और प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन भी हो रहा है। बगैर यह जाने कि सरकारें क्या कर रही है। असम्मत नीतियों पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगा पाना, सवाल-जवाब नहीं करने की प्रवृत्ति हमें गुलामी की ओर धकेल रही है। इस पर चिंतन बाद में भी हो जाएगा। लेकिन सोशल मीडिया पर जागृत होने का दिखावा करने वाले इन दिनों नफरतों को खूब मसाला लगाकर परोस रहे है। अधिकांश समय सोशल मीडिया पर व्यतित करने वालों के पास करने को कुछ ओर है ही नहीं, ऐसा प्रतीत होता है। बेरोजगार यह लोग कुछ काम कर देश का नाम गौरवांवित करेंगे, इस पर भी यकीन नहीं होता। परंतु ऐसे स्वयंभू मजदूरों की समस्याओं से मुंह फेरे हुए है, जो इनकी मानसिकता दर्शाता है। जबकि इन लोगों में अधिकांश ऐसे है जिनके ऐशो आराम का जीवन इन मजदूरों पर ही निर्भर है।

बताते है कोरोना का दौर तो जनवरी के अंतिम सप्ताह में ही प्रारंभ हो चुका था, परंतु शायद राजनीति को इससे आवश्यक कुछ कार्य निपटाने थे और इससे निवृत्त होकर देश में कोरोना के विरूद्ध लड़ाई लॉकडाउन के रूप में प्रारंभ हुई। मजदूर वर्ग जो अल्प अथवा अशिक्षित होता इस महामारी की जानकारी से कोसों दूर था, इसीलिए एक दिवसीय लॉकडाउन से घबराया तक नहीं किंतु अचानक से 21 दिन के लॉकडाउन संबंधी कोरोना से पूर्व बड़ी विपदा उनके सामने आ खड़ी हुई। यह सत्य है कि कोरोना से निपटने के लिए देशवासियों के सामने लॉकडाउन ही एक मात्र विकल्प था। सत्ता से त्वरित की अपेक्षा तो झूठी दिलासा ही होती, परंतु कोरोना मजदूरों तक पहुंचता उससे पूर्व लॉकडाउन के प्रभावों ने मेहनत कर कमाने वालों के सामने कई समस्याएं पैदा कर दी थी। मजदूर हमेशा से ही बड़े शहरों में मजदूरी करने हेतु पलायन पर जाते है। सभी फैक्ट्री, निर्माण आदि बंद होते ही इनके रहने व खाने की समस्या सामने आने लगी। चूंकि बसें, ट्रेने भी बंद हो चुकी थी तो मेहनतकश ईमानदारी की कमाई खाने वाले इन लोगों में से कईयों ने पैदल अपने घरों की ओर कूच करना प्रारंभ कर दिया, बजाय सत्ता से उम्मीदें लगाने के। फिर भी कई महिलाएं व मजदूर ऐसे थे, जो पैदल सफर तय करने में असमर्थ थे। इन असमर्थ लोगों के लिये कई समर्थों को भी घर लौटने की योजना पर विराम देना ही पड़ा। बड़ी संख्या में पलायन पर अन्यत्र गए मजदूरों पर राजनीति प्रारंभ हुई तो कई लोगों ने पलायन पर फंसे मजदूरों के खाने, रहने व घर पहुंचाने आदि की व्यवस्था के विपरित इन्हें वहीं रहने संबंधी अपना पक्ष रख दिया। मजदूरों के लौटने से कोरोना फैलने की संभावना थी किंतु पलायन पर गए मजदूरों के सामने भूखे मरने का संकट भी गहराता जा रहा था। राजनीति भी अंततः इन मजदूरों को लाने के पक्ष में खड़ी हो गई। मजदूरों को लाने का दबाव सत्ता पर बढ़ने लगा था, लेकिन इन मजदूरों से पूर्व सत्ता को लॉकडाउन में फंसे विद्यार्थियों की चिंता हुई। चिंता होना स्वभाविक भी थी, इसीलिये सत्ता ने त्वरित निर्णय लेते हुए पहले पढाई करने गए सम्पन्न लोगों के बच्चों उर्फविद्यार्थियों को लाने की पहल की और कई जगहों पर वातानुकूलित बसों तक में इन विद्यार्थियों को अपने घर तक पहुंचाया। विद्यार्थियों के लाने की व्यवस्था में सोशल डिस्टेंसिंग को भी प्राथमिकता दी गई। भोजन भी उनको उच्च गुणवक्ता युक्त कराया गया तो मजदूरो पर संशय व राजनीति चलती रही। अत्यधिक दबाव के चलते सत्ता झूकी और मजदूरों को लाने के प्रयास तेज हुए।

प्रदेश की बात करें तो विभिन्न हिस्सों से पलायन पर गए गरीब मजदूरों को जब सत्ता ने वापसी कराई तो सोशल डिस्टेंसिंग की स्थिति दयनीय थी। नियमों का उल्लंघन ही नही अपितु उन्हें दिया जाने वाला भोजन गुणवत्ता युक्त नहीं कहा जा सकता। राजनीति और मीडिया जगत लगातार मजदूरों की स्थिति से सत्ता को अवगत कराता रहा, मजदूरों के लिये लड़ाई लड़ता रहा, सत्ता झूकी भी किंतु व्यवस्थाएं उच्च स्तर की नहीं करा पाई। प्रदेश का झाबुआ जिला ही नहीं अपितु आगर मालवा में आए मजदूरों की जो तस्वीरें आई, वह काफी दयनीय है। इससे पूर्व लॉकडाउन में हमेशा वोट बैंक माने जाने वाले गरीब, असहाय, मजदूर कई किमी तक पैदल चलते रहे, भूखमरी तक का सामना कर लिया तो पैदल लौटते समय काल कलवित भी हो गए। फिर भी वापसी में प्रभावियों और सम्पन्न वर्ग को ही प्राथमिकता मिली। मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ने वाले इनकी दुखद तस्वीरें देख माफकरना मित्रों तुम मजदूर हो और मजबूर भी, कहने तक ही सीमित रह गए।

माहे रमजान बहुत मुबारक महीना

रहमत ,मगफिरत पाने व दोजख़ की आग से निजात पाने का जरिया

अल्ताफ मंसूरी

रमजानुल मुबारक का महीना मुसलमानों के लिए अल्लाह तआला का एक बहुत ही बड़ा इनाम है। इस महीने में अल्लाह अपनी अजीम शान से हर एक नेकी के बदले 70 नेकी का सवाब आता करता है । इस माह में शैतान कैद कर लिया जाता है।

नबी करीम मोहम्मद स .अ .स .ने रमजान के बारे में फरमाया कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है ,जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है , इसमें एक रात शबे कद्र है, जो हजार महीनों से बढ़कर है। अल्लाह तआला ने रमजान के रोजे को फर्ज फरमाया, और उसके रात की इबादत को सवाब की चीज बनाया है। यहां महीना सब्र का है, और सब्र का बदला जन्नत है। और यहां महीना हमदर्दी , भाईचारा, नेक आमाल, बुराई से निजात, नफस पर काबू करने का है । साथ ही गुनाहों से माफी मांग अल्लाह को राजी करने का है।रमजान के महीने के रोजे के तीन हिस्से किए गए हैं पहला रहमत का ,दूसरा हिस्सा मगफिरत का आखरी हिस्सा दोजख की आग से निजात का है ।

रोजे का बयान

हदीस शरीफ में रोजे का बड़ा सवाब बताया गया है अल्लाह तआला के पास रोजदार का बड़ा मर्तबा है प्यारे नबी मोहम्मद स अ स ने फरमाया कि जिस ने रमजान के रोजे सिर्फ

अल्लाह तआला के वास्ते सवाब समझ कर रखें तो उसके अगले पिछले तमाम गुनाह बख्श दिए जाएंगे आपने फरमाया के रोजेदार के मुंह की महक अल्लाह ताला को सभी खुशबू से ज्यादा प्यारी है कयामत के दिन रोजे का बहुत अधिक सवाब मिलेगा।

रोजे रखने वाले को केवल भूखा रहना ही काफी नहीं है बल्कि इसके साथ अपने हर नफ्स पर काबू रखना भी जरूरी है। रोजदार गीबत यानी लोगों की बुराई, चुगल खोरी से दूर रहे, अपनी निगाह की हिफाजत करें, यानी किसी को गलत निगाह से ना देखे , ना ही बुरी व गंदी चीजों को देखें । अपनी जबान की भी हिफाजत करें, झूठ बकवास गाली बद जबानी से बचे। कोई लड़ाई करे तो उससे कह दे कि मेरा रोजा है ।एक अहम चीज जिसका रोजदार को ए हतियात जरूरी है,वह है कान की हिफाजत है। हर मकरूह व बुरे बोल की तरफ कान लगाना और सुनना नाजायज है।

इसी तरह रोजेदार को अपने हाथो से कोई बूरा काम नहीं करना चाहिए साथ ही पैरो को भी नाजायज गलत रास्ते पर जाने से रोकना है और पेट को भी सेहरी के बाद से इफ्तार तक हर चीज से महफूज रखना है।रोजदार को अपनी नियत साफ रखना चाहिए एवं इबादत,दुआ,माफी, नेक आमाल करते रहना चाहिए। रोजदार को रोजा इफ्तार हलाल की कमाई से करना चाहिए।

सहरी खाना सुन्नत है ।मोहम्मद स. अ. स. ने फरमाया कि सहरी खाया करो इसमें बरकत है ।एक हदीस में इरशाद है कि सहरी खा कर रोजें पर कुव्वत हासिल करोस

बेशक रमजान में रोजदार रोजे रखकर अपने जिस्म व किरदार को पाक साफ कर अल्लाह की राह में अल्लाह की रजा के लिए नेक माल भी खर्च करते हैं।

खास गुजारिश

कोरोना बवाल के चलते आप सभी मुस्लिम भाइयों से गुजारिश है कि सभी इबादत है घर में रहकर करें। सब्र से काम ले। लाक डाउन के नियमों का पालन करें । प्रशासन को सहयोग करें।

कोरोना महामारी और ग्रामीण भारत

योगेश कुमार गोयल

कोरोना इस समय पूरी दुनिया में कहर बरपा रहा है। इससे दुनियाभर में दो लाख दस हजार से अधिक लोग मौत के मुंह में समा चुके हैं। भारत में भले ही कोरोना संक्रमितों और इससे होने वाली मौतों की संख्या अभीतक दूसरे देशों के मुकाबले बेहद कम है लेकिन जिस प्रकार देश के अलग-अलग हिस्सों में कोरोना संक्रमितों की संख्या तेजी से बढ़ी, वह चिंतनीय है। कोरोना संक्रमण को लेकर सर्वाधिक चिंता देश के ग्रामीण इलाकों को लेकर है क्योंकि यदि देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण का प्रसार हुआ तो उससे निपटना सबसे कठिन चुनौती होगी। दरअसल ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का आलम किसी से छिपा नहीं है। वहां औसतन 26 हजार लोगों की विशाल आबादी पर सिर्फएक सरकारी डॉक्टर इलाज के लिए उपलब्ध है, वह भी उन परिस्थितियों में, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के अस्पतालों में मरीजों के लिए प्रायः जरूरी सुविधाएं ही उपलब्ध नहीं होती। इसलिए काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) सहित तमाम चिकित्सा विशेषज्ञों ने आशंका जताई थी कि अगर यह महामारी तेजी से गांवों में फैल गई तो देश के लिए उससे निपटना असंभव होगा।

एक ओर जहां उत्कृष्ट और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं से लैस अमेरिका, इंग्लैंड, इटली, स्पेन, फ्रांस जैसे देश कोरोना के प्रकोप के समक्ष लाचार हैं और वहां भी आईसीयू, वेंटिलेटर, बिस्तर इत्यादि कम पड़ रहे हैं, वहीं स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में भारत की स्थिति काफी कमजोर है। स्वास्थ्य सेवाओं में 102वें स्थान पर आनेवाले सवा अरब से अधिक आबादी वाले भारत की तो बहुत बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, जहां स्वास्थ्य ढाचा बुरी तरह चरमराया हुआ है। स्वास्थ्य सेवाओं पर बहुत कम खर्च करने वाले देशों में से भारत भी एक है, जहां जीडीपी का एक प्रतिशत से कुछ ज्यादा हिस्सा ही खर्च किया जाता है, जबकि कई देशों में यह 10 फीसदी तक होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के शीर्ष इमरजेंसी एक्सपर्ट माइक रायन का कहना है कि कोरोना से फैली बीमारी से निपटने के लिए कोई भी देश केवल लॉकडाउन के भरोसे नहीं रह सकता बल्कि उनके लिए सबसे जरूरी है कि वे सबसे पहले कोरोना से बुरी तरह बीमार और संक्रमित लोगों का पता करें। यह भी पता करें कि उनके सम्पर्क में कौन-कौन आया और फिर उन सभी को आइसोलेट कर उनका ठीक से इलाज किया जाए। भारत के संदर्भ में सबसे बड़ा सवाल यही है कि गांवों की बेहद सघन आबादी में ऐसे लोगों की पहचान किस हद तक संभव है? अगर गांवों में कोरोना महामारी बनकर फैला तो वहां संक्रमितों की पहचान और उनके सही आंकड़े जुटाना अत्यंत दुष्कर होगा। यह चिंता की स्थिति इसलिए भी है क्योंकि कोरोना संक्रमित एक व्यक्ति भी बड़ी तेजी से हजारों व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है। यही कारण है कि समय रहते कोरोना की चेन तोड़ने के लिए 40 दिनों की सामाजिक दूरी के सिद्धांत को चुना गया।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ना भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। हालांकि फिलहाल राहत की बात यही है कि कोरोना संक्रमण की वृद्धि दर में कमी दर्ज की जा रही है लेकिन कुछ दिनों पहले आई आईसीएमआर की उस रिपोर्ट को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि अगर सबकुछ ठीक रहा तो भी दिल्ली में कोरोना संक्रमण के 15 लाख तथा मुम्बई, कोलकाता, बेंगलुरू में 5-5 लाख मामले सामने आ सकते हैं। आईसीएमआर का मानना है कि सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) से कोरोना महामारी से काफी हद तक बचा जा सकता है और इससे कोरोना के मामलों में 60 से 89 फीसदी तक कमी आ सकती है। कई अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों का भी दावा है कि मई माह तक भारत में संक्रमितों की संख्या 1 से 13 लाख तक हो सकती है और ऐसी स्थिति से निपटने लिए भारत में मौजूदा मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर और मेडिकल उपकरणों की संख्या बेहद कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हालांकि कोरोना के प्रसार को रोकने के लिए भारत द्वारा किए जा रहे प्रयासों को बार-बार सराहा है लेकिन साथ ही यह भी कहा है कि कोरोना को परास्त करने के लिए लॉकडाउन करने से ही काम नहीं चलेगा बल्कि जनस्वास्थ्य के भी पर्याप्त कदम उठाने होंगे अन्यथा यह बीमारी फिर से पनप सकती है।

अगर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना महामारी फैलती है तो उसके उपचार के लिए हमारा स्वास्थ्य ढांचा कितना मजबूत है, उसपर नजर डालना भी जरूरी है। 'नेशनल हैल्थ प्रोफाइल 2019' की रिपोर्ट के मुताबिक देश में कुल 26 हजार अस्पताल हैं, जिनमें से हालांकि ग्रामीण भारत में ही करीब 21 हजार अस्पताल हैं लेकिन इनकी हालत संतोषजनक नहीं है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यदि ग्रामीण भारत की मात्र 0.03 फीसदी आबादी को भी जरूरत पड़े तो सरकारी अस्पतालों में उसके लिए बिस्तर उपलब्ध नहीं होंगे। देशभर के सरकारी अस्पतालों में सात लाख से अधिक बिस्तर हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में बसने वाली देश की दो तिहाई आबादी के लिए इन बिस्तरों की संख्या महज 2.6 लाख है। अगर निजी अस्पतालों, क्लीनिक, डायग्नोस्टिक सेंटर और कम्युनिटी सेंटर को भी शामिल कर लें तो कुल बिस्तरों की संख्या करीब 10 लाख ही होती है। देश की बहुत बड़ी आबादी के लिहाज से यह बेहद कम है। हालांकि अस्पतालों में बिस्तरों की उपलब्धता का यह संकट केवल भारत की ही समस्या नहीं है बल्कि चीन, फ्रांस, दक्षिण कोरिया, इटली, अमेरिका इत्यादि विकसित देश भी इस समस्या से जूझते दिखाई दिए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक प्रत्येक एक हजार नागरिकों पर अमेरिका में 2.8, इटली में 3.4, चीन में 4.2, फ्रांस में 6.5 तथा दक्षिण कोरिया में 11.5 बिस्तर उपलब्ध हैं। दूसरी ओर भारत में प्रत्येक दस हजार लोगों पर करीब छह अर्थात् 1700 मरीजों पर सिर्फ एक बिस्तर ही उपलब्ध हैं। ग्रामीण अंचलों में स्थिति काफी खराब है, जहां करीब 3100 मरीजों पर महज एक बिस्तर उपलब्ध है।

सरकारी अस्पतालों की स्थिति देखें तो देशभर में करीब 26 हजार सरकारी अस्पताल हैं अर्थात् प्रत्येक 47 हजार लोगों पर मात्र एक सरकारी अस्पताल है। 'नेशनल हैल्थ प्रोफाइल 2019' की रिपोर्ट के मुताबिक सेना और रेलवे के अस्पतालों को मिलाकर देशभर में कुल 32 हजार सरकारी अस्पताल हैं। हालांकि निजी अस्पतालों की संख्या 70 हजार के आसपास है। अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश जैसे अपेक्षाकृत छोटे राज्यों में एक लाख आबादी पर क्रमशः 16 व 12 सरकारी अस्पताल हैं लेकिन देश की कुल 21 फीसदी आबादी वाले राज्यों दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात तथा आंध्र प्रदेश में अस्पतालों की संख्या प्रति एक लाख लोगों पर एक से भी कम है। दिल्ली में 1.54 लाख लोगों पर एक, महाराष्ट्र में औसतन 1.6 लाख लोगों पर एक, मध्य प्रदेश में 1.56 लाख तथा छत्तीसगढ़ में 1.19 लाख लोगों पर एक-एक, गुजरात में 1.37 लाख और आंध्र प्रदेश में प्रत्येक दो लाख लोगों पर एक-एक अस्पताल हैं। अरूणाचल प्रदेश तथा हिमाचल में क्रमशः 6300 और 8570 लोगों पर एक-एक अस्पताल उपलब्ध हैं। सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की उपलब्धता देखें तो देशभर में करीब 1.17 लाख डॉक्टर हैं अर्थात् लगभग 10700 लोगों पर एक डॉक्टर ही उपलब्ध है। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के नियमानुसार प्र्रत्येक एक हजार मरीजों पर एक डॉक्टर होना चाहिए लेकिन ग्रामीण भारत में तो यह औसत 26 हजार लोगों पर एक डॉक्टर का ही है।

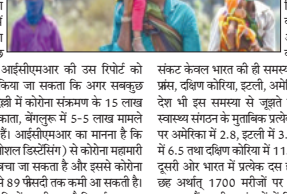

कोरोना संक्रमण बढ़ने की स्थिति में भारत में आईसीयू और वेंटिलेटर की उपलब्धता देखें तो यहां भी निराशा की ही स्थिति है। इंडियन सोसाइटी ऑफ क्रिटिकल केयर के अनुसार देशभर में करीब 70 हजार आईसीयू बेड और 40 हजार वेंटिलेटर उपलब्ध हैं लेकिन इनमें भी केवल दस फीसदी ही खाली बताए जा रहे हैं। हालांकि कई कम्पनियां बड़े स्तर पर वेंटिलेटर्स का निर्माण कर रही हैं। कोरोना से संक्रमित मरीजों के इलाज में वेंटिलेटर की सबसे अहम भूमिका होती है। सांस लेने में ज्यादा परेशानी होने पर वेंटिलेटर ही एकमात्र सहारा होते हैं। इसे ब्रीदिंग मशीन, रेस्पिरेटर तथा मैकेनिकल वेंटिलेटर जैसे नामों से भी जाना जाता है। एक मध्यम स्तर के वेंटिलेटर की कीमत करीब साढ़े चार लाख रुपये जबकि मध्यम स्तर के आयातित वेंटिलेटर की कीमत सात लाख के करीब होती है। उच्च गुणवत्ता वाले आयातित वेंटिलेटर की कीमत करीब 12 लाख रुपये होती है। कोरोना के करीब पांच फीसदी मरीजों को सांस लेने के लिए वेंटिलेटर की जरूरत पड़ती है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले दिनों में भारत में दस गुना ज्यादा वेंटिलेटरों की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में बड़ी संख्या में वेंटिलेटर बनाए जाने की दिशा में युद्धस्तर पर प्रयास शुरू कर दिए गए हैं और बिस्तरों की संख्या बढ़ाने के लिए भी विभिन्न इमारतों में इसके लिए प्रबंध शुरू कर दिए गए हैं। बहरहाल, सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि इन तमाम प्रयासों के बावजूद ग्रामीण भारत में कोरोना संक्रमण फैलने की दशा में हम उससे निबटने में कितने सक्षम होंगे?

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

लॉकडाउन में किसानों की दिक्कतें

कई आर्थिक गतिविधियों को लॉकडाउन से छूट मिल गई है। इनमें सबसे खास खेती से जुड़ी गतिविधियां हैं। सरकारी अधिसूचना के मुताबिक लगभग सभी कृषि गतिविधियां अब छूट के दायरे में हैं। इसका मतलब यह हुआ कि खेती लगभग पूरी तरह निर्बाध ढंग से की जा सकती है। लेकिन ऐसा सचमुच होने लगा है या निकट भविष्य में हो पाएगा, इसको लेकर संदेह है। आरंभिक खबरों से कई दिक्कतों का संकेत मिला है। लॉकडाउन लागू होने के बाद से किसानों को तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। अधिकतर किसान इस समय तैयार फसल को नहीं बेच नहीं पाए। इससे उनमें मायूसी फैली। महाराष्ट्र के नाशिक और इसके आसपास के क्षेत्र मे अंगूर की खेती खूब होती है। इन दिनों अंगूर खेतों मे पक कर तैयार है। किसानों की परेशानी यह है कि इसे तोड़ दें तो बेचें कहां? अगर खेतों में इसे दिया जाय, तो फसल का बर्बाद होना तय है। अधिकांश किसानों के पास अंगूर बचाने के लिए कोल्ड स्टोरेज का सहारा भी नहीं है, क्योंकि अधिकतर कोल्ड स्टोरेज पहले से ही भरे पड़े हैं। बात सिर्फअंगूर तक सीमित नहीं है। बल्कि केला, संतरा, आम और अनार जैसे फल उगाने वाले किसान भी पिछले एक महीने में परेशान रहे प्याज की खेती करने वाले किसान भी मुसीबत में हैं। किसानों के मुताबिक जो प्याज लॉकडाउन के पहले 1800 से 2000 रुपए क्विंटल बिक रहा था, वह लॉकडाउन के दौरान 400 से 800 रुपए के आस-पास बिकता रहा है। अब मिली छूट से ऐसे किसानों को कितनी राहत मिलेगी, अभी तय नहीं है क्योंकि अंतर-राज्यीय परिवहन जैसी दिक्कतें कायम हैं। आम तौर पर नाशिक के अंगूर की मांग देश के दूसरे राज्यों और विदेशों से आती है। फिलहाल स्थानीय बाजार खुलने की आशा है, जो अभी तक बंद था। किसानों का कहना है कि कोरोना वायरस के बावजूद नाशिक के अंगूर की मांग बरकरार थी, लेकिन लॉकडाउन ने सप्लाई चेन को तोड़ दिया है। किसानों को अपनी उत्पाद दूर दराज के इलाके में भेजने के लिए ट्रांसपोर्ट की भारी समस्या आ रही है। यानी मांग होने के बावजूद सप्लाई नहीं हो पा रही है। शहरों मे लोगों को सब्जियों और फलों की कमी हो रही है जबकि खेतों मे फसल बर्बाद हो रहा है।

अपनी बेटी को नाना-नानी के पास छोड़कर कर सेवा कर रही कोरोना योद्धा नीलिमा

माही की गूंज, बमनाला। कोरोना वायरस के संक्रमण के भय से जहां लोग घरों से बाहर आने में डर रहे है। वहीं स्वास्थ्य विभाग अपने परिवार व जान की परवाह किए बगैर अपने फर्ज को अंजाम देने में लगा हुआ है। बड़वाह स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ एक स्टाफ नर्स की भी कुछ ऐसी ही कहानी सामने आ रही है। वे कोरोना से छिड़ी इस जंग में अपनी छोटी बच्ची को उसके नाना-नानी के पास छोड़कर लोगों की सेवा करने में जुटी है। कोरोना के विरूद्ध जंग के ये वास्तविक जीवन के हीरों है, जो बच्ची की परवाह किए बगैर सेवा कार्य में जुट गई है।

बड़वाह में स्वास्थ विभाग में स्टाफ नर्स के पद पर पदस्थ श्रीमती निलीमा दसोंदी मरीजों की सेवा में निरंतर लगी हुई है। कोरोना संक्रमण के कारण वे अपने बच्ची को दूर रखकर निरंतर सेवा कर रही है। उन्होंने अपनी बच्ची को बमनाला में ही उनके नाना-नानी के पास छोड़ा दिया है। श्रीमती दसोंदी बताती है कि संक्रमण के इस दौर में स्टॉफ नर्स की सेवा में रहकर अपने बच्ची से नहीं मिल पाना बड़ा ही दुःखद है। फिर भी अपनी बच्ची को दूर से ही हाय, हैलों करके चले आने पर क्या बितती, यह एक मां ही समझ सकती है। बच्ची को मां की याद आने पर वे विडियो कान्फ्रेसिंग कर बात कर लेती है। जिससे उसे लगता है कि मां मेरे पास ही है। हमारे लिए मरीजों की सेवा करना चुनौतिभरा है। हम पर जो जिम्मेदारी आई है, वो हमारे लिए बड़ी है। कुछ समय के बाद सब ठीक होगा, लेकिन फिलहाल हमारे लिए सेवा धर्म का पालन करना ही पहली प्राथमिकता है।

कोरोना पॉजिटिव मरीजों के मनोरंजन के लिए की गई है व्यवस्था

माही की गूंज, खण्डवा। सिविल सर्जन डॉ. ओ.पी. जुगतावत ने बताया कि जिला अस्पताल परिसर में स्थापित कोविड केयर सेंटर के आईसोलेशन वार्ड में कोरोना पॉजिटिव मरीजों को भर्ती किया गया है। इन मरीजों के मनोरंजन के लिए वार्ड में ही एलईडी टी.वी., केरम बोर्ड, शतरंज जैसे साधन उपलब्ध कराये गये है। इसके अलावा मरीजों को पढ़ने के लिए समाचार पत्र पत्रिकाओं की भी व्यवस्था की गई है।

कलेक्टर ने दुकानदारों से चर्चा कर ली जानकारी दुकानें खोलने के संबंध में संशोधित आदेश जारी

माही की गूंज, खण्डवा।

कलेक्टर श्रीमती तन्वी सुन्द्रियाल ने सोमवार को शहर के विभिन्न इलाकों में लॉकडाउन आदेश में छूट के बाद खोली गई दुकानों में जाकर दुकानदारों से चर्चा की और उनकी समस्याएं जानी। इस दौरान उन्होंने दुकानदारों से इस बात के लिए सुझाव भी मांगे कि दुकान कब से कब तक खुलेंगी ठीक रहेगा। उन्होंने दुकानदारों द्वारा दुकान पर सोशल डिस्टेंसिंग के लिए की गई व्यवस्थाएं भी देखी। दुकानदारों ने इस दौरान उन्हें बताया कि दुकान के काउन्टर पर सेनेटाइजर व हाथ धोने के लिए साबुन व पानी की व्यवस्था की गई है। कलेक्टर श्रीमती सुन्द्रियाल ने इस दौरान ऑटो पार्ट्स, लाईटिंग, कृषि सामग्री विक्रय, सीमेंट जैसे विभिन्न व्यवसायों से जुड़े प्रतिष्ठानों पर जाकर दुकानदारों से विस्तृत चर्चा कर सुझाव मांगे।

अपर जिला दण्डाधिकारी श्रीमती नंदा भलावे कुशरे द्वारा जारी संशोधित आदेश अनुसार खण्डवा शहर के अतिरिक्त अन्य नगरीय निकायों में प्रतिबंध पूर्ववत जारी रखने के आदेश दिए गए है। जारी आदेश अनुसार पंधाना शहर स्थित मुख्य बाजार क्षेत्र जिसमें बस स्टेशन से गांधी चौक तक स्थित अत्यावश्यक सेवाओं की दुकानों को छोड़कर सारी दुकानें बंद रहेंगी। मुख्य बाजार मार्ग पर स्थित सब्जी की दुकानें वर्तमान में चालू व्यवस्था अनुसार बस स्टेशन के पीछे स्थित ग्राउण्ड पर लगेंगी। साप्ताहिक हाट बाजार नही लगेंगे। बोरगांव में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित बाजार एवं बाघेश्वरी चौक से लेकर सहकारी समिति तक स्थित अत्यावश्यक सेवाओं की दुकानों को छोडकर सारी दुकाने बंद रहेगी।

हरसूद शहर स्थित मुख्य बाजार क्षेत्र जिसमें हरसूद शहर का मुख्य मार्ग तथा सडियापानी रोड पर स्थित अत्यावश्यक सेवाओं की दुकानों को छोड़कर सारी दुकानें बंद रहेगी। मुख्य बाजार मार्ग पर स्थित सब्जी की दुकानें वर्तमान में चालू व्यवस्था अनुसार फ्टाका मार्केट ग्राउण्ड पर लगेंगी। साप्ताहिक हाट बाजार नही लगेंगे। अनुविभाग पुनासा अंतर्गत मूंदी नगरीय क्षेत्र में मुख्य बाजार बंद रहेगा। बस स्टेशन से माता चौक तक आवश्यक सेवाओं के अलावा अन्य दुकानें बंद रहेंगी। इसी तरह ओंकारेश्वर में पुराने बस स्टेण्ड से जेपी चौक, पुराना बस स्टेंड से पुराना नगर पालिक परिषद, बड़ा चौक से ओंकारेश्वर मंदिर तक, गजानंद आश्रम से ममलेश्वर मंदिर तक, गजानंद आश्रम से झूला पुल तक, मुख्य बाजार क्षेत्र होने से केवल अत्यावश्यक सेवाएं ही अनुमत होंगी।

साप्ताहिक हाट बाजार बंद रहेंगे

माही की गूंज, खण्डवा। अनुविभागीय दण्डाधिकारी हरसूद डॉ. परीक्षित झाडे द्वारा पूर्व में जारी प्रतिबंधात्मक आदेश में कुछ अतिरिक्त छूट दी गई है। जारी आदेश अनुसार खालवा, पटाजन, आशापुर, खारकलां, रोशनी, खेडी, किल्लौद में अत्यावश्यक सेवाओं जैसे कि किराना, मेडिकल स्टोर्स, नर्सिंग होम, दूध, फ्ल सब्जियों की दुकाने, कृषि बीज उपकरणों की दुकानें प्रातः 6 से दोपहर 1 बजे तक खोली जा सकेगी। इसके अतिरिक्त अन्य दुकानें हर दूसरे दिन प्रातः 6 से दोपहर 1 बजे तक खोली जा सकेगी। सभी साप्ताहिक हाट बाजार आगामी आदेश तक बंद रहेंगे।

एसडीएम हरसूद डॉ. झाडे ने बताया कि हरसूद शहर स्थित मुख्य बाजार क्षेत्र जिसमें मुख्य मार्ग तथा सडियापानी रोड स्थित अत्यावश्यक सेवाओं जैसे कि किराना, दवा, नर्सिंग होम, दूध, फ्ल सब्जियों की दुकानें प्रातः 6 से दोपहर 12 बजे तक पूर्वानुसार खुली रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी अन्य दुकानें आगामी आदेश तक बंद रहेंगी। सब्जी फ्ल की दुकानें वर्तमान में चालू व्यवस्था अनुसार फ्टाखा बाजार में ही लगेंगी। उन्होंने बताया कि हरसूद नगरीय क्षेत्र के मुख्य बाजार को छोडकर अन्य वार्डो की सभी दुकानें खोली जा सकेंगी। नगरीय क्षेत्र अंतर्गत लगने वाले रविवार व सोमवार के साप्ताहिक हाट बाजार आगामी आदेश तक बंद रहेंगे। उन्होंने बताया कि अनुविभाग हरसूद की भौगोलिक सीमा में सभी मॉल, सिनेमाघर, जिम, व्यायामशाला, होटल, रेस्टोरेंट, स्वीमिंग पूल, चाय, पान की दुकानें किसी भी प्रकार के खाद्य पदार्थ के हाथ ठेले, अन्य वाहन , चौपाटी क्षेत्र, गन्ना सहित अन्य ज्यूस की दुकानें, हाथ ठेले, ब्यूटी पार्लर, हेयर कटिंग सैलून, बार, शराब की दुकानें पूर्ववत प्रतिबंधित रहेंगी। सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठान जिन्हें खोलने की छूट उपरोक्तानुसार दी गई है, उनमें कोरोना वायरस से संक्रमण से बचाव को दृष्टिगत रखते हुए सभी उपाय यथा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन, मास्क पहनने की अनिवार्यता, सेनिटाइजेशन, साफसफाई आदि की जिम्मेदारी प्रतिष्ठान संचालक की होगी। यदि यह नही पाया जाता है तो दुकाने बिना किसी सुनवाई के वहीं पर सील कर दी जायेगी तथा भादवि की धारा 188, 269, 270 व महामारी अधिनियम राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत कार्यवाही की जायेगी। अनुभाग हरसूद की समस्त सीमा क्षेत्र के भीतर लॉकडाउन की आदेश के अंतर्गत प्रतिबंधों में उपरोक्तानुसार छूट दी जाती है।

मंडला में ओला वृष्टि से मची भारी तबाही, घरों की छतें, कारें हुई क्षतिग्रस्त

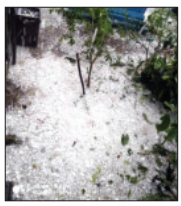

माही की गूंज, खरगोन/मंडला। 27अप्रैल को मंडला जिले में हुई अभूतपूर्व ओला वृष्टि ने क्षेत्र में भारी तबाही मचाई है। प्रत्यक्ष दर्शियों का दावा है कि जो ओले गिरे है उतने भारी और आकार में बड़े ओले कभी देखने और सुनने में नहीं आए। तेज वर्षा के साथ गिरे विशाल आकार के ओलों ने खपरैल की छतों को तहस-नहस कर दिया। वहीं पक्के मकानों की छतों पर रखी पानी की टंकियों में बड़े बड़े छेद हो गए, सड़कों पर खड़ी कारों के बोनट और छतों पर सैकड़ों डेन्ट हो गए। तेज हवा से कई पैड़ सड़कों और वहां खड़ी बसों पर धराशाई हो गए। कई पक्षी और बंदरों के मरने की भी खबरें हैं। इस प्राकृतिक प्रकोप के फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हैं। छत्तीसगढ़ में भी भारी ओला वृष्टि की खबरें हैं।

एक ही समय में अपने-अपने घरों में की वंदना प्रार्थना

माही की गूंज,बमनाला। 27 अप्रैल को विद्या प्रतिष्ठान मालवा प्रांत की योजना अनुसार प्रातः 11 बजे विद्या भारती के सारे परिवारों में जिसमें की आचार्य परिवार, अभिभावक गण, समिति सदस्य तथा पूर्व छात्र सम्मिलित हैं, ने अपने-अपने घरों पर प्रांत द्वारा निर्धारित वंदना प्रार्थना को अपने परिवारों के साथ संपन्न किया। इस अवसर पर सरस्वती शिशुमन्दिर बमनाला के भी आचार्य परिवार तथा अभिभावकों ने अपने-अपने घरों पर प्रांत द्वारा निर्धारित वंदना प्रार्थना के कार्यक्रम को संपन्न किया।

सोमवार को स्वास्थ्य विभाग के दलों ने 823 घरों का सर्वे किया

माही की गूंज, खण्डवा। कोरोना संक्रमण के संदिग्ध मरीजों की स्वास्थ्य जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग ने 15 स्क्रीनिंग टीम बनाई है। इन दलों में आषा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सुपरवाईजर, आर.बी.एस.के. चिकित्सक एवं आयुष चिकित्सक तथा सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी शामिल है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. डी.एस. चौहान ने बताया कि शहरी क्षेत्र खंडवा में कुल 15 दल गठित किए गए है, जिनमें नागचून रोड छीपा कॉलोनी में 4, ईमलीपुरा में 4, हातमपुरा में 4, व परदेषीपुरा में 3 दल शामिल है। ये स्क्रीनिंग टीम अपने अपने क्षेत्र के घरों में जाकर परिवारों के सदस्यों के स्वास्थ्य की जानकारी हासिल कर रही है। इस दौरान उन्होंने 823 घरों का सर्वे किया गया है।

कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर बैठक संपन्न

भोजन वितरण करने वाली संस्थाओं का प्रशासन ने मानाआभार

माही की गूंज, ओंकारेश्वर।

शासन के निर्देश पर थाना मांधाता कंट्रोल रूम में पुनासा एसडीम श्रीमती ममता खेडे, एसडीओपी पुलिस राकेश पिंडरो के द्वारा ओकारेश्वर जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिकों, मीडिया कर्मियों की बैठक ली गई। जिसमें कोरोनावायरस संक्रमण को लेकर वर्तमान स्थिति पर चर्चा की गई। जिसमें नगर परिषद अध्यक्ष अन्तरसिंह बारे ने बैठक के दौरान ओंकारेश्वर के 15 वार्डो में सेवा सहकारी समिति के माध्यम से सभी परिवार को खाद्य सामग्री का वितरण किए जाने पर चर्चा की जिस पर एसडीएम ने कहा खंडवा में पिछले दिनों खाद्य सामग्री को लेकर प्रकरण पंजीबद्ध होने से पुनासा क्षेत्र में खाद्यान्न वितरण नहीं हो पाया है। एक-दो दिनों में सेवा सहकारी समिति के माध्यम से खाद्य सामग्री का वितरण प्रारंभ होगा।

पुनासा एसडीएम ने सीएमओ भावना पटेरिया को निर्देश दिए कि खाद्य सामग्री के लिए परेशान लोगों को पर्ची निकाल कर शीघ्र व्यवस्था की जाए। भाजपा नगर अध्यक्ष लीलाधर खंडेलवाल ने कहा कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर पूर्व की तरह जो प्रशासन द्वारा व्यवस्था की गई है उसे यथावत रहने दिया जाए, लॉकडाऊन का पालन किया जाए। अजय भाटिया ने कहा ओकारेश्वर में विभिन्न विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं अन्य संगठनों द्वारा खाद्य सामग्री बनाकर भोजन प्रसादी वितरण किया जा रहा है। उसे व्यवस्थित वितरण हेतु कार्यकर्ताओं को समझाइश देकर व्यवस्था की जाए। ललित दुबे ने ओकारेश्वर में ओंकार पर्वत पर निवासरत लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन मिले इस हेतु श्री जी मंदिर संस्थान व अन्य संगठन से व्यवस्था बनाकर पर्वत पर भोजन भेजने की व्यवस्था किए जाने का सुझाव दिया। बैठक में उपस्थित जनप्रतिनिधि गणमान्य नागरिकों ने पुलिस प्रशासन की व्यवस्था की भी प्रशंसा करते हुए कहा ओकारेश्वर के पुलिस नियंत्रण कक्ष कंट्रोल रूम से सतत निगरानी रखे जाने के कारण ओकारेश्वर में किसी प्रकार अप्रिय घटना संदिग्ध व्यक्तियों के नगर प्रवेश की खबर नहीं मिलती है। नगर परिषद ओकारेश्वर पुलिस विभाग राजस्व विभाग की सक्रियता के चलते तीर्थ नगरी ओकारेश्वर में शांति अमन-चौन का माहौल बना हुआ है। बैठक में नगर परिषद सीएमओ श्रीमती भावना पटेरिया, तहसीलदार उदय मंडलोई, थानाप्रभारी जगदीश पाटीदार, कंट्रोल रूम प्रभारी सुनील भावसार के अलावा जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

क्या कहते हैं जिम्मेदार

- बाहरी व्यक्ति को पूरी तरह प्रतिबंध किया गया है। पूर्व की तरह सभी व्यवस्था यथावत की गई है।

श्रीमती ममता खेड़े पुनासा

- पुलिस प्रशासन बैरिकेड लगाकर प्रमुख प्रमुख स्थानों पर जवानों को तैनात किया गया है संदिग्ध लोगों पर पुलिस प्रशासन द्वारा निगरानी रखी जा रही है कंट्रोल रूम के माध्यम से भी पुलिस प्रशासन द्वारा चोकसे बरती जा रही है।

राकेश पेंण्डरो एसडीओ पुनासा मुंदी

‘जीवन शक्ति योजना’ के तहत महिलाएं बनाएंगी मास्क, प्रति मास्क दर निर्धारित

माही की गूंज, खण्डवा।

राज्य शासन ने कोरोना से नागरिकों को बचाने के लिये बड़े पैमाने पर मास्क निर्माण की ‘‘जीवन शक्ति योजना‘‘ लागू कर दी है। इस योजना में शत प्रतिशत कॉटन से निर्मित दोहरी परत वाले मास्क बनाए जाएंगे। ये मास्क कोरोना वायरस की रोकथाम में अत्यन्त प्रभावशाली रहेंगे। मास्क का आकार 8श?4श् का होना चाहिए। मास्क शत-प्रतिशत सूती वस्त्र का होना चाहिए। मास्क थ्री फोल्ड डबल लेयर होना चाहिए। मास्क का निर्माण हितग्राही अपनी सुविधा के स्थल पर कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर योजना के क्रियान्वयन के पहले दिन प्रदेश में 4200 शहरी महिलाओं ने अपना पंजीयन कराया है। जीवन शक्ति योजना लागू होने के पहले घण्टे में ही शहरी महिलाओं द्वारा 325 पंजीयन कराये गये। पंजीयन की प्रक्रिया निरंतर जारी है। इस योजना में शहरी क्षेत्र की महिलाएँ लाभांवित होंगी। पोर्टल पर पंजीकृत महिलाओं को मास्क बनाने के लिये राज्य शासन द्वारा सीधा आदेश दिया जाएगा। आदेश के अनुसार बनाएं गये मास्क को जमा करने पर उसी दिन महिलाओं के खाते में राशि अंतरित की जाएगी। राज्य सरकार ने योजना में शामिल होने के लिये हेल्पलाइन नम्बर 0755-2700800 जारी किया है।

योजना के लिए पात्रता

इस योजना के अन्तर्गत समस्त शहरी महिलाएं पात्र हैं। इस योजना में ऐसी संस्थाएं जिन्हें एग्रीगेटर कहा जाएगा, जो विभिन्न माध्यमों से मास्क की मांग का संग्रहण करती है वे भी पात्र होगी। इन संस्थाओं का पंजीयन पृथक से किया जाएगा। अन्य संस्थान भी अपनी आवश्यकता के मास्क इस योजना के माध्यम से शहरी पंजीकृत महिलाओं से बनवा सकते हैं।

पंजीयन की प्रक्रिया

इच्छुक महिलाएं अपना पंजीयन बेवसाइट ूण्डेंानचउचण्उचण्हवअण्पद पर स्वयं कर सकती है। इसके अलावा महिलायें फोन नम्बर 0755-2700800 पर फोन करके भी अपना पंजीयन करा सकती है। पंजीयन कराने के लिए स्वयं के नाम का बैंक खाता क्रमांक एवं आधार क्रमांक अनिवार्य है। पंजीयन के बाद प्रत्येक हितग्राही को समस्त जानकारी केवल उसके पंजीकृत मोबाइल पर ही भेजी जाएगी। इसके अतिरिक्त, हितग्राही समस्त जानकारियाँ पोर्टल पर अपने खाते में भी देख सकेगे।

मास्क आदेश का प्रदाय

प्रत्येक महिला को आवश्यक संख्या में मास्क बनाने का आदेश केन्द्रीयकृत पोर्टल से दिया जाएगा। स्वीकृतकर्ता अधिकारी द्वारा क्रय आदेश को पोर्टल पर स्वीकृत करते ही आदेश संबंधित महिला के पंजीकृत मोबाइल पर एसएमएस के माध्यम से प्राप्त होगा। इस एसएमएस में एक लिंक भी होगा, जिस पर क्लिक करने पर हितग्राही इस क्रय आदेश की प्रति देख सकेंगे। इसके अतिरिक्त, किसी भी एमपी ऑनलाइन, लोक सेवा केन्द्र अथवा कामन सर्विस केन्द्र से भी इसकी प्रति प्राप्त कर सकेंगे। एसएमएस से प्राप्त आदेश पर महिला हितग्राही अपना निर्माण कार्य प्रारंभ कर सकती हैं। उसको अन्य किसी प्रकार के अन्य आदेश की आवश्यकता नहीं होगी।

मास्क प्रदान करने की प्रक्रिया

इस व्यवस्था के संचालन के लिये जिला कलेक्टर प्रत्येक नगरीय निकाय स्तर पर निर्मित मास्क प्राप्त करने के लिये अधिकारी नियुक्त करेंगे। आवश्यकतानुसार प्रति नगरीय निकाय एक से अधिक अधिकारी भी नामित किये जा सकते हैं। मास्क निर्माण होने पर हितग्राही अपने निर्मित मास्क जिला कलेक्टर द्वारा नामित अपने नगरीय निकाय के अधिकारी को प्रदान करेंगे। मास्क प्राप्ति की स्वीकृति संबंधित अधिकारी द्वारा अनिवार्यतरू पोर्टल पर दर्ज की जाएगी। यह स्वीकृति पोर्टल से भी प्रिंट की जा सकती है। नामित अधिकारी द्वारा मास्क की प्राप्ति दर्ज करते ही 11 रुपये प्रति मास्क की दर से राशि हितग्राही के पंजीकृत खाते में हस्तातरित हो जाएगी। इस संबंध में एसएमएस हितग्राही के मोबाइल पर भी भेजा जाएगा।

मॉस्क वितरण की प्रक्रिया

मास्क विक्रय करने के लिये सभी इच्छुक संस्थाएँ नामित अधिकारी से मास्क प्राप्त कर सकेंगी। नामित अधिकारी ऐसी सभी संस्थाओं को 11 रुपये प्रति मास्क की दर से राशि प्राप्ति के बाद मास्क प्रदान करेगें। इसकी प्रविष्टि पोर्टल पर करेंगे। डिमांड ड्राफ्ट मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम के नाम भोपाल में देय होंगे। मास्क की ब्रिकी के बाद भविष्य की आवश्यकता का आकलन नामित अधिकारी करेंगे। इसकी सूचना पोर्टल पर दर्ज करेंगे। योजना के संबंध में कोई भी स्पष्टीकरण अथवा जानकारी रममअंदींजप2020ध्हउंपसण्बवउ पर दी जाएगी। जिला कलेक्टर्स से कहा गया है कि वे इस योजना से अधिक से अधिक महिलाओं एवं उचित मूल्य की दुकानों को जोड़ें।

कन्ट्रोल रूम में पदस्थ डाक्टर ने कुष्ट उपचारित वृद्ध महिला के घर पहुंचकर किया उपचार

माही की गूंज, बड़वानी। कहते हैं मानवीय संवेदनाएं, काल परिस्थिति अनुसार हर किसी व्यक्ति में स्वत ही जागृत होती है । जिससे वह बिना भय के ऐसे कार्य कर देता है जिसके लिये वह समाज में आदरणीय बन जाता है और अगर मदद करने वाला व्यक्ति डाक्टर हो तो उसे भगवान के समतुल्य मानने में कोई देर नही करता । और ऐसी ही संवेदना किसी युवा चिकित्सक में देखने को मिले, तो यह किसी संजीवनी से कम नहीं होती । जिला कंट्रोल रूम पर पदस्थ डॉक्टर चंद्रशेखर पाल ने इस बार एक वृद्ध की मद्द कर पुनः समाज, अपनी डाक्टर बिरादरी के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया है। शुक्रवार को कंट्रोल रूम में पैरा लीगल वालंटियर एवं आशा ग्राम ट्रस्ट के पीआरओ श्री सचिन दुबे द्वारा फोन कर डॉक्टर को अवगत कराया कि आशाग्राम में निवासरत कुष्ठ उपचारित 62 वर्षीय श्रीमती ग्यारसी बाई अपने घर पर ही गिर गई है तथा उसके सीधे पैर में चोट लगने से रक्त भी बह रहा है तथा पैर में सूजन भी आ गई है । जिस पर डॉक्टर पाल के फोन के माध्यम से ही उचित परामर्श देकर आश्वस्त किया कि वे शाम को ड्यूटी समाप्त हो जाने के पश्चात् स्वयं महिला के घर आकर उसे देख लेंगे । शाम को ड्यूटी के उपरान्त महिला के घर पहुंचने पर डॉक्टर पाल ने पाया कि महिला के पैर में मोच आ गई है। जिसके कारण उसके पैर पर क्रेप बैंडेज बांधना जरूरी है । इस पर डॉ. पालन ने स्वयं महिला के पैर पर केप बैण्डेज बांधकर उसे राहत उपलब्ध कराई, वही आवश्यक दवाईयॉ भी अपने पास से उपलब्ध कराई। सच है परेशानी कभी कहकर नही आती, किन्तु धैर्य रखने पर हमेशा मद्दगार, हर जगह - हर समय मिल जाते है।

कुशलगढ़ बना कोरोना का घर, लगातार नेगिटिव आ रही रिपोर्ट के बाद पिछले चार दिन में तीन नए केस

एक ही समाज के संक्रमित, मार्च में हुई शादी समारोह से संक्रमण फैलने की आशंका

माही की गूंज, कुशलगढ़। वैभव बैरागी

बांसवाड़ा जिले के कुशलगढ़ की शांत फिज़ा में जैसे कोरोना संक्रमण की आमद हुई मानो एक पल में सब कुछ बदल गया। एक के बाद एक कोरोना के मामले सामने आने के बाद कुशलगढ़ में 04 अप्रैल से ही कर्फ्यू के हालत हैं। लोगों को घरों से बिल्कुल निकलने की अनुमति नहीं है। प्रशासन द्वारा संदिग्धों की लगातार सेम्पलिंग कर कोरोना की जांच की जा रही है। पूरे नगर में 04 अप्रैल से 19 अप्रैल तक कोरोना के लगभग 60 मामले सामने आ गए थे, लेकिन उसके बाद से नगर में लगभग 1150 लोगों की जांच में 61 लोग कोरोना पॉजिटिव पाए गए थे। बाकी की रिपोर्ट नेगिटिव आने और कुछ पॉजिटिव कैसे के ठीक होने से नगर में लोगों ने राहत की सांस ली थी।

चार दिन में तीन नए केस, 20 केस हुए नेगिटिव

लगभग 06 दिन के अंतराल के बाद लगा जैसे कोरोना का कहर थम गया है, लेकिन पिछले तीन दिन में कोरोना के तीन नए मामले सामने आने से प्रशासन के होश उड़ गए है। वहीं नगरवासियों को मिली राहत फिर से दहशत में बदल गई। जिन लोगों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई थी, उनमें से 20 केस की तीन बार री-सेम्पलिंग की गई। जिनकी रिपोर्ट नेगिटिव आई। जो लोग पोजटिव थे, उन्हें अब उदयपुर से बांसवाड़ा कोरेन्टाइन सेंटर में शिफ्ट किया गया। जहां उनका इलाज किया जा रहा है। कुछ लोगों को कुशलगढ़ के सरकारी हाउस में कोरेन्टाइन किया गया था। उन्हें एक माह के रमजान को देखते हुए होम कोरेन्टाइन किया गया हैं।

सभी पीड़ित एक ही वर्ग के, शादी समारोह से कोरोना फैलने की आशंका

नगर में मिले अब तक सभी कोरोना पीड़ित बोहरा समाज के बताए जा रहे हैं। पहले कयास लगाए जा रहे थे कि एक महिला जिसकी मौत टीबी से होना बताई जा रही हैं। शंका की जा रही थी कि महिला कोरोना से पीड़ित थी। जिसकी जांच के लिए सेम्पलिंग की गई थी, लेकिन महिला की रिपोर्ट नेगिटिव आई। आशंका व्यक्त की जा रही है मार्च में आयोजित बोहरा समाज के शादी समारोह में खाना बनाने वाले मुंबई से आये थे और वही से कोरोना फैला है क्योंकि कोरोना पॉजिटिव ज्यादातर एक ही परिवार और आपस में रिश्तेदार हैं ।

प्रशासन कर रहा है आवश्यक वस्तु की पूर्ति

नगर में कोरोना के केस सामने आने के बाद नगर में कर्फ्यू लगा दिया गया। पिछले एक माह से लोग घरों में कैद है। प्रशासन द्वारा लोगों के जरूरत के सामान की व्यवस्था करने के लिए वार्ड अनुसार शिक्षकों की तैनाती की गई है। जिनके माध्यम से लोग जरूरी सामान ले पा रहे हैं। वही संक्रमण के खतरे से बचने के लिए किराना ओर सब्जी वालों को बदल बदल के वार्ड अनुसार पास दिए जा रहे हैं। जिनके साथ पुलिस जवान और नगर परिषद के कर्मचारियों की तैनाती होती हैं।

आसपास का क्षेत्र में लोगों को छूट

नगर को छोड़ कर प्रशासन आसपास के क्षेत्रों को लेकर कितना सतर्क हैं। इसका पता केवल इसी से चलता है कि कुशलगढ़ के आस पास के गांव छोटी सरवा, मोहकमपुर, पाटन और भी कुशलगढ़ क्षेत्र में आने वाले छोटे बड़े गांव 08 से 11 तीन घंटे के लिए खुल रहे हैं। जहां लोगों की भीड़ देखी जा रही हैं। ज्यादातर गांव में पुलिस चौकी नहीं है। पुलिस द्वारा अस्थाई व्यवस्था की गई है, लेकिन यहां लोगों द्वारा मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग, सेनेटाइजर का प्रयोग नहीं किया जा रहा हैं। इन गांवों को देख कर लगता हैं कि प्रशासन यहां कोरोना के आगमन को खुला आमंत्रण दिया जा रहा है।

अब भी जारी है पैदल मजदूरों का घर पहुंचना

माही की गूंज, रायपुरिया। मध्यप्रदेश में भले ही सरकार मजदूरों को अन्य राज्यों से वापस ला रही है, लेकिन बिहार और यूपी के कामगार जो महाराष्ट्र- गुजरात में मजदूरी करने के लिए गए है। वह आज भी एक डेढ़ हजार किलोमीटर दूर से अपनी प्रदेश की सरकार की बेरुखी कारण पैदल घर वापसी कर रहे हैं। कहने को तो हर राज्य और जिले की सीमा सील हैं, लेकिन उनकी स्थिति और हालत देख कोई रोक नहीं पा रहा है। उल्टा उनकी मदद कर उनको आगे के लिए रवाना कर रहे हैं।

ऐसे ही लगभग 35 लोग महाराष्ट्र और गुजरात से पैदल अपने घर के लिए निकले है। लेकिन यहां आते आते कई लोग बिछड़ गए या पीछे रह गए। रायपुरिया से गुजर रहे 05 लोगों से बात की तो अखिलेश गोस्वामी जो गुजरात के सूरत से अपने गांव गोंडा जिला यूपी के लिए और अरुण, सुरेश, संदीप, राजू अहमदाबाद से अपने राज्य बिहार के गया जिले के लिए 05 दिन से पैदल चल कर यहां तक पहुंचे हैं और इनको अभी एक हजार किलोमीटर और चल कर जाना हैं।

पैदल आ रहे इन मजदूरों में बताया कि ये वर्षो से जिनके यहां काम कर रहे थे। उन्होंने वहां रोकने से मना कर दिया। उल्टा खाने खर्चे के पैसे की मांग कर रहे थे। जिसके बाद हम अपना हिसाब करके पैदल घर के लिए निकल गए क्योंकि हमारे परिवार वाले परेशान हो रहे हैं। सभी पांचों मजदूरों की हालत काफी खराब थी और उनके पैरों में छाले तक हो गए थे। कोरोना संकट में सभी राज्यों ने अपने लोगों को लाने की बजाए वहीं रुकने के निर्देश दे दिए। वही प्रधानमंत्री मोदी ने अपने यहां बाहर से आकर काम कर रहे मजदूरों की व्यवस्था करने की अपील की थी। जिसका कोई खास असर नहीं दिखा। ऐसे मजदूरों को या तो सरकार व्यवस्था कर रही है या ज्यादातर मजदूर पैदल घर रवाना हो गए।

शिकायतों पर आबकारी विभाग की कार्यवाही

माही की गूंज, झाबुआ।

कलेक्टर प्रबल सिपाहा के आदेश एवं जिला आबकारी अधिकारी एसए सिद्दीकी के निर्देशन में झाबुआ, पेटलावद, थांदला एवं आस-पास के क्षेत्र में अवैध शराब बिक्री की शिकायतों पर कार्यवाही करते हुए आबकारी टीम ने 27 अप्रैल को वृत्त पेटलावद में जामली, बेकल्दा, काजबी, सामली, बनी, रायपुरिया, ठिकरिया, बामनिया व आस-पास के क्षेत्र में दबिश दी। इन ग्रामों में किराना दुकानों के साथ हाथ भट्टी मदिरा हेतु तालाब किनारे एवं खेतों की सघन चेकिंग की गई। शिकायतों पर लगभग 8 जगह छपामारी कार्यवाही की गई। जिसमें वृत्त पेटलावद अ में 01 एवं वृत्त पेटलावद ब में 2 प्रकरणों में कुल 40 बल्क लीटर हाथ भट्टी मदिरा जब्त कर केस दर्ज किए गए।

वहीं वृत्त झाबुआ में 01 केस में 4.32 बल्क लीटर व्हिस्की मदिरा के साथ 5 बल्क लीटर बीयर मदिरा व वृत्त झाबुआ ब में 10 लीटर हाथ भट्टी मदिरा एवं वृत्त थांदला के काकनवानी क्षेत्र में एक प्रकरण में 10 बल्क लीटर बीयर जब्त कर केस दर्ज किए गए। जिला आबकारी एस. ए. सिद्दीकी ने बताया कि कोरोना के प्रकोप के कारण लॉक डाउन लागू है एवं जिले की सभी देशी-विदेशी मदिरा दुकानों को बंद कर सील किया गया है। फिर भी क्षेत्र में अवैध शराब की चोरी छिपे बिक्री की शिकायतें मिल रही थी। इसी को मद्देनजर रखते हुए टीम द्वारा गश्त कर उक्त कार्यवाही की गई एवं झाबुआ जिले में कुल 06 प्रकरणों में 50 बल्क लीटर हाथ भट्टी मदिरा, 4.32 बल्क लीटर व्हिस्की मदिरा एवं 15 बल्क लीटर बियर मदिरा जब्त की। आगे भी गश्त -दबिश कर सख्त नजर रखी जाएगी, ताकि अवैध व नकली मदिरा की बिक्री पर लगाम कसी जा सके। गौरतलब है कि पिछले दिनों झाबुआ के ग्राम ढेकल बड़ी में ही आबकारी विभाग द्वारा विदेशी मदिरा का बड़ा जखीरा पकड़ा गया था।

मजदूरों को घर पहुंचाने में पटवारी निभा रहे मुख्य भूमिका

माही की गूंज, झाबुआ। प्रदेश के पटवारियों की कोरोना माहामारी के संक्रमण काल में की जा रही ड्यूटी पर हौंसला कमिश्नर भू-अभिलेख ज्ञानेश्वर बी. पाटिल ने यू-टयूब चौनल पर एक वीडियो जारी कर हौंसला अफज़ाई की है। उन्होंने पटवारियों के काम की तारीफकरते हुए इसके लिये धन्यवाद भी दिया। मध्य प्रदेश पटवारी संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जिला अध्यक्ष अखिलेश मुलेवा ने बताया कि पटवारियो को कोरोना योद्धा बताते हुए कमिश्नर पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान द्वारा गत दिवस पटवारियों के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि पटवारी साथी बहुत अच्छा कार्य कर रहे है तथा उन्होने प्रदेश के पटवारियो को बताया कि पटवारी को भी कोरोना योद्धा में शामिल किया गया है। उल्लेखनीय है कि कोरोना महामारी मे कार्यरत कर्मचारियो को कोरोना योद्धा बनाकर उनको 50 लाख का बीमा कवर दिया गया है।

मुलेवा ने बताया कि झाबुआ जिले की गुजरात सीमा पर पटवारियो द्वारा प्रवासी मजदूरो को उनके गंतव्य तक पहुंचाने में ड्यूटी कर रहे पटवारियों, राजस्व अमले के फोटो भी प्रमुखता से कमिश्नर भू अभिलेख द्वारा जारी वीडियो में प्रमुखता से जारी किए गए है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बांट रही मास्क

माही की गूंज, थांदला।

कोरोना महामारी की रोकथाम को लेकर महिला बाल विकास थांदला द्वारा लगातार लोगों को मास्क और सूखा नाश्ता बांटा जा रहा है। ग्राम खजूरी में आगनवाड़ी पर्यवेक्षक श्रीमती रेखा पारगी ने सभी वार्डो में स्वयं के खर्चे से मास्क बनाकर वितरित किए। मंगलवार को भी कार्यकर्त्ता रेखा भूरिया, अरूणा बैरागी, गंगा वसावा द्वारा मास्क का वितरण किया गया।

पंचायत की लापरवाही से गंदा पानी पीने को मजबूर करड़ावद के लोग

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद विकास खंड की बड़ी पंचायत में से एक ग्राम पंचायत करडावद पंचायत की बड़ी लापरवाही देखने को मिल रही है। जिसके कारण लोग शुद्ध जल में मिला हुआ गटर का गंदा पानी पीने को मजबूर है। ग्राम करडावद के लिए लगी नल जल योजना देखरेख और लापरवाही की भेंट चढ़ गई है। पंचायत ग्रामवासियों को पीने के लिए जहां से पानी मुहैया करवा रही है। उस स्थान को कोई भी देख ले तो पानी पीना तो ठीक उपयोग करना भी स्वीकार नहीं करे। नलजल योजना के संचालन हेतु जिस तालाब से पानी कुएं तक लाया जा रहा है। वही पर गांव से निकलने वाली गटर का पानी रिसकर नाले से कुएं में आ रहा हैं। र तालाब से बिना फिल्टर हो कर आया गटर का मिला हुआ पानी नगर में नल जल योजनाओं के माध्यम वितरण किया जा रहा है। ग्राम पंचायत की ओर से इस गंदगी को कुएं में जाने से रोकने के लिए कोई इंतजाम नहीं है। मिली जानकारी के अनुसार पानी में डालने की कोई दवाई का उपयोग तक नहीं किया जाता है। जिससे पानी शुद्ध हो सके। साथ ही न ही कोई चौकीदार की व्यवस्था है, जो वहां की व्यवस्था संभाल सकें।

खजूर खोरा तालाब से आ रहा है पानी

ग्राम पंचायत में नल जल योजना के माध्यम से ठिकरिया माताजी तालाब व खजूर खोरा तालाब के निस्तार का पानी अलग-अलग नालों में बहकर पंचायत के शासकीय कुएं के पास आ रहा है। यही गंदा पानी सीधा ग्राम पंचायत के ठिकरिया पाड़ा, सातरुंडी तथा करडावद में नल जल के माध्यम से कुएं से सीधा पहुंच रहा है। उक्त पानी में ब्लीचिंग पाउडर भी नहीं डाला जाता है। वर्तमान समय में कोरोना वायरस जैसी महामारी बीमारी के संक्रमण से पूरा देश लड़ रहा है। तो वहीं दूसरी तरफ ग्राम पंचायत की लापरवाही सरेआम देखी जा रही है। उक्त कुएं पर लगी मोटर के माध्यम से पानी सप्लाई हो रहा है। जिसकी कोई सुरक्षा नहीं है। यहां कोरोना फैले न फैले, लेकिन जनता में गंदे पानी से दूसरी बीमारी फैलने का डर जरूर बना हुआ है।

पानी की टंकी पड़ी है अनुपयोगी

नल जल योजना के लिए शासन द्वारा लाखों के खर्च से पानी की टंकी का निर्माण किया गया, जो लगभग 15 वर्ष से अधिक समय से बनने के बाद से एक बूंद पानी की नहीं सहेज सकी। पूरी योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ कर रह गई और बिछाई गई पाइप लाइन इतनी घटिया थी कि पानी सप्लाई का कार्य शुरू होते ही जगह जगह से फूट गई। पानी टंकी तक न तो पहुंच पाया न ही आज तक सप्लाई हो पाया। अब तो उपयोग विहीन पानी की टंकी इतनी जर्जर हो चली हैं कि जिस दिन टंकी गिरी कोई बड़ी दुर्घटना घटित होना तय है। शासन द्वारा नल जल योजना हेतु कई योजनाओं का संचालन किया जाता है, लेकिन ग्राम पंचायतों की इस तरह की उदासीनता के कारण कई ग्राम पंचायतों की नल जल योजनाएं या तो बन्द पड़ी है या फिर इसी प्रकार की लापरवाही से संचालित हो रही हैं।

पुलिस विभाग के द्वारा नगर में लॉकडाउन का हो रहा सख्ती से पालन

चौराहों पर खड़े होकर लोगों को घर पर रहने की कर रहे अपील

माही की गूंज, झाबुआ।

नगर में संपूर्ण लॉक डाउन के चलते सख्ती से पालन करने के लिये पुलिस विभाग की टीम के द्वारा हर संभव प्रयास किये जा रहे है। पुलिस अधीक्षक विनित जैन के मार्गदर्शर्न मे पुलिस टीम के द्वारा नगर में लोगो के द्वारा लॉक डाउन के साथ ही सोशल डिस्टेसिंग का पालन भी करवाया जा रहा है। नगर में घूमने वाले फालतू लोगों को पुलिस के डंडों का भी सामना करना पडा। वहीं झाबुआ थाना प्रभारी सुरेन्द्र सिंह के द्वारा खुद नगर में अपनी टीम के द्वारा लॉक डाउन का सख्ती से पालन करवाया गया। नगर के प्रमुख मार्गो से पैदल ही घूमते हुये थाना प्रभारी सिंह के द्वारा खुली दुकानों को भी बंद करवाया गया। बैंकों के सामने खड़े ग्रामीणों को भी सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने को कहा गया। प्रत्येक बैंक के बाहर आने वाले उपभोक्ताओं के लिए पुलिस विभाग के एक या दो जवान खडे कर उनके द्वारा सोशल डिस्टेसिंग का पालन करवाया गया।

नगर में पुलिस विभाग के द्वारा सख्ती से लॉक डाउन का पालन करवाया जा रहा है। जिससे की नगर आज कोरोना वायरस के संक्रमण से सुरक्षित नजर आ रहा है। वही पुलिस विभाग के जवानो के द्वारा दिन रात चौराहो पर अपनी ड्यूटी देने के कारण ही नगर में लॉक डाउन को सफल बनाया जा रहा है। ऐसे में दूर दराज सीमावर्ती इलाको मे भी पुलिस के जवानो के द्वारा दिन राज ड्यूटी कर इस संक्रमण को रोकने का अथक प्रयास जारी है। पुलिस जवानो के द्वारा नगर में छतरी चौक, थांदला गेट, बाबेल चौराहा, आजाद चौक , राजवाडा चौक, राजगढ नाका, दिलीप गेट, जेल चौराहा आदि कई स्थानो पर अपनी ड्यूटी पर तैनात रहते है। वही नगर मे सख्ती से लॉक डाउन का पालन करने के लिये अपनी सेवाये सतत दे रहे है।

गांव में लॉकडाउन की उड़ रही धज्जियां

माही की गूंज, कुंदनपुर।

मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या निरंतर बढ़ने से भले ही शासन प्रशासन में इस महामारी वायरस के खौफसे हड़कंप मचा हुआ है। जिसके चलते लागू लॉकडाउन का जिले के हर थाना क्षेत्रों में पुलिस प्रशासन सड़कों पर अनावश्यक रूप से घूम रहे लोगों पर कार्रवाई करते हुए अपनी सक्रियता दिखा रही हो लेकिन,कुन्दनपुर में पुलिस प्रशासन की घोर उदासीनता के चलते यहां पिछले कई दिनों से लॉकडाउन की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

दरअसल, यहां पुलिस प्रशासन की लापरवाही पर व्यापारी तरह-तरह के सवाल उठा रहे हैं। यहां प्रतिदिन बैंकों पर जहां सैकड़ों की तादात में ग्राहकों की भीड़ उमड़ रही है, तो वहीं सड़कों पर अनावश्यक रूप से हर समय वाहन फर्राटा भरते दिखाई दे रहे हैं। निरंतर बढ़ती भीड़ के चलते जहां लॉकडाउन की धज्जियां उड़ रही हैं। तो वही कोरोना वायरस फैलने का लोगों में खतरा मंडराने लगा है।

पार्षद की टिप्पणी पर थाना प्रभारी को सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, झाबुआ। शकाहारी जागृति मंच जिला झाबुआ की ओर से थाना प्रभारी झाबुआ को फेसबुक पर गलत टिप्पणी से धार्मिक भावनाएं व समाजों की सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल करने को लेकर ज्ञापन सौपा गया। ज्ञापन मे कहा गया कि मंगलवार को कांग्रेस प्रवक्ता व वार्ड 4 के पार्षद साबिर फिटवेल द्वारा फेसबुक पर अंडे के सेवन को लेकर अशोभनिय टिप्पणी की गई है। जिसमे संपूर्ण ब्राह्मण वैश्य , निमा , भगत एवं शाकाहारी समाज की धार्मिक एवं सामाजिक भावनाये धूमिल करने का प्रयास किया गया है। तथा इससे बडे जनसमुदाय की भावना आहात हुई है। जो अंडे को मांसाहारी की श्रेणी मे रखते हुये उपभोग नही करते है। पार्षद की उक्त टिप्पणी की निंदा करते हुये समस्त समाज ने नाराजगी व्यक्त की है। तथा इनके विरूद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज कराने की मांग की गई है। इस अवसर पर वैश्य सम्मेलन के जिला महामंत्री दिपेश सकलेचा,राजु निनामा, पूर्वेश कटारिया, पपिष पनेरी, संजय मेहता, मनमोहन शाह, महंत पर्वत मकवाना, गजेन्द्र सक्तावत, चमना राठौर, एवं जितेन्द्र सिंह निनामा भगत समाज एवं बडी संख्या मे हिन्दु समाज के लोग उपस्थित थे।

कियोस्क के माध्यम से गांवों में मिल रहे ग्रामीणों को रुपए

विकलांग और वृद्धजनों का रखा जा रहा है विशेष ध्यान

माही की गूंज, बामनिया।

स्थानीय बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा ग्रामीणों को उनके बचत खातों से भुगतान की सुविधा कियोस्क मित्रों के माध्यम से विभिन्न ग्रामों में की जा रही है। साथ ही विकलांग एवम असहाय वृद्ध खाताधारकों को प्रमुख रूप से भुगतान की सुविधा दी जा रही है। कियोस्क मित्रो द्वारा निर्देशानुसार ग्राम पंचायतों में सरपंच ,सचिव, रोजगार सहायक और कोटवार की उपस्थिति में ग्रामीणों को भुगतान किया जा रहा है।

बैंक प्रबंधक पंकज सूर्यवंशी ने बताया कि बैंक शाखा द्वारा ग्रामीण खाताधारकों को विभिन्न ग्रामों में बैंक शाखा के कियोस्क मित्रों के माध्यम से प्रतिदिन भुगतान किया जा रहा है। सभी कियोस्क मित्रों द्वारा बेहतर कार्य करने का प्रयास किया जा रहा है। जिनकी सतत मॉनिटरिंग का कार्य सहायक प्रबन्धक लोकेश निर्मल एवम अन्य स्टाफद्वारा किया जा रहा है। असहाय ,वृद्ध और विकलांग को भुगतान की दिशा में सहायक प्रबंधक लोकेश निर्मल ने ग्राम पंचायत रामपुरिया में अति वृद्ध महिला को घर पहुंचकर भुगतान किया। कियोस्क मित्र राजेश सोनी, सुमित अग्रवाल द्वारा लगातार ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सेवाएं देते हुए बैंक शाखा से लगभग 13 किमी दूर विकलांग को उसके ग्रहग्राम भेरूगढ़ में भुगतान किया गया। इसी प्रकार ग्रामीण बीसी द्वारा ग्रामीणों की भुगतान सुविधा प्रदान की जा रही है।

लॉकडाउन के चलते गरीबों का सहारा बनी राम रसोई

राम रसोई में हिन्दू-मुस्लिम युवा मानव सेवा की दे रहे अद्भुत मिसाल

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भंडारी

कोरोना वायरस महामारी के बढ़ते संक्रमण के रोकथाम के लिए देश के प्रधानमंत्री ने 25 मार्च से सम्पूर्ण भारत में लॉक डाउन लगाया है। जिससे से कई गरीब परिवार प्रभावित हुए है। जिनमें कई गरीब परिवार ऐसे थे जो प्रतिदिन दैनिक मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। ऐसे लोगों के सामने लॉक डाउन के चलते सबसे बड़ी समस्या आ गई थी कि उनके परिवार का पालन पोषण किस तरह से होगा। जिसको ध्यान में रखकर बामनिया नगर के युवा लॉक डाउन के पहले दिन से ऐसे लोगों की सहायता के लिए तन-मन-धन से जुट गए। इन युवाओं ने गरीबों की सहायता का बीड़ा उठाया और जरूरतमंद लोग भूखे नहीं रहे इसके लिए राम रसोई की शुरुआत कर दी। लॉक डाउन के पहले दिन ही 20 लोगों का खाना बनाया था और आज लगभग 500 लोगों का सुबह-शाम का भोजन बनाया जा रहा है। खाने में सुबह रोटी सब्जी व शाम को दलिया खिचड़ी, व अन्य चीजें वितरित की जाती है।

इस राम रसोई की शुरूआत इन युवकों ने स्वयं अपने खर्च व अपने हाथों से खाना बना कर पैकेट के रूप में जरूरतमंदों के घर तक पहुंचाने से की थी। इन युवाओं के द्वारा किए जा रहे निस्वार्थ सेवा भाव के कार्य को देख कर बामनिया नगर कई लोगों इस राम रसोई में बढ़-चढ़ कर सहयोग किया। जिसमें किसी ने आटा दिया, तो किसी ने सब्जियां मसाले एवं अन्य तरह की सहायता कर राम रसोई का भंडार आज तक खाली नहीं होने दिया। जिसकी बदौलत निरंतर आज भी राम रसोई से गरीबों को भोजन करा कर मानव सेवा की जा रही है। साथ ही ग्रुप के सभी सदस्यों द्वारा खुद ही मिलकर भोजन बनाया जाता है।

फोटो वीडियो से दूर निःस्वार्थ सेवा

आज के युग में मदद करने वालो में फोटो खींच कर सोशल मीडिया में प्रोपेगैंडा करने का चलन ज्यादा है। इन सब से परे युवाओं द्वारा मदद लेने वालों के नाम गुप्त रखते हुए उनके साथ कोई फोटो नहीं लेते हुए उनकी पहचान गुप्त रखी जाती है। युवाओं ने कोई फोटो वीडियो किसी भी सोशल साइड पर पोस्ट नहीं करते हुए निस्वार्थ भाव से मानव सेवा कर रहे है।

हिन्दू-मुस्लिम सभी भाई मिल कर दे रहे सेवा

नगर में लॉक डाउन के चलते गरीबों की सहायता के लिए हिन्दू-मुस्लिम भाई मिल कर मानवता की अद्भुत मिसाल पेश करते नजर आ रहे हैं। लॉक डाउन के एक माह बाद भी ये सभी एक साथ मिलजुल राम रसोई को लॉक डाउन के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए संचालित कर रहे हैं। इसमें ये सभी अजय सिसोदिया, घनश्याम गुर्जर, बबलू भंडारी, महेश पाटीदार, असरफ खान, रितेश कटारा, लोकेंद्र गहलोत, वरुण त्रिवेदी, सद्दाम मंसूरी, बाबू प्रजापत शोएब खान, गुड्डू राठौर, लालू भाई गहलोत, इमरान गौरी,मनीष चौहान अपना पूरा सहयोग दे रहे है।

अटैचमेंट समाप्त होने के बावजूद जारी

माही की गूंज, झाबुआ।

जिले में शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग में बड़े पैमाने पर अटैचमेंट बेरोक-टोक जारी है। जबकि शासन के स्पष्ट निर्देश है कि, जिले में कहीं भी कोई भी संलग्नीकरण (अटैचमेंट) नहीं किया जाए और प्रत्येक कर्मचारी-अधिकारी अपनी मूल पदस्थापना पर ही कार्य करें, लेकिन बावजूद इसके शासन के आदेशों की अवहेलना की जा रही है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी झाबुआ के पत्र क्रं. /स्थापना/2019/628 दिनांक 17/06/2019 के अनुसार जिले में समस्त शासकीय सेवकों को उनकी मूल पदस्थापना हेतु कार्यमुक्त करने का आदेश जारी किया गया था। निर्देशों को ताक में रखकर अभी भी कई शासकीय सेवक अपने मूल पद पर सेवाएं न देते हुए जोड-तोड़ के माध्यम से अन्यत्र जगह पर अपनी सेवाएं दे रहे। जनजातीय कार्य विभाग भोपाल द्वारा दिनांक 13/09/2017 के आदेश क्रं. 23255 के अनुसार जिले में नियुक्त छात्रावास अधीक्षकध्अधीक्षिका जिनका 3 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हो चुका है, उनको हटाकर नए को प्रभार देने का आदेश दिया गया था, बावजूद इसके जिले में कई अधीक्षकध्अधीक्षिका 3 वर्षों से अधिक समय से एक ही स्थान पर अपने पद पर जमे हुए हैं।

स्पष्टतः बिना लेन-देन के यह कार्य हो नहीं सकता है। अतः जिले में भ्रष्टाचार रोकने के लिए शासन के तय नियमों के अनुसार ही उन अधीक्षकों की नियुक्ति की जाना चाहिए। साथ ही समस्त प्रकार के संलग्नीकरण को तत्काल समाप्त किया जाना चाहिए।

संपूर्ण लॉकडाउन में सार्वजनिक स्थानों पर थूकना पड़ेगा महंगा

नगरीय निकाय द्वारा 1 हजार रूपए का लगाया जाएगा अर्थदंड

माही की गूंज, झाबुआ। कोरोना वायरस का संक्रमण सार्वजनिक स्थानों पर थूकने से भी तेजी से फैलता है, इसके लिए कोरोना वायरस से रोकथाम हेतु लगे लॉकडाउन के दौरान कोई भी व्यक्ति यदि सार्वजनिक स्थानों पर थूकता पाया जाता है, तो संबंधित को 1 हजार रूपए के अर्थदंड से दंडित किया जाएगा। इस संबंध में मप्र शासन के नगरीय एवं आवास विकास विभाग के प्रमुख सचिव संजय दुबे ने मप्र के समस्त आयुक्त, नगरीय प्रषासन एवं विकास भोपाल, समस्त आयुक्त नगरपालिका निगम मप्र, समस्त मुख्य नगरपालिका अधिकारी, नगरपालिका एवं नगर परिषद्, समस्त संभागीय संयुक्त संचालक नगरीय प्रषासन एवं विकास मप्र को 27 अप्रेल को पत्र जारी कर आदेशित किया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में हो रहे भ्रष्टाचार पर लगाम जरूरी

माही की गूंज, झाबुआ।

कोरोना वायरस के चलते राज्य शासन के निर्देश पर जिले भर की उचित मूल्य की दुकानों पर गरीबों एवं ग्रामीणों को पांच किलो गेंहू एवं पांच किलो चावल निःशुल्क दिया जा रहा है। प्रशासन द्वारा दिए जा रहे इस सुविधा का ऐसे लोग भी फायदा उठाने में पीछे नहीं रह रहे हैं। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होकर गरीब वर्ग को मिलने वाला लाभ ये लोग उठाने में पीछे नहीं हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ग्रामीण अंचलों में ऐसे आदिवासी परिवार जिनके खेतो में बंपर गेहूं की फसल पैदा हुई है तथा अच्छी क्वालिटी का गेहूं भी उनके घरों में रखा होने के बावजूद भी ये लोग उचित मूल्य की दूकानों से मिलने वाला गेहूं एवं चावल निःशुल्क उठा रहे है। इसे बाजारों में बेचकर पैसा कमाने का काम कर रहे है। जानकारी तो यह भी मिली है कि इन लोगों का कहना है कि

जब उनके खेतो में अच्छा गेहूं पैदा हुआ है तो फिर सरकार द्वारा दिया जा रहा घटिया गेहू क्यों खाए। ऐसे लोग धडल्ले से शासन से योजनाओं का लाभ ले रहे है। जबकि कई गरीब परिवार ऐसे है जिनके यहां दो समय का भोजन तक नहीं नसीब हो पा रहा है। ऐसे में सरकार की सुविधा का ये लोग धडल्ले से लाभ उठा रहे है। तथा इसका फायदा निश्चित तौर पर दुकानो के सैल्समेन भी उठाने मे पीछे नहीं रह रहे है। तथा गरीबों के नाम से दिये जाने वाले इस खाद्यान्न को वे भी भ्रष्टाचार करते हुए पिछले दरवाजे से बेचकर मोटी रकम बनाने में लगे हैं। ऐसे में जिला प्रशासन को चाहिये कि सिर्फ पात्र लोगों को ही सरकार की योजना का लाभ मिले। इसके लिये वे अपने स्तर से सर्वे आदि करवाकर इसकी पुष्टि करें तथा उचित मूल्य की दूकानों पर प्रतिदिन का स्टॉक का सार्वजनिक प्रदर्शन हो तथा सैल्समेनों की भूमिका को लेकर भी यदि जांच करवाए तो कई तथ्य सामने आ सकते हैं।

सीमा सील करना महज औपचारिकता, राजस्थान से लोगों की हो रही आवाजाही

शराब एवं महुआ विक्रेताओं की हो रही चांदी

माही की गूंज, खवासा।

लॉकडाउन के साथ ही जिले एवं राज्य की सीमाओं को कोरोना की चौन तोड़ने हेतु सील कर दिया गया था। लेकिन आवश्यक सामग्री लेने एवं ले जाने के नाम पर राज्य सीमाओं पर भी जमकर आवाजाही रही। इसी आवाजाही के साथ महुआ, शराब व तंबाकू, गुटका, पाउच आदि की हेराफेरी कर लोग चांदी काट रहे है। बात करें क्षेत्र के भेरुपाड़ा, राजस्थान सीमा की तो यहां कहने को तो दोनों राज्य की पुलिस अपनी-अपनी सीमा पर ड्यूटी निभाकर लॉकडाउन एवं सीमा सील के निर्देशों का शक्ति से पालन करवाने की बात भले प्रशासन कर रहा हो, लेकिन 24 घंटे में 8 घंटे एमपी पुलिस ने अनधिकृत रुप से ऐसी छूट दे दी कि, कोई भी व्यक्ति या अवैध परिवहन करने वाला क्यों न हो राजस्थान से आकर वापस राजस्थान अपने वाहनों से चला जाता है। यहां पर ड्यूटी कर रहे पुलिस कर्मी शाम 6 से रात की 10 तक व सुबह 6 से दिन के 10 से 11 बजे तक अपनी ड्यूटी से नदारद हो जाते हैं। इसी दौरान राजस्थान सीमा की पुलिस राजस्थान वाले व्यक्तियों को एमपी में जाने एवं वापस आने पर कोई आपत्ति नहीं लेती, इसी दौरान राजस्थान के बड़ीसरवा, मोकमपुरा, दरोबडिया, रतलाम जिले के अमरपुरा आदि गांव के व्यक्ति खवासा से लेकर बामनिया, पेटलावद तक आ जा रहे हैं। इसी बीच राजस्थान की शराब दुकान किंगफिशर, टुबोर्ग बियर, जीएसएम रॉयल नाम की विस्की क्षेत्र के खवासा, भेरूगढ, परवाड़ा, भामल आदि के साथ बामनिया तक अवैध शराब जा रही है। बताते हैं कि, राजस्थान में लॉकडाउन के साथ ही शराब नहीं बेचने के निर्देश शासकीय दुकानों के ठेकेदारों को दिए गए हैं। परंतु वहां शराब की दुकानों पर किसी प्रकार की सील नहीं लगाई गई और ना ही शराब दुकान बंद की गई। उस दिन आबकारी विभाग नें शराब दुकान के अंदर रखी शराब का स्टाक लिया। जिस वजह से रात्रि में सीमा से सटे छोटीसरवा की दुकान से इन अवैध विक्रेता को वाहनों में भर रही है। वहीं यह शराब एमपी तक भी आ रही है।

झाबुआ जिले कि शासकीय दुकानो पर अधिकारी के हस्ताक्षर रहीत लगी सील को तोडकर निकाली जा रही शराब।

मध्यप्रदेश में भी भले ही शिवराज ने शराब की बिक्री एवं तंबाकू, गुटखा व पाउच की बिक्री पर अभी प्रतिबंध कर दिया हो, परंतु यह प्रतिबंध माफियाओं के लिए बड़ी चांदी काटने का माध्यम हो गया। जिले की शराब दुकानों पर सील तो लगाई गई पर सील के नाम पर बिना किसी अधिकारी के हस्ताक्षर के कोरा कागज ताले पर चिपका दिया गया, बता दें कि लॉकडाउन के दौरान थांदला की शराब दुकान पर चोरों ने सेंध लगाकर चोरी करने का मामला सामने आया था, परंतु शराब की जानकारी रखने वाले बताते हैं कि, उक्त चोरी किसी चोर ने नहीं की वरन शराब ठेकेदार ने ही शराब निकाल कर चोरी करने का षड्यंत्र किया और उक्त षड्यंत्र के बाद ठेकेदार के आदमी क्षेत्र की शासकीय शराब दुकानों के आगे रात्रि में जहां से शराब निकाली जा सके वहां पर चार पहिया वाहन में ठेकेदार के गुर्गे आकर थांदला शराब दुकान की चोरी का हवाला देकर शराब दुकानों की निगरानी का हवाला देकर चार पहिया वाहन में सोने का ढकोसला करते हैं और रात्रि में प्लेन कागज का चिपका ताला खोल शराब को निकाल कर ग्रामीण अंचल में सप्लाई की गई और पुनः शराब दुकान पर ताला लगाकर सील के नाम पर कोरा कागज चिपकाए जाते रहे हैं।

तो वहीं आवश्यक सामग्री घर पहुंच सेवा या कोई अति आवश्यक सामग्री लेने आने वाले को ही सामग्री देने का निर्देश है। लेकिन सुबह 3 से 4 बजे से महुए की दुकानें खुलकर सुबह 7 बजे तक इस वर्ष 45 सौ से 5 हजार तक का महुआ 8 हजार क्विंटल तक बड़ी मात्रा में बिका और खवासा ही नहीं क्षेत्र के सभी ग्रामीण अंचल के तालाब किनारे शराब निकालकर वरन शराबी बड़ी संख्या में उसी स्थान पर जाकर शराब पीते वरन घर पर लेकर आते हैं। उक्त कच्ची शराब का भाव भी जो 30 रूपए में अवैध रूप से शराब बेचते थे उसी बाटल को 60 से 70 रुपए व कुछ अच्छी क्वालिटी में 50 रुपए में बिकने वाली एक बॉटल का भाव 90 से 100 रूपए में बिक रही है। यहां बड़ी संख्या में सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जिया भी उड़ाई जा रही है और जो विदेशी शराब का सेवन करते थे वे भी कई लोग इन कच्ची भट्टियों पर जाकर शराब का सेवन कर रहे है।

तो वही तंबाकू एवं गुटखा, पाउच भी 4 से 5 गुना भाव में बेचकर लाखों रुपयों के व्यारे-न्यारे इस लॉकडाउन में किए है। प्रशासन ने छूट-पुट भाभरापाड़ा, पेटलावद, अंतरवेलीया, भगोर आदि स्थानों पर छुट-पुट कार्यवाही का कार्य किया है। परंतु शराब व गुटखा, पाउच का कारोबार जमकर हुआ बता दें कि विश्वसनीय व्यापारी से मिली जानकारी अनुसार रम्भापुर, मेघनगर, भगोर आदि कई गांवों के दूध के केटलों में दूध बेचने वालों ने दूध की जगह गुटखा, पाउच के पैकेट भरकर बड़ी संख्या में क्षेत्र के साथ गुजरात तक व्यापार किया।

सोशल डिस्टेंसिंग को ताक में रखकर सांसद ने उड़ाया नियमों का मखौल, कांग्रेस ने प्रकरण दर्ज करने के लिए दिया आवेदन

राशनदान करने के लिए समाजसेवी को पकड़ा

माही की गूंज , पेटलावद।

24 अप्रैल को सांसद गुमानसिंह डामोर पेटलावद अपने कार्यकर्ता और प्रशानिक अधिकारियों से कोरोना संक्रमण के लिए चर्चा के लिए आए थे। सांसद आए तो चर्चा करने के लिए, लेकिन उनके आसपास लगी महिमा मंडन करने वालों की भीड़ देख कर सांसद महोदय कोरोना संकट को भूल कर फूल टाइम नेता बन गए। साहब ने शुरू में तो कार्यकर्ताओ को दूर दूर बैठा कर फोटो सेशन करवा लिया और बाद में कोरोना संकट को भूल कर जमकर सोशल डिस्टेंसिंग का उल्लंघन किया। साथ ही भारी भीड़ जमा कर ली। इस दौरान पेटलावद के कई अधिकारी और पेटलावद पुलिस भी मौजूद थी, लेकिन किसी ने वहां जमा भीड़ को हटाने की जहमत तक उठाई या कहें कि साहब की नई-नई सरकार के दबदबे के आगे कोई बोल नहीं सका। जितनी देर साहब पेटलावद में जमे रहे उतनी ही देर तक सोसल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ते रहे।

राशन बांटने के लिए भी समाज सेवी को पकड़ा

सांसद महोदय की उपस्थिति में न केवल कार्यकर्ताओं और अधिकारियों की बैठक ली गई बल्कि जरूरतमंदों को राशन का वितरण किया गया। लेकिन जब राशन वितरण का दौर आया तो वहां मौजूद कई लोगो की आंखें फट गई। सांसद की उपस्थिति में बांटे गए मात्र दस से बारह बैग न तो सांसद महोदय लाए न ही उनके जयकारे लगाने वाले उनके कार्यकर्ता और कर्मचारी। इस राशन वितरण के लिए नगर के ही एक समाज सेवी को बुलाया गया, जो नगर में कोरोना संकट से लड़ने के लिए खुले दिल से जरूरतमंदों की मदद कर रहा है। जिसकी जद में केवल जरूरत मंद है न कि पार्टी विशेष के कार्यकर्ता।

सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ाते सांसद गुमानसिंह और उनके कार्यकर्ता।

कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष ने सांसद और उनके कार्यकर्ताओं के विरुद्ध लॉक डाउन उल्लंघन का प्रकरण बनाने का आवेदन पुलिस थाना पेटलावद में देते हुए।

फिर भी साहब ने अपना नाम बड़ा करने और दिखावा करने के लिए इस समाजसेवी की ओर से दिए गए बैग वितरित किए। राशन के दस बैग वितरण के लिए मानो पार्टी कार्यकर्ताओं में होड़ सी लग गई और एक-एक कर साहब, जिले के भाजपा जिलाध्यक्ष और उनके कार्यकर्ता एक एक कर आगे आ गए और फोटो सेशन करने में जुट गए। सांसद द्वारा समाजसेवी द्वारा दिए गए राशन के पैकेट वितरण करने और पार्टी के कार्यकर्ताओं की फोटो खिंचवाने के लिए मची होड़ पर सोशल मीडिया पर कांग्रेस आईटी सेल के कार्यकर्ताओं ने जम कर खिंचाई की। पूरे कार्यक्रम के बाद आज तक पार्टी और अधिकारियों की ओर से ये नहीं बताया गया कि सांसद गुमानसिंह ने कोरोना संकट से निपटने के लिए पार्टी के कार्यकर्ताओं और अधिकारियों से क्या चर्चा की। इसकी कोई जानकारी नही है । कुल मिला कर पूरा आयोजन प्रदेश में अपनी नई-नई बनी सरकार में झांकी झंडे का दिखाई दिया।

लॉक डाउन का उल्लंघन कांग्रेस पहुंची थाने

पेटलावद ब्लॉक कांग्रेस कमेटी द्वारा थाना प्रभारी को एक लिखित आपत्ति दर्ज करवाते हुए सांसद गुमानसिंह डामर के विरुद्ध धारा 144 का उल्लंघन करने को लेकर वैधानिक कार्यवाही की मांग की है। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी पेटलावद के अध्यक्ष नरेंद्रपाल सलूनिया ने शनिवार को यह आपत्ति दर्ज करवाई है। ब्लॉक कांग्रेस द्वारा दर्ज आपत्ति में बताया गया कि सांसद ने धारा 144 लागू होने के बाद भी लगभग 40 से 50 कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सोशल डिस्टेसिंग का पालन नहीं करते हुए स्थानीय विश्राम गृह में कार्यकर्ताओं की भीड़ एकत्रित कर बैठक आयोजित की है, जो सीधा धारा 144 का उल्लंघन है। कांग्रेस ने सांसद डामर व भाजपा कार्यकर्ताओं के विरुद्ध मूल वैधानिक कार्यवाही करने की मांग की है। पूरे मामले को झाबुआ विधायक कांतिलाल भूरिया पर हुई कार्यवाही से जोड़ा जा रहा है । वही सांसद की उपस्थिति हुई भीड़ के बीच मौजूद थाना प्रभारी का कहना है कि कांग्रेस कमेटी की ओर से आवेदन आया है, जांच की जा रही है।

बाहर से लाए गए मजदूरों के लिए सावधानियां जरूरी

माही की गूंज, झाबुआ। लॉकडाउन के लगभग 1 माह बाद प्रदेश के मजदूरों को देश के विभिन्न हिस्सों से अपने घर लाया जा रहा है। निश्चित ही मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की यह पहल सराहनीय है। लम्बे इंतजार के बाद मजदूर अपने घर पहुंच रहे हैं, तो उनके चेहरों पर इस बात की खुशी साफदेखी जा सकती है। अपनों से मिलने की खुशी के साथ ही उनके चेहरे पर संतोष का भाव है। लेकिन सरकार को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, कोरोना का कहर अभी समाप्त नहीं हुआ है। विभिन्न प्रदेशों से लाए गए मजदूरों की स्क्रीनिंग के पश्चात ही जिले की सीमा में प्रवेश किया जा रहा है, बावजूद इसके सावधानी के तौर पर उन्हें होम क्वारंटाइन किया जाना जरूरी है। साथ ही उनकी देखरेख करने की भी आवश्यकता हैं। बेहतर होगा कि, शासन उनकी अगले 14 दिनों तक क्षेत्र अनुसार टीम बनाकर निगरानी करें। जिससे जाने-अनजाने में कोई चूक ना हो जाए। हमारा जिला प्रशासन भी मुस्तैदी से अभी तक कोरोना मुक्त है। जिसके लिए जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग बधाई के पात्र हैं। हम उम्मीद करते हैं कि, आगे भी जिला कोरोना मुक्त ही रहें। लेकिन हमें सावधानी बरतना जरूरी है, छोटी-सी चूक घातक हो सकती है, इसलिए बाहर से लाए गए मजदूरों को अगले कुछ दिनों तक घर में ही प्रशासन की देखरेख में रखना बेहतर होगा।

भांजगड़ी व्यवस्था बढ़ा रही अपराधों को

नाबालिक लड़की को लेकर युवक हुआ फरार, अपराध दर्ज नहीं होने पर की पिता ने शिकायत

माही की गूंज खवासा, दिक्षीत भटेवरा।

आदिवासी इस बाहुल्य जिले में भांजगड़ी व्यवस्था की पुरानी प्रथा चली आ रही है। बदलते समय के साथ समाज में कई बदलाव जैसे भाषा व परिवेश में आए हैं। साथ ही शिक्षा का कुछ स्तर भी बढ़ा है। समाज के कुछ परिवार आज बड़े ओहदे एवं सम्मानजनक पदों पर बैठे हैं। वही कृषि कार्य और व्यापारिक दृष्टि से भी जुड़कर कार्य कर रहे हैं, तो राजनीति में भी अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं, परंतु इन सभी बदलाव के साथ कुछ नहीं बदला तो वह भांजगड़ी प्रथा। यह प्रथा इस बदलते समय के साथ रह गई है। जिससे समाज के गरीब तबके का परिवार ऊपर नहीं आ पा रहा है। उक्त भांजगड़ी प्रथा के साथ ही कई षड्यंत्रकारी अपना षड्यंत्र रचते हैं तो कई अपराधिक प्रवृत्ति वाले व सक्षम व्यक्ति भांजगड़ी प्रथा का हवाला देकर अपराध को अंजाम देने की गौरवावक्ति तक करते है।

मुख्य रूप से यहां जर, जोरू व जमीन का विवाद अधिकांश रूप से होता है और समाज में बड़े रूप से भांजगड़ी प्रथा के कारण कई परिवार दलदल की गर्त में ही जा रहे हैं। यहां तक कि आर्थिक परिस्थितियां खराब होने व इसी भांजगड़ी प्रथा के कारण जीवन भर मजदूरी करने या आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाते हैं। ऐसे में समाज में उभर रहे सामाजिक संगठनों का दायित्व बनता है कि इस प्रथा के विपरीत कोई कदम उठाकर समाज में अपराध व परिवार को दलदल में जाने से रोका जाए, नहीं तो हमारा समाज इस भांजगड़ी प्रथा के कारण गरीब परिवार कभी ऊपर नहीं आएगा और अपराधों का सिलसिला ऐसे ही चलता रहेगा।

बता दे कि, 19 मार्च को नारेला निवासी किशन डिंडोर की नाबालिक लड़की को समाज का ही एक युवक भगा कर ले गया। पुष्टि होने पर पता चला खवासा चौकी क्षेत्र के ग्राम तेजपुरा ग्राम पंचायत नरसिंगपाड़ा निवासी, जोगी सिंगाड का लड़का जुवानसिंग भगाकर ले गया। पुष्टि होने के बाद जानकारी अनुसार नारेला सरपंच शम्भु के साथ पाटडी सरपंच पारस भांजगड़िये बनकर लडकी के पिता की ओर से नरसिंगपाड़ा पहुंचे। जहां जोगी नहीं मिला। पता चला कि, जुवानसिंग, किशन डिंडोर की लड़की को भगाने के पूर्व ही जोगी मजदूरी करने हेतु नीमच चला गया था। जिस पर दोनों सरपंच, नरसिंगपाड़ा सरपंच के पास पहुंचे और फोन से जोगी से चर्चा की तो, जोगी ने कहा, मेरे लड़के ने गलती की है। जैसा भी सामाजिक स्तर से आप निपटाना चाहो आप निपटा दो। लड़की चाहिए तो 8 दिन में ही कहीं से भी ढूंढकर ला दूंगा। जिसके बाद लड़की के पिता एवं पाटडी, नारेला, नरसिंगपाड़ा व खवासा सरपंच चौकी पर पहुंचे।

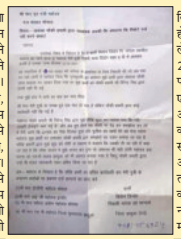

लडकी के पिता किशन ने एफआईआर नही होने पर एसपी से लेकर गृहमंत्री तक की शिकायत।

बताया जा रहा है कि, चर्चा में पुलिस को 8 दिन के लिए कार्यवाही नहीं करने व आपसी में चर्चा चलने की बात कही। पर यह बात अलग है कि, नाबालिक लड़की गुम होने या किसी के द्वारा भगा ले जाने की पुष्टि होती है तो 24 घंटे के अंदर लड़की के परिवार की रिपोर्ट पर एफआईआर दर्ज करना आवश्यक होता है। पुलिस को भांजगड़ी प्रथा से कोई सरोकार नहीं रखकर अपराधिक मामले में तत्काल एफआईआर दर्ज करना चाहिए। ये तो नाबालिक लड़की का मामला है, रिपोर्ट मिलने के बाद एफआईआर दर्ज करना आवश्यक थी। परंतु पुलिस ने एफआईआर भांजगड़ियों के कहने पर दर्ज नहीं की। वहीं भगा ले जाने वाले लड़के के पिता जोगी के दिए समय के पूर्व ही अपने ही भाजगड़ियों के विपरीत जाकर लड़की के पिता किशन डंडोर ने खवासा पुलिस के विरुद्ध 24 अप्रैल को डाकघर के माध्यम से एसपी से लेकर प्रदेश के गृहमंत्री तक शिकायत की। जिसमें दर्शाया गया कि 19 मार्च को उसकी नाबालिक लड़की बामनिया गई थी पर वह घर वापसी नहीं आई, पुलिस चौकी खवासा में शिकायत की, जिसकी प्राप्ति नहीं दी। एक माह बीत जाने के बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई तो, वही चौकी पर बुलाकर पुलिस ने बताया कि तेरी नाबालिक लड़की तेजपुरा भाग गई है। तुम दोनों चौकी पर बैठकर समझौता कर लो। तेरी छोरी की इज्जत का पैसा दिलवा देंगे। पुलिस का खर्च भी तेरे को देना पड़ेगा व लगातार खवासा पुलिस द्वारा समझौते का दबाव बनाया जा रहा है इस बात की शिकायत की गई है। वही अब सामाजिक स्तर पर ही चर्चा चल रही है कि, किशन लड़की के मिलने तक कोई बात भांजगड़ी प्रथा के माध्यम से नहीं करना चाहता है। लड़की उसके सुपुर्द होने के बाद अपने अनुसार अपनी लड़की को बुलवाकर जोगी एवं उसके लड़के पर दबाव बनवाकर बड़ी राशि आदिवासी प्रथा अनुसार भांजगड़ी के रूप में लेने का मन बना चुका है। जिसके लिए उसके सहयोगी उसे सहयोग कर रहे हैं। उक्त बात जोगी व उसका परिवार मान रहा है जिसके लिए जोगी ने भी कमर कस ली है कि लड़के ने गलती तो की है, पर जब 8 दिन में भांजगड़ियों के मार्फत छोरी को सुपुर्द करने की बात कह दी थी तो, शिकायत क्यों करना पड़ी? अब अगर लड़की सुपुर्द कर भी देते हैं तो भी किशन डिंडोर हम से मोटी रकम वसूलेगा। इसलिए जहां तक सामाजिक रूप से भांजगड़ी प्रथा के माध्यम से बातचीत नहीं हो जाती जब तक लड़के-लड़की को नहीं ढूंढेंगे।

अब दोनों परिवार की अडिगता के साथ यह मामला क्या रूप लेता है, यह तो समय ही बताएगा, पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं की तो, तय है उस पर गाज अवश्य गिरेगी।

इस संबंध में चौकी प्रभारी वीरेंद्रसिंह चौहान ने बताया कि 15 दिनों से इनकी आपसी चर्चा सामाजिक स्तर पर चल रही है, पूरा मामला एसपी साहब के संज्ञान में भी हैं। अगर इनका आपसी समझौता नहीं होता है तो एफआईआर दर्ज कर ली जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422